

DPN 5860

Title : बौद्ध स्तोत्र संग्रह

BAUDDHA STOTRA SAMGRAHA

Run. No. 6551

Cat. No.

Micro. No.

Subject निर्गुण Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 20.5 x 16.8 Folios 96 Lines (in a page) 19

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor मानदास सुगतदास
Māṇḍās Sugat Das

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu / the Elephant brand Exercise copy. Indian paper.
Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः श्रीमद्भाग्यविलोकिनेभ्यः श्रीगणेशाय महाशयः महाकृष्णाय नमो लोकनाथाय
 भुक्तं त्रयं विन्दितं लोकं शुभं अमलादीपाय स्तुतिं ब्रह्मवाक् ॥

आर्षावलोकितेश्वर लोच नाथ

मज्जुसमी

कहावाल

जगद्गुरु लोचेश्वर इत्यादि विभिन्न श्लोक लक्ष्मण चरितम् ।

स्व. जगद्गुरु गुणाधरं हस्तलिखित ग्रन्थं लक्ष्मण चरितम् ।
नेपालभाषा पुस्तक के न हस्तलिखित दादा भजन लक्ष्मण चरितम् ।
विद्या सारान्त याना दीगुलि नेपालभाषाभा स्तुतिः पु पुलां के कीर्ति कथन
यामे स्तन, कीर्ति प्राचीन गीतवाक्य दार्ढ्य लक्ष्मण चरितम् यामे स्तन ।
पुष्टिं किन्तु कापी-चरितं लक्ष्मण चरितम् यामे स्तन ।
लक्ष्मण चरितम् ।

के

नं १

"वैद्यसोत्र-संग्रह"
हस्तलिखित



REG. TRADE MARK

The ELEPHANT EXERCISE BOOK

64
Pages

No. 4

Price
0-2-6

Subject *Translate copy*

Name *Bekha Patra tu la nar*

School } *Private*
College }

Class *IV* *R.* *3*

मानदास सुगत दासया संकलनं

Year *11* *भाषा सफु-कुशियात-उपहार-!*

T. P. M. Co. Ltd.
THE BIHAR COMMERCIAL AGENCY, MUZAFFARPUR.

मानदास सुगत दासया संकलन
भाशा सफू-कुथियात उपहार !

20

15

10

5

0

WATER TOWER, NEW YORK
1 FIVE DOLLAR NOTE

5

10

15

20

25

30

ॐ नमः श्री मद आर्यावलोकितेश्वराय

बोधिसत्वाय महासत्वाय महाकरुणाकाय

नमो लोकनाथाय

भुवनं त्रयवर्द्धितलोकगुरु अमरा धिपति स्तुतिवत्सवरं ॥
 मुनिराजवरं द्युतिमधिकरं प्रनमामि बलोकितनाथकरं ॥ १ ॥
 शुगतात्मजरूप सूरूप धरं बहुलक्षणा भूषितदेहधरं ॥
 अमिताभतभागत मौलिधरं कनकांचनविभूषितवामकरं ॥ २ ॥
 कुतिलात्मज पिंगलधुमजनं शशि विम्ब समुज्ज्वल पूर्णमुखं ॥
 कमलायतलोचन चारुवरं हिमरवराड विपसुवरगंदजुगं ॥ ३ ॥
 अधरंजित पंकज नाभिसमं सरदंभुज गर्जित मेघरुतं ॥
 बहुरत्न विभूषित बाहुजुगं तनुकोमल शौरगीतरं ॥ ४ ॥
 मृगचर्म निव्यास्थित वरुतरु शुभकुराडन मण्डित लोलधरं ॥
 विमलोकमलोदल नाभिसमं मणिकुराडन मेखल हेमवरं ॥ ५ ॥
 कतिव्यास्थित चित्र सुवस्त्र धरं जितज्ञान महोदधि पारगतं ॥
 बहुपुराय मुपार्जित रक्तधरं ज्वरव्याधिहरं बहु सुक्षकरं ॥ प्र० ६ ॥
 शुभशान्तिकरं त्रिभवास्तकरं सचरं स्वचरं स्तुति देह धरं ॥
 विविधाकूल निर्जिमारवरं दशपारमिता परमार्थकरं ॥ प्र० ७ ॥
 चतुर्वक्ष विहार विव्यक्त धरं तथता द्वयज्ञान विलोलधरं ॥
 मणिनी पुरगर्जित पादयुगं गजमंत्र यरत्न विहंसगति ॥ प्र० ८ ॥

परिपूर्णा महा मृत्त-लब्धवरं क्षिरलोदजलाराविनित्यगति ॥
श्रीपोतन काभिनिवासगति करुणामयनीर्मल-चारु दृढ ॥ ५० ॥
इति श्री आर्यावलोकितेश्वर भक्तारकस्य चंद्रकाताभिधुनिस्त
वतोत्र समाप्त ॥ ॥

(४) विश्वविदु मतनुविनीर्जित

नमो श्री त्रिगुणात्मक मदार्थ्या वलोकितेश्वराय ॥
विश्वविदु मतनुविनीर्जित दक्षकरवर वलविराजितः सतत
सुरपति मौलि राजित पाद पंकजहे २ सव्य हस्त तरस्थ सर
सिज मञ्जुपरिमल कृत मनसिज विविध मुनिगणा देह मराड-
ल दुलित खराडनहे ॥ १ ॥ जलित मौलि मिताभधारणा
सकल निरंजन दुःखतारन विपुल कमलनि साक रासन
समन सासनहे २ चारु मुख वृत्त चंद्रहासन वज्रसंगिनि
कृत निवासन विद्युच्चयभय कृत निवासने ललित लासनहे ॥
२ ॥ पाशानिसितल दंकु सासुग चापशोभित पानि तरजुग
रज्जुचन्दन कृत सुश्चन सर्जन रंजनहे २ स्वान कुसुमसु भावमि
नमद स्वेततरवर वासतत्पर जोगनीर्जित विविध मुनिवर
भक्त सुखकरहे ॥ ३ ॥ वाम दहिन भूकृतितारिनि स्वे-
ततरवर वासतत्पर संगरंग सुधासुवारनि तरु रूप समा
हे २ नयन विमलस रोज सुन्दन धृतिविनिन्दित ललित म-

राड-न कामिनिजन मानहारक विघ्नहारकहे ॥ ४ ॥
विविध बुद्धि सु सिद्धिदायक मुठजनमधु बुद्धि पायक सा-
र्यललित विलो कितेश्वर महेन्द्रनेश्वर हे २ बल रुद्र हरिद्र
धनपति रूपतर्जय सकलनरपति हार परि हृत तारकातनि
विविध समनहे ॥ ५ ॥ गुरुसमुचन भावभावित चरन युगज-
न भुवन पारित वैरिवर नृप समर धातनि ताप पापित हे ॥
चन्द्रलोचिरु चिन्तिमिदारन सर्वजनवर नयनकारन भुज
यवेद विचार धारणा त्रिगुणाचारनहे ॥ ६ ॥ भुवनशृष्टि
विनाश पारन दुष्टदिति श्रुति कृताविनापन वृक्षाविष्णु महेस
भावन कीरविद्यातनहे २ दीदशदरन पद्मखेतन जननसं-
नि जनित हेलन वहिसं धुति मक्तिविहारन सिद्धिदेवनहे ॥
७ ॥ चक्र खड्ग सु भेद कारणा निखिल चद्र सुधा सुबाधक
गगणा मराडन नगरनायक पञ्चमायकहे २ पवन गमन
निरोध साधक कथिन निखिलनि रक्तधाधक ज्वलन रूप
स्वजीव हारक विदीयकहे ॥ ८ ॥ जोगपीर चिति
विजित रति पति सोग संगिति युवति कृतननि ज्ञानदास-
न दृष्ट युतितीति दीन जन गतिहे २ मकुट सुललित मौलिम-
राडन गराड मराडन विमलकुराडन विपुल भुजवर विजि-
त भूतल कर्म नीर्मल हे ॥ ९ ॥ कविद्र मल्ल प्रतापनरप-

ति सकल गुणवय शुद्ध समिति रचिन मह्य महिन्द्र वरान
बुद्धिवर्धन हे २ वहनि हितमति चित्तचिन्तिन मुचिन सुक
न समुह भूत समित नतिसुत भाव सुचिन्त ममर समित
हे ॥ १० ॥ इति श्री महाराज धिराज राज राजेन्द्र कविन्द्र ज
य प्रताप मल्ल विरचित श्री मदार्या वलोकितेश्वर त्रिगु
नात्मक स्तोत्र समाप्त ॥ ॥

(३) इन्द्रादिदेव ॥

ॐ नमो श्री शारदायः ॥ ॥ इन्द्रादिदेव तत्र वदित पा
द पद्मं हंसामने त्रिनयने शुभ मंगलाय करुण विर्कु
म सुवासित देह देवी ॥ ते सारदा सकल सिद्धि मदानमा
मि ॥ १ ॥ हे मालय विमल सस्थित पालन रूपी २ नेपा
न मराडन ओलतम तारुणी भी २ श्री कास्मिर च भुवने
श्वर वृद्ध रूपी ॥ ते सारदा ॥ २ ॥ वेदान्त नाद गुण संव प्रका
सितेन वागीश्वरी त्रिभुवनेश्वर विश्वरूपी ॥ सर्वे नुवं सकल
पुस्तक अक्षमाला ॥ ते सारदा ॥ ३ ॥ रूपान्तरिभ्यः शिष्या
गुरु कला स्वरूपी वाराणी मनोहर मुलालिन पियुषा च नी
लोत्पला नयन विदुर तस्य ज्योति ॥ ते सारदा ॥ ४ ॥ संसा
रसार ओचना तओ सुप्रसन्ना देवानरा अपसरा धिप
किन्नराणां बाञ्छा मनोरथ च वाचन सिद्धि यन्तु ॥ ते सारदा ॥

॥ ५ ॥ कर्पूर पुङ्ग परिपूरित तांबुलादि पुष्पे वा अगुर चन्द
न पूजितानि नित्यं परास्य सिरसा तवम्यक भावं ॥ ते सारदा ॥
॥ ६ ॥ संपूर्ण कौष तत्र अक्षय सारदाया पाताल मर्त्य त्रिद
शालय पूजितानि मन्त्रादि वाक्य सत जीविन सर्व यन्ति ॥ ते सा
रदा ॥ ७ ॥ षट्चक्र पद्म भेदिन मन्त्राय सर्वार्थ साध
क जना सुगनितमेवं त्वज्ज्ञानाङ्ग मे भवदुःख विनास करी ॥
ते सारदा ॥ ८ ॥ इति श्री सारदा स्तोत्र समाप्त ॥ ० ॥

(४) अपघन कामुनिश्री ॥

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ अपघन कामुनिश्री नागसंभवदी
ति ॥ राजिन पानि कहल सित वदनं ॥ १ ॥ श्री वृगमेश्वर अ
दि जनाथ ॥ जगत भयंकर कारुनि हृदया ॥ २ ॥ अमृताभ
शिल्यङ्गुत धरिया ॥ मृदङ्ग मुरुति गीत वंस सिखितं ॥ ३ ॥
रवि शाशि देव प्रशासादितेन वज्र भवन्तु शुभ श्री वज्र सत्त्व ॥ ४ ॥
इति श्री अपघन स्तोत्र समाप्त ॥ ॥

(५) चामिकला ॥

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ चामिकरा वनिमणि मकु
वरिया ॥ विचित्र विविधित रत्न विभूषितं ॥ १ ॥ नोलभयक
र हर करुणा श्वर ॥ अर असुर सुर सेवित वदनं ॥ २ ॥ जिक
येत मुरुति शुभ हं तारनि ॥ कनाहित यादधि सागर विदितं

॥ ३ ॥ लोहितवर्ण सुरारि दनवर ॥ कमल नयन विका-
सितरे मुखे ॥ ४ ॥ हाय नाग कुंजल विमित खगल ॥ मा-
र्हि माधव सित तिथिजोगसनं ॥ ५ ॥ इति श्री चामिकरा
स्तोत्र समाप्त ॥ ॥

(६) अरुणा वर्णा ॥

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ अरुणा वर्णा देह सरसिद्धि
संभव ॥ दीहित वर धर वाम कमल धरा ॥ १ ॥ शिविग
मेश्वर अभय प्रदाता ॥ सख उधारन दुर्गति हर्ता ॥ २ ॥
घट् गति तारन मोक्षप्रदाता ॥ ३ ॥ अष्ट महा भय ॥ अमृ-
ताभ सिरै धर निर्मल वदनं ॥ ३ ॥ अष्ट महा भय भव भय
हरतं ॥ श्री जयलोकेश्वर सुरनर पूजितं ॥ ४ ॥ अवदनेषा
लिक वसु इन्दु नगचिह्न माधव सित गंगा शुभ तिथि श
निवार ॥ ५ ॥ इति श्री अरुणा वर्णा स्तोत्र समाप्त ॥ ॥

(७) संखे दुकुन्द ॥

ॐ नमो श्री सारदाय ॥ ॥ संखे दुर्कुंदी हिन संनिभ चारु
देहा हंसे स्थिता कमल पत्र सुनोचनिया दिव्या वलावर
न भूषित सौम्य रूपी ॥ श्री सारदा भगवति सततं नमामि ॥
१ ॥ ससार सार महो ददि मग्न सत्त्वा सत्तारति सुरनराचि-
त याद पद्मा ॥ हरध हार मणि कुराडल धृष्ट गन्ध ॥ श्री सार

दा भगवती ॥ २ ॥ यो भारति निकथिता जननि चलोके मोहन्ध
कारतन भग्न कृताजनानां ॥ सकृर्निता मुनिभिर सम भक्तदो-
षे ॥ श्री सारदा ॥ ३ ॥ वीनानुवाद नलतां श्रुति हृदिकानि
संधरिनि कनक पुस्तक सारुनि चं ॥ रत्ना गुलि सुरुचिरांकृत
हस्तपद्मं ॥ श्री सारदा ॥ ४ ॥ यासे विने जगनिका मिसिरस्त
दोषे ॥ दिव्या गता मनसि सं परि मद निया ॥ श्री सारदा ॥ ५ ॥
विद्याभिव्यजमतिथां जननि प्रसिद्धा कृत्वा नदा भगवति किल
कश्च सौम्य ॥ सौदर्य रूप गुनवितल भोगभोगी ॥ श्री सारदा
॥ ६ ॥ पूजो पचार विविधे परि पूजितानि दिव्या गता हृति
मनो परि पूजनिया ॥ ये पूजिता भगवति किल कादेहंति ॥ श्री-
सारदा ॥ ७ ॥ यस्या प्रशाद मवर्गमे सहाय प्रसन्न त्रैलोक्ये
नाथ उदिक सम प्रभस्या ॥ धर्मार्थ काम फलदं किल मोक्ष
भायं ॥ श्री सारदा ॥ ८ ॥ इति श्री सारदा स्तोत्र समाप्त ॥ ॥

(८) ब्रह्मादिदेव ॥ ज्ञानादि सर्व नित्यं गुणराज वत्तं

ॐ नमो श्री मञ्जुनाथाय ॥ ॥ ब्रह्मादिदेव मनुजा सुर पू-
जितांग ॥ ज्ञानधिपं गुणमयं गुण वृद्धि ओन्नं ॥ वागीश्वर सुर
गुरु सततं नमामि ॥ १ ॥ वेदादिशास्त्र रचना खिल मन्त्राभि-
स्त स्वर्ग कथा दिविनम्येष शुगीतमव्यं ॥ यं कीनयं त्रिभुवने
न च वागिभिरे ॥ वागीश्वर ॥ २ ॥ ज्ञान प्रदान सलिल नम

चिन्तवुद्धि ॥ ध्यानाधिपं विविधिना सुखरञ्जनीयं ॥ ज्ञाने
श्वरं त्रिभुवने सचराजरत्नं ॥ वागीश्वरं ॥ ३ ॥ रत्नादिहित्य
परिकल्पणा पूर्णाय ॥ चित्रं विचित्रित गुणं जन माननिया
सर्वज्ञ कारकधरा हृदि ब्रह्म पूजं ॥ वागीश्वरं ॥ ४ ॥ चर्यावि-
भिरनिपतिष्ठित वीर्यं बुद्धि ॥ ध्यानाधिपं विविधिना सु-
खरञ्जनीय ॥ विद्यापति सतगुरु भुवने निपुर्णा ॥ वागीश्वरं
॥ ५ ॥ वाणीपति भुजचतु चयवामचापं पुष्टिकृप मनसि
सं सतर्तव ध्यानं ॥ तुभ्यं नमः नमो चरनाद भिज्ज ॥ वागीश्वरं ॥
६ ॥ इति श्री वागीश्वर गीत स्तोत्र समाप्त ॥ ॥

(८) कामुनि पर्वत ॥

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ कामुनि पर्वत पीतसुवर्णा ॥
यक्ष किन्नर नाग मनुष्यं च ॥ दुन्दु माँछ दार सागरतन्दि ॥ विरं-
चि नासय रा देव नमोस्तु ॥ १ ॥ चामल उखेव सागर यक्ष ॥
नदिक पिसु रायक माने ॥ सूर्ये सुमराडन सूर्य सुतेज ॥ विरं-
चि ॥ २ ॥ अष्ट सागर समुदनेदि लोक चामल त्रिमे पुर
चक्रं ॥ ज्योति मय करुणा मय मुक्ति ॥ विरंचि ॥ ३ ॥ स्वतसु
वर्णा करुणामयन्दो अष्टनाग चर्म त्रिशूल हस्तं ॥ असनाग
न वाम कमल ॥ विरंचि ॥ ४ ॥ अनन्त नाग सु देव सुनाग गेदु
नाग पद्म छत्र सुनाग ॥ अष्ट सुनाग न वाम कमल ॥ विरंचि

॥ ५ ॥ सुवर्ण नन्दिव चारु शोभाय प्रितिसुरा सुर वन्द विज्ञा-
ने २ महु देक पुन मेघ तु देशे ॥ विरंचि ॥ ६ ॥ इति श्री
आर्या वलो किनेश्वर स्थ अनन्त नाग राजा कृतं स्तोत्र समा-
प्त ॥ ॥

(१०) मयां कृपानि पापानि ॥

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ मयां कृपानि पापानि
काय वाक् चित्त संचैव तत्सर्व हर मेनाथ रक्षमा लो-
कनाथकं ॥ १ ॥ नेपाले द्वादशाक्षय अना वृष्टि महाभयं
नरेन्द्र देव संस्थाप्यो लक्षमा ॥ २ ॥ मर्त्य भूमौ च पातालं
दुखिनो बहुलौ किका सुख वृद्धि कर स्तोषाः लक्षमा ॥ ३
॥ यत्र यत्र गत स्तेत्र सर्व सत्त्व नुकं पयाः समुद्धरति पापे
भ्योः लक्षमा ॥ ४ ॥ संसारे व्यापितो हन्त कथं पार कृपम-
याः त्वं मेव सरणा मेव ॥ लक्षमा ॥ ५ ॥ सर्व देव मय स्तुवं हि
सर्व बुद्ध नयस्तुवं ॥ सर्व सिद्धि मयश्चैव ॥ लक्षमा ॥ ६ ॥
सदा कृपामया त्वं च सदा रक्षा मयोनतम ॥ सदा प्रज्ञा मया
त्वंहि ॥ रक्षमा ॥ ७ ॥ येन येन कृतं कर्म तेन तदप्य धार
क जन्मदिक्षां प्रतासि ॥ रक्षमा ॥ ८ ॥ सुखावति न सं
प्राप्नो यावद्धे सर्व सत्त्वक तावत्सन्सार कस्थत्वं ॥ रक्ष-
मा ॥ ९ ॥ ज्ञानिना ज्ञान रूपासि दुःखिना दुःख तारक

कामिना कामरूपासि ॥ रक्षमा ॥ १० ॥ पूजनियश्च लोकेश
प्रणावस्य स्वरूपक वन्दनिय सदा तोहि ॥ रक्षमा ॥ ११ ॥
भक्तिर्वा भक्तिर्को वापि मित्रवा सत्रु कोपि वा सर्वत्रं द
र्यको ॥ रक्षमा ॥ १२ ॥ लोकनाथं जगत्स्वामि भक्ति
कृतं सचेतसा ॥ त्वं नमामि पुनर्भूयो ॥ रक्षमा ॥ १३ ॥
अनेक दुःख भुजामि भामिना कष्ट संकटे दया स्ते च लोकेश
मोचितास्त्रे ॥ रक्षमा ॥ १४ ॥ सर्वदेष्टा सुसंपत्ति चेतयं
कालमज्युयं ॥ अस्तु मे कं रुतत्त्व भक्तित्वं अचला कुरु
॥ १५ ॥ इति आर्या वलोकितेश्वरस्य रक्षास्तव स्तोत्र
समाप्त ॥ ॥

(११) जय सिद्धि सुरासुर ॥

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ जय सिद्धि सुरासुर लोकेश
रु कमलासन सुस्थित पादयुग दशपारमिता दिग पञ्च
करं धनमामि सदा वर कारुनिकं ॥ १ ॥ बहु केटिनराधि
पलब्ध वरं जय सुस्थित नाद मुनि ॥ भवसागर पार गणा
धिकरं सरनागत सत्त्वहितार्थकरं ॥ २ ॥ कमलाजोलभ
वित गात्रवरं नवभासुर शोभणा दिक्करं ॥ ३ ॥ मूर्गताम्रणा
खांजलि शोभनखं ॥ पटभिज गुणाकर वन्दित नौव सुस्थि
त नोपुर हाजुगं ॥ ४ ॥ मणि कुण्डल मणि डन गराड जुगंध

न गर्जित नुल्य गर्भिररुतं ॥ गिरिगह्वर पातल वासिनक
वृष वाहन हंस मृगोन्दिशतं ॥ ५ ॥ रितिवर गणाधिप सस्तु
निकं ॥ जिनरूप धरात्मक रोगनिधरं ॥ दिपदोतम आथ सुरा
धिपतिं ॥ बहु सत्त्व विमोचन सुस्थिकरं ॥ ६ ॥ वज्र
सुशोभन वाम कर मलयागर चन्दन धवरूपं ॥ कमलोत्पर
पातलि दाम धरं प्रणामामि हृषान निवन्दकरं ॥ ७ ॥ जल
राग विवर्जित कूट हरं बहु बोधि वरागम भद्र धनं ॥ नव दुर्ग
ति नाशन मार्गददं करुणा तथता इय विश्व पति ॥ ८ ॥
इति श्री मन् आर्या वलोकितेश्वर भट्टारकस्य पातलकास्त
व समाप्त ॥ ॥

(१२) मणि कमलास्तव ॥

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ दानवराज निदेशित धर्म पूजि
त रत्नविशेषित श्रुतिं ॥ नाशित मोहविशेष सहश्रं श्रीजि
न पञ्चकलं प्रणामामि ॥ १ ॥ मोहतमो मय भूमि मुदारं राक्ष
स जक्ष गणि वल सान्तं ॥ पारमि कठं निय पलनं श्रीजिन
॥ २ ॥ जेतवनाहित देहमयुषं रोमणि वीशत लोक समस्तं ॥
मार्ग धसत्त्व विमोचित क्षदं श्रीजिन ॥ ३ ॥ दिनवभुदिन पूरि
त भूतीं रवरीडत दुर्गति पुष्टिं आदितस्यैवक मुक्ति विशीखं
श्रीजिन ॥ ४ ॥ मोहापहं भिहं मूजोरस्मै लोक चित्तिल

जनेन हृष्टं ॥ मुक्तिप्रदं करुणादचिन्तं तं लोकनाथ परमं
 नमामि ॥ श्रीजिन ॥ ५ ॥ मृगारस्ये कृतनारके प्रसूर्यदुको
 टि समनिष्ठ रम्य ॥ जानदिभावा द्वययुक्तदेवं तं लोकनाथ ०
 श्रीजिन ॥ ६ ॥ समुद्ररत्न नरकं यपंता सत्त्वा समस्ता रा-
 भिराममुनि ॥ पंके निमग्ना रिबहस्तादने ॥ तं लोकनाथ ०
 ॥ ७ ॥ पादन्येनेनैव चरणा सम्यकुदहे माना विरवमापेविं
 चिसमं दक्षिणं नताप्रियाता ॥ तं लोकनाथ ० ॥ ८ ॥ पत्न्या
 दसम्यक समकाप कुंभि श्री वाकलोमे रपि गर्भ पूर्णा ॥ प-
 शाप्रबोध कुरुत सन्ता ॥ तं लोकनाथ ० ॥ ९ ॥ सुखावति
 प्रखन सत्त्व सद्य दूतय्य सैला मृतं वज्र कल्प ॥ नताकलोष
 प्रहितामिताभं तं लोकनाथ ० ॥ १० ॥ पुरामामि सुरासुर
 वन्द्य पदं पदबोधकरं करपद्म धरं थरनिज नताप्रहिताप
 हरं हरनिर्जित विजशेख धरं ॥ तं लोकनाथ ० ॥ ११ ॥ स्फुन
 तास्कृत ताद्वय नक्षत्रभव भवतापीर गुप्त तनु गनताननुता
 वृति विश्वपरं पर मुनि मभुत समस्त पति ॥ १२ ॥ प्रतिपा
 लित लोक समस्तगनं गराकिरा नागरा मम्यतनु ॥ तनुनि-
 र्जित माला विशेषतं सतमत्य रिक्त्तु पित कामकर ॥ तं लोक
 नाथ ० ॥ १३ ॥ विभुतादिल तर्जित भक्ति जनुग विशेषलय ॥
 यतत्त्व महो दाध पारकरं करुणा पकर ज हितार्थ कर ॥ तं लोक

कनाथ ० ॥ १४ ॥ स्वर्गादौलेक धाता उदिन तनय दयो देवदेवानि-
 रानं ॥ सर्वा धार को मार्गो यमिमथ फल दो राज तं लोकनाथ
 ॥ १५ ॥ जस्ताशिव प्रशादा दशरथ इति जोतिर भिक्षाभ मुनि
 श श्री मन्त्रो कनाथो नव मणि कमलो नीरुजर्ता भिराण ॥ १६ ॥
 इति श्री आर्यावनो किनेश्वर भट्टारकस्य मणि कमला स्तव
 स्तोत्र समाप्त ॥ ॥

(१३) सर्व भूत मणि कपित ॥ ✓

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ सर्व भूत मणि कपित नुभ्यं
 क्षान्तिमेव चरितं तव रूपं सर्व रूप वर दिव्य सुरूपं ॥ तं
 मामि दशवत्न वर रूपं ॥ १ ॥ भृङ्गिण्य शिखि मुकुट मुकु
 शं केकिराय शिखि दिव्य मुकुशं स्नीग्ध नील मुदु कुञ्चित
 केशं तं मामि ॥ २ ॥ शंख कुराड कुमुदाड विमलोग्नं जन्म
 दुःख विगतं विमलासं रोग सोक मथ तं विमलोग्नं तं मा-
 मि ॥ ३ ॥ पुरा चन्द्र द्युति शोभित वस्त्रं सर्व बुद्ध मणि भं-
 श भवस्त्रं बुद्ध पञ्च जिने भामल वस्त्रं तं मामि ॥ ४ ॥
 रश्मि सहस्र विचित्र सुमुद्धि पुष्प वर्ष शत पूजित मुद्धि
 रत्न वर्ष शत पूजित मुद्धि तं मामि ॥ ५ ॥ नेत्र ताक विरं
 विरत शिर्षं कांचन छत्र विता पित शीर्षं नेत्र विता नसु मोभि
 त शीर्षं ॥ ६ ॥ दिप्ती वरं सकुन्ता मणि सकुतं चन्द्र प्रभा मणि

मकुता मणिमकुटं तन्मामि ॥ ७ ॥ चारुपङ्कजं रायतनेत्रं
 ध्यान मोक्षशुभ शोभितनेत्रं तन्मामि ॥ ८ ॥ शुद्धकर्णशुभ
 शुद्धकर्ण शुद्धज्ञानवर शुद्धशुकरा ॥ शुद्धप्रज्ञावर शुद्धशुकर-
 र्ण तन्मामि ॥ ९ ॥ शुद्धकुराडशशिपाराडन दन्तं तन्मामि
 शुलक्षणा निर्मलदन्तं ॥ विश्वपञ्चदश पञ्चशुद्धतन्मामि ॥
 १० ॥ उच्चवाक्यसं सुरासुरजिह्वा धर्मज्ञानकृपापाप
 कजिह्वा ॥ गन्धधूपशत रासुरजिह्वा तन्मामि ॥ ११ ॥
 मेघसद्वन्द्वभिर्नादिनोद्योतं सन्यधर्मनय नित्यसुखाय ॥ त-
 न्मामि ॥ १२ ॥ जीवजीवदशजीवसुजीवं क्षान्तिवीर्यं
 तव जीवसुजीवं ॥ हेमवर्णमणिजीवसुजीवतन्मामि ॥
 १३ ॥ सिंहमयाहिमकुराडमुकायं ज्ञानकायगुरासागर
 काय ॥ अष्टशुलक्षणा निर्मलकाय तन्मामि ॥ १४ ॥ स्नेह
 पीतशुभशोभितवरत्रं नीलिपीतहरिततववस्त्रं ॥ हालदश
 वलशोभितवरत्रं तन्मामि ॥ १५ ॥ हेमनागकरसंस्कृत
 वारुपुष्पदानशुभशोभितवारु ॥ वीरवीर्यशुभशोभितवा-
 रु तन्मामि ॥ १६ ॥ चामलचक्रविभूषितं हस्तं वि-
 मलजकायलपङ्कजहस्तं ॥ भूतपुत्रसुरनागजहस्तं तन्म-
 मामि ॥ १७ ॥ रागद्वेषतनुवर्जितचित्तं शीलज्ञानमग-
 भावितचित्तं ॥ कल्पकोटिसुमनोहरचित्तं तन्मामि ॥

१८ ॥ पद्मनाभशुभशोभितनाभं पद्मयौनिशुभशोभितनाभं
 धर्मजानिशुभशोभितनाभं तन्मामि ॥ १९ ॥ चक्षुरा-
 चक्रविभूषितपादं अकुशशक्तिविराजितपादं देवदान-
 वगरावन्दितपादं तन्मामि ॥ २० ॥ भास्कराय दुनिराजि-
 तपादं देवदानवगरावन्दितपादं ॥ सर्वदेवगरावन्दितपादं ॥
 तन्मामि ॥ २१ ॥ सर्वदेवगरापूजितशीर्षं सुर्यकोटिस-
 मभावनशीर्षं ॥ माल्यविलेपनपूजितशीर्षं तन्मामि ॥
 २२ ॥ पूष्यधूपसतपूजितशीर्षं दीपगन्धसतपूजितशी-
 र्षं माल्यविलेपनपूजितशीर्षं तन्मामि ॥ २३ ॥
 त्रिभुवने धर्मस्वामि त्रिभुवनस्य गुरोः सकलं सुगन-
 शततं निर्मलं पूजयिष्यामि ॥ यत्पठनीयेन श्रुतस्य
 वपुकथं न भवति गमनं ॥ २४ ॥ इति श्रीमदाचार्यारजा-
 किनेश्वरस्य रूपस्तव समाप्तं ॥

(१४) मञ्जुनाथकमलासन ॥

ॐ नमो नोक्ताथाय ॥ ॥ मञ्जुनाथं कमलासनरत्न-
 मोलि विद्याविषो भुवनमण्डलचक्रवर्ति ध्यानविषो
 वितविराजितसौम्यरूपो बद्धा महेसुरनराश्वरवदिता-
 ह्य ॥ १ ॥ वारिकृति कुवलयोललोहकयूरहरमणि
 कुराडन घृष्टगराड षडवर्तय दन्त सुकुमार रूपं वंदामहे

सुर नर विन मञ्जु घोष ॥ २ ॥ शेमात्र कुप विमर्शपीर
 वर्तमानं मानं विश्वप्रपचकरन सुगतात्मजस्य ॥ स्ति
 मिभमन्न तव नार्थं गुरागारानि ससुक्ष्माय वृद्ध ननयाव
 नमोस्तु नित्य ॥ ३ ॥ गंभीर भर्म नयमार्गं सुप्रविष्ट ज्ञाना
 दधिनिखिल सत्त्व कृतार्थि कारि ॥ प्रज्ञा निधान गुरासागर
 अग्रमेयं मञ्जु श्रीयनि श्रुतं सननं नमामि ॥ ४ ॥ विदित
 सकल नत्व परिता रव सत्त्व कृत नत्व उपकारिनीया दुःख
 हारि मद्ममर्थन विरचा रूपं च विरं त्रिभुवन जननीरक
 यानु नञ्जु घोष ॥ ५ ॥ शशधर मिव शुभं स्वङ्ग पुस्तक पा
 र्णि ॥ सुर चिर मति शान पञ्च चर कुमारं ॥ पृथु दलवर
 मोक्ष पद्म पत्रायताक्षं कुमनि दहन दक्षं मञ्जु घोषं नम
 मि ॥ ६ ॥ वारिन्दु रुचिरा भासवार भारा भीषत ॥ प्रसा
 जाल पत्राक्षं चन्दु मञ्जु ग्रीयं सदा ॥ ७ ॥ पत्र वाम करे वत्स
 भुम मञ्जु नसं निभं मानो न सर्वत लीक्ष्म मञ्जु घोषं नमाम्य
 हं ॥ ८ ॥ स्वङ्ग पुस्तक हस्तायं चन्दु मराडन वर्ति ॥ अज्ञा
 नं भवान् सुधाय मञ्जु घोषाय नमः ॥ ९ ॥ ज्ञानो नुर प्रमा
 केतु प्रति धारा मति तथा ॥ ज्ञानेन्द्रियं मञ्जु घोषं भक्ति
 प्रणामा ग्यहं ॥ १० ॥ शम्भु शक्र तत्पः सत्त्व कृत्यादि हरि
 न ॥ सित रित सम तोष छित मिशेषे दोष ॥ ११ ॥ हत जन

भवद्वेषं श्रीयमा मेख पोष त्वधिकत गुरा कोष यानु मां म-
 अघोष ॥ १२ ॥ इति मञ्जु श्रुति वतान सप्तम ॥ ॥

(१५) लोके श्वरं विमल ॥ ✓

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ लोकेश्वरं विमल सुन्य
 कृपाद चिन्तं मार्गज्ञता पठित दर्शन यार्थ वाचम् ॥ स-
 र्वज्ञतादि परिपूर्णा विशुद्ध देह साक्षात् अधिकार लीनेन
 शिर मानमामि ॥ १ ॥ वेने वसिदव सत्त्व बहु धाव भास्य
 रको श्रीपि पात्र गजरेषु शशिवयस्मान् ॥ वृद्धिस्त्व होप मेरं
 पि मयि मयनुप रूप ॥ २ ॥ संपूर्णा चन्द्र वदनं ललिता लला-
 तं दशाक्षिनिगत महेश्वर देव पुत्रोः वेन्य यानां भवजन प्रति
 बोधनाथ देवानि देव सतिमान् जमा श्वरस्त्व ॥ ३ ॥
 वेन्ययं कमल भवं प्रतिवाचनाय स्कन्धा सुसंभृत महाशुभ
 लक्षणात्ते ॥ निर्यातन वीह पिता मह देव पुत्रो लोकेश्वरं सुर
 चरं शिर मानमामि ॥ ४ ॥ वेनेय विष्णा वजन प्रति बोधना
 य नाजि वरवाणि हृदयात् प्रविनि श्रुतो सौ नारायणो
 त्रिभुवने धर एव न स्यात् युमा त्वमेक पलमो नमच वनानान्य
 ॥ ५ ॥ चन्द्रा क्क सावर दराहिन भक्ति भाजा सदं यना प म-
 भिनिल सुलोचनाभ्यां ॥ यज्ञेश्वरो शशिल विभु विलो च
 नानां धस्ताना लालन नमसं तमहं नमामि ॥ ६ ॥ सार धति

वित्तं योजितं भक्तिभाजा चाधाय वै भगवति ह सरस्वति
 य इष्टा यत्तस्तत्त जनात्मजं यं प्रसुता प्रज्ञाभिलाषि फलदा
 महं नमामि ॥ ७ ॥ वैद्यय वायुजनिताक्षर मार्ग सिद्धेयं ज्ञो-
 क्तोऽथ सुखतो अथ विनिश्चृतोऽसौ ॥ देवस्य भिरनवरं भु-
 मि जन्मभाजा भिर्या पदाय फलदं नमामि ॥ ८ ॥ वैद्य-
 य वासुधा शिवाय नमि मिसिनामां संबोधनार्थं मुनिदानस-
 गता मयास्य ॥ यत्निश्चृतो वरुणा देव वोलोपे कस्मादेश्वर्यं
 सिद्धि फलदं ज्ञानतं नमामि ॥ ९ ॥ वैद्यय संमत फलदाय
 भिलाक्ष रावे मंसिद्धि य प्रकल को लक्षणा पाद पद्मानयनि
 शृतो भगवति धरणि प्रसिद्धा नं लोकनाथ मममं नमहं
 नमामि ॥ १० ॥ सत्सार मुक्त मपि सुष्ठित भव तत्र कारुण्य तश्च
 भवचारिणि तत्त्ववेग ॥ भुयाष्टिनि मम सदधिरमा भवंतं मेव
 महासय वलं पमहं नमामि ॥ ११ ॥ एकन पादन रेकेन भवतो
 केन चाक्रान्त मवल मेन तल लोक धातो ॥ कल्पान्त दग्ध भुवने
 जोलितो प्रह्निन स्यास वायु वलतस्त वनिष्टत स्यात् ॥ १२ ॥
 त्वनजनिमुखं धृतीहित तर्जनेन संचालिता स्ववहु मेरुगणाणा
 स्वस्य ॥ कोषो धृत जल धृतो य मसे खत स्यात् ॥ सार्धमा दृ-
 ष मंहो भव लक्र येन्य ॥ १३ ॥ केदं च शशाव परं ननु वाह-
 रुष ॥ सदृश नियक्त्वा कोमल वालचन्द्रं दुर्वल मारमथनं

नुभय करोय विकानि इसहपल को च व्यष्टितं ॥ १४ ॥
 यथां वनाजननि भोरुजटा वलिसा को निरे चारु निकाश ॥
 स्वरु रोहदा यां तैस्यं धनजो लित विस्फरित तत्त्ववत्तुः शुभा
 वलि च विमलानन नुरक्षतेन ॥ १५ ॥ त्वकानिले शविशो रेश
 दिक्केताने पक्षा सिनाक्षय कृशाशका नाशुभासो सूर्यः न
 दुष्ट शशिलो भुवन पूर्यते मन्त्रविराजि निषेत्तं तव कोनि
 लेशान् ॥ १६ ॥ विभुज कुमायिन संमतं मतं नरानुरासा
 हितसं पथपथं परार्थ संपादिन संवत्तं वल नमामि भूमि
 श्वरत्वा जिर्नजिनं ॥ १७ ॥ औपेत्त निर्वाणा भवं स्थितोऽस्मि
 न प्रभास्वरा विधित मंहितं हितं समा कृता शेषजना शिवं
 शिवं नमामि भूमि श्वरत्वा जिर्नजिनं ॥ १८ ॥ गर्भाक्षि माला
 मित संकुलं कुलं तत स्वपाशो वृत पंकजं रता नुगासा हित
 स रतं रतं नमामि भूमि श्वरत्वा जिर्नजिनं ॥ १९ ॥ स्वधर्मधा-
 तु करुणा परं परं शुभादिसं भाल तुसं भृतं भृतं ॥ विक-
 ल्य हीन ध्वनि देश कृशा नमामि भूमि श्वरत्वा जिर्नजिनं ॥
 २० ॥ तथता तथता द्वयज्ञा तसंतसं सत् सत् पुरि पुरित ध-
 र्म कचं ॥ कथनिय विराजित सत्त्व ल मरु शिखर लोचन चा-
 नुतरं तल शाविलं सत्त्व विशुद्धि परं प्रणमामि धरणि धर-
 राजवरं ॥ २१ ॥ वलीनिमित्त भोग पराधत्तं रत शुचि निरं

जन धर्म धरं ॥ धरनिद विवो धन सिद्धि परं प्रणामामि धरणि
श्वर राज वरं ॥ २२ ॥ वर सत्सह जोदधि चन्द्र मुखं मुख भाषित
सर्वनि मुक्तिपदं ॥ पद भुवरा नक्षरा तानुपल प्रणामामि धर
शि श्वर राज वरं ॥ २३ ॥ लोके धराय नवरत्न राम चिंतन श्री
वरत्न पादान् ॥ अवापीयते न शुभं प्रवित्रं ने नैव लोके ऽस्तु सम-
न भद्रं ॥ २४ ॥ इत्यार्य वलोकिते धरस्य रत्नमाला स्तव स्तो-
त्रं समाप्तम् ॥ ॥

(१६) सर्व सुरा सुरं वा ॥ ✓

ॐ नमो लोक नाथाय ॥ ॥ सर्व सुरा सुरं वा देवी भुते ज्ञान
मनोहर भाषित भक्तं मोह महानवे नामन वन्दे ॥ श्रीजिन पा-
प हरण नमस्ते ॥ १ ॥ चार दिचार कर कान्ति सुवर्ण रत्न विनिर्मि-
तं कुरुडल अपानि गणापि स चेत समस्तं ॥ श्रीजिन पाप हरण न-
मस्ते ॥ २ ॥ सर्व क वसर निजित मार सर्व शिरो मारिण चूषित
दयं ॥ श्रीजिन ० ॥ ३ ॥ त्वर्गति निजिदिन धाता केपत्रं निर्मल
निश्चल निरुक्प शान्तं व्याधि सहस्र विनासन वेद्य ॥ श्रीजि-
न ० ॥ ४ ॥ चर्क सनाकव येवीति नेजं आत्म मचुन भ शोभि-
त भेदं ॥ अष्ट विधान विभावित मुक्ति ॥ श्रीजिन ० ॥ ५ ॥
करुणा पूजित वारिण दो भक्त्या नरिडक पुस्तक विरोचन
तथै ॥ श्रीजिन ० ॥ ६ ॥ तदि सौ भव सागर चिंता लोक जिन

भवयापि नमस्ति तत्रिहियानि भरायन भुयो ॥ श्रीजिन ० ॥
७ ॥ नमि विधुत मात्रे नाशु तृनि गनस्य मान विधुर घोर
गर्भ नास्य धनुनं तदु भवगुरु दुःखोत्पन्न मानं कृपारो नव-
शरन गतं हिनामादिन नारा ॥ श्रीजिन पाप हरण नमस्ते ॥
८ ॥ इति श्री आर्या वलोकिते धरस्य रत्नमाला स्तव समाप्त ॥
(१७) स्तुत्वा गुरोरनुप ॥ ✓

ॐ नमो लोक नाथाय ॥ ॥ स्तुत्वा गुरो रनुप सौरनुविन्दु
पात्र स्वयं याकृ तमिदं जदवारि स्थनं ॥ लोके धरं गुरानि धिगु-
न सागरं च नित्यं नमामि शिरसा ज्वलितं पुत्ररा ॥ १ ॥ वा-
न्य सुपाश वनिजन रसा वु पाराक्ष नृणां दुःख पदिवीडित
सर्व सत्त्वा एवं विद्ध जगदिन परिपार नायन स्मेन नमस्तु श-
तनं धियथा धगते नित्यं नमामि शिरसा ज्वलितं पुत्ररा ॥
२ ॥ शंकु कुमानव रुणा कोरा मानवर्ण द्वात्रिंश नक्षरा वि-
भूषित गात्र धर्मं ॥ सर्व जन्म पसकायन वस्मरतो कायन राणा
मनसा प्रणामामि नित्यं ॥ नित्यं नमामि ० ॥ ३ ॥ संसार साग-
र महा रय नास दक्षं । एत्रिमेव च न भुवि नै लोक नाथं ॥ कना-
पित्वा गुरा गराणा पमेश्व । त्वं लोक नाथ समरो कुत नासंजं
॥ नित्यं नमामि ० ॥ ४ ॥ रत्न कृता भरणा मरिडित दिव्य रूपा
वारैन्दु रग्न जवन विभूषितं लोक नाथं ॥ चरणा प्रणामामि ॥ नि

त्र्यं नमामि ॥ ५ ॥ ब्रह्मेन्द्रोपरिवृत सरसिद्धि सङ्घे
 गन्धर्व किन्नर महोरग नाग यक्ष नाथस्य तस्य भवचरन
 पूजस्य त्रिलोक नाथं चरणे प्रजास्मिं ॥ नित्यं नमामि ॥ ६ ॥
 भूत पिशाच गरुडैरथ राक्षसिभि कुभीर कुम्भाराड महोरग
 राजराजे विश्वानरा शुर शनं परिवार भूतौ लोकनाथेभ्य
 चरणे सरनं गतोस्मि ॥ नित्यं नमामि ॥ ७ ॥ अर्वद्विवाक
 र कैरेन हिंश्च वमति नन्दक विधर स ते गुणा सागराणि ॥
 लोकेश्वरस्य पथित किंतिन वरत्नया नपीयते गुणानिधि
 परमेश्वरस्य ॥ नित्यं नमामि ॥ ८ ॥ श्रीकायकं प्रणिदिने
 परुषयेते येने प्राप्नुवन्ती ब्रह्मा धन पुत्र मोक्ष ॥ कृष्णाय
 रोग शोक राक्षय नास्य जन्नि चदा महेश्वर चित्त तव पादयुग्मे
 ॥ नित्यं नमामि शिरसाञ्चलित पुतना ॥ ९ ॥ इति श्री कर्पूराक्ष
 व समाप्त ॥ ॥

(१८) नमामि लोकेश्वर ॥

ॐ नमो लोकेश्वराय ॥ ॥ नमामि लोकेश्वर प्रार्थनाय
 क्षीरं पुष्प मुख सन्निभाय ॥ अमृत मौरिहिते सोभनीयं
 त्रिलोक नाथ भुवनेश्वराय ॥ १ ॥ निर्मल द्यं बहुकामलाय
 विशाल सुलोचन सुन्दराय ॥ मधुर वाक्य हरित रूपाय ॥
 त्रिलोक नाथ ॥ २ ॥ विशिष्टकृष्ण हलबुधनाय दिनकर

सतिशिरसि किरणाप ॥ जगत सन्निभ कर्पूराक्ष ॥ त्रिलोक नाथ ॥
 ॥ ३ ॥ मार्य गरे परिकं स्वभवं सिद्धराजं बहु पुष्प नायं ॥ गण्डि
 तमार उपदोष नीयं ॥ त्रिलोक नाथ ॥ ४ ॥ कनकरत्नमणि
 त्रिलोक नाथ सर्वावरण देह तुषमाच ॥ मुक्ता भेनानं परिष्ठा भना
 नियं ॥ त्रिलोक नाथ ॥ ५ ॥ सत्त्वदिसर्वं उधारनीयं वाञ्छि
 तकार्ये सफलं प्रदानं ॥ अष्टादिभय परिमोचनीयं ॥ त्रिलोक
 नाथ ॥ ६ ॥ नकुसुमार्थि रोग सदायं दीह प्रसन्न मम मु-
 क्ति शुभं ॥ उत्तर चित्त किंति कारनीयं मोक्ष सुभागा फल देह
 नाथ ॥ ७ ॥ शुभाधिकारं शुभ मङ्गलार्थ देवगति देव पामं
 प्रदाय ॥ जग मरणां त्रिमलं हराय त्रिलोक नाथ त्रिभुवनं नाथि
 नीय ॥ ८ ॥ धर्मात्म वेत्त जगत्तारनीयं मोक्ष प्रदानं कलु-
 षं हराय त्रिलोक नाथ गुणा नागराय षट् गति नर्क परिसुक्त
 नाथ ॥ ९ ॥ रक्षता रक्षतारण राग हर द्वेष विनाशनो हारं
 हरमो फल भार विना सकलं विग्रह हर फल देह पदं ॥ १० ॥
 येद दूर्गाति नासन मोक्ष पदं पाय विनासन मुक्ति पदं ॥ ...
 लक्ष्मि कान्तानाम्ना जीरकानं भवन्तु ते सदा जपा ॥ धन धान्य
 वाञ्छित मनो मुक्ति फल प्रदं ॥ १२ ॥ इति ज्ञानोक्तोक्ति
 धरस्य मुक्ति जाला स्तव स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(१६) अमृतरुचि ॥

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ अमिन् रुचि शिरस्थं पद्मप-
त्रायनाक्षरं दुरितकृत विनाश मोहमाया हिनाक्षं ॥ कर-
धन कनकाक्षं लोकपाले कदक्षं प्रणामिन् शिरसाहं नो-
मिन् लोकनाथ ॥ १ ॥ अरुण वदन शोभं बोधिविज्ञानं ह्यु-
मीशमकुट ससारकां बोधिसेतु ॥ मनसिजकृतनाश बोधिस-
त्वादिकेतुं प्रणामिन् ॥ २ ॥ सरसिज कृतवासं दूरकंदर्पपाशं
सुरनरदनुजामं पूर्णचन्द्र प्रकाशं ॥ सुकृतजनविनासं कोटि-
सूर्यावभासं प्रणामिन् ॥ ३ ॥ उरसि विहितनागं मोचिताशे-
षरागं भवजलधिविभागं मोक्षसौख्ये कर्मागं ॥ प्रतीपिनकन-
कागं बोधिबोधैकरागं ॥ ४ ॥ जिनवर सुनराजं मुक्तिमालावि-
राजं सुललित फनिराजं किर्निनार्चाभिराजं ॥ प्रमुदिनवीलराजं
पालिनामर्त्यराजं ॥ प्रणामिन् ॥ ५ ॥ धनमधुकररूपं क्षत्रि-
यासार्नकूपं सुचरित हय रूपं सिंहनादतभूपं ॥ अगुरसुरभि-
रूपं धारिता शेषरूपं प्रणामिन् ॥ ६ ॥ त्रिविधविधुतपापं
मेहरत्वं तु तापं प्रतिदिन मितजापं देवचक्रे विलापं ॥ निलय-
भयकलापं भेदयाज्ञानचापं प्रणामिन् ॥ ७ ॥ विहितशुभ-
जनानां मुक्तिर्तपो दानानां विगलितरूपानां भक्तिपूजाराता-
नां ॥ वलकुशल समुहं संप्रमोदस्वभक्त्या अवहि कृतविला-

प्रीतिमान विने

पं माकृपा राजपायं ॥ ८ ॥ दशवल्कलसिद्धि सदवे बुद्ध-
बोधिं जनम मरणाभीतो मारपासानिनि ॥ मनसि मन्निन-
वृत्ते अवहि कृतविलापं मां कृपा राजपायं ॥ ९ ॥ प्रवत्सुगा-
रान् धर्मकार्ये समं ध शरणा मिह प्रणामि कारिनां गभङ्गं ॥
प्रमुदिन मनसाहं बोधिलाभे कयत्नं अवहि कृतविलापं मां कृपा-
राजपायं ॥ १० ॥ श्रीलोकनाथ चरणां वृजं भक्ति पद्यं प्रियुष-
नन्दरचिता नानि विस्तराजं ॥ सप्ताविधार्येन युनाद्वरतां निह-
यं सोषावति गमनमार्गं कमस्तु सद्य ॥ ११ ॥ स्तुत्वा लोक-
गुरु मुनि धरवरं सर्वार्थसिद्धि वदं यन्पुरायं समुधाजितं
वृजन् नन्पुण्यन सोरवा वीतम् ॥ श्रीलोकेश्वर पाद पद्मज र-
मोक्षा मेक हर्षोदितं लोके केसवरं सुदुर्जयतनं जित्वा प्रमु-
क्ता मत्नं ॥ १२ ॥ इति श्री गदाय्या वलीकेन वरय सप्तविंश-
तुत्तर स्तोत्र समाप्त ॥ ॥

(२०) मार्ग परं प्रवत्त भाष -

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ मार्गेश्वरं प्रवरभाषण मानकाय-
संसारिके भवति सत्त्वविह्वलितः ॥ प्राणानि पाट विरहात्त-
द्य मुक्ति लोके श्वर शतं तव पाद युगं नमामि ॥ १ ॥ इदानीं निष्ठु-
र महा करुणा वक्ष्यो नागेन्द्रलोक इह लोक भयं प्रदत्ता ॥
प्रादत्त दान विरहा भयभीति नाशो लोके शतेन तव ॥ २ ॥

कल्पान्त दग्ध हुनभुक् स्वर्गितो पुतेजः सताप सत्वबहुदुः
 र्वावनासकारि ॥ अवमृचय चरिता दीभिमोक्ष मार्गलोकेश
 तन ॥ ३ ॥ नाना निर्लंकृत फनामनिपन्न गोसो दंष्ट्रा करालवद
 ना च्चलजिह्व दंष्ट्र ॥ सोरादि पान विरता दन्तिभित्तभंगोलो
 केश ॥ ४ ॥ दुःखा हिका पुरुषतस्कर कोनिहन्ता सौवर्गा रूपेण
 मार्थ विधानचित्त ॥ नृत्यादि विव्र विरहाद् भयनिष्ठ रो वैलोकेश
 श ॥ ५ ॥ स्थुजा यसो निगड वध्न कोन शक्त गौरवानि कर्तु
 श स्वराणि यरोपकारि ॥ उच्चासनादि विरहा समवद शान्तो
 लोकेश ॥ ६ ॥ दूर्गाध तोष निधिचंचल भंगवाहो मीनादि
 नक्र क्रम धारय पूर्ण भीत ॥ सय्या सनाय लनाजल भेति
 हारो लोकेश ॥ ७ ॥ पेशा च दान महा भयरूप देह काधाता
 भिषन तरा नर मांस भक्षि ॥ वैकल्प भोज्य विरता दभयंकरो
 सो लोकेश ॥ ८ ॥ अष्टाङ्ग मार्गस मुपाय ठु रानरत्न लोकेश
 स्वरस्य वर धर्म महा प्रसिद्ध ॥ नित्यं श्रदास्तम महा भयभीति
 वित्तो लोकेश ॥ ९ ॥ यस्तुति संवित्त मेवलीलवाजोत्तादान
 पतेये शुभसंपदार्थ सत्वोपकार परमार्थ पदं विशालतस्मै
 नमोस्तु सततं जिन पुत्र काय ॥ १० ॥ इति श्री मदार्या लोकेश
 श्वरस्याष्ट महाभय हरण हृदय माला श्रव समाप्तम् ॥ ॥

(२१) भुजे वामे पद्म धिर ✓
 ॐ नमो लोक नाथाय ॥ ॥ भुजे वामे पद्म धिराशख -
 रिसंख्या नवगत दुतिराजिणी श्रीजिन मकुट शोभापरिवि-
 त ॥ गलालं विद्यानः कठित कुरगा जिनधरः सलोकेशः
 स्वामि प्रतिदिन मया याद वतुन ॥ १ ॥ यदि याज्ञा पूर्वस्व
 दिनि तनुजो न धनुमरं यने नै भुवन् दिनिसुत गनास् वा
 ररागराः ॥ विनेयानां तेषां मुपकृतिमकाषीत् स्वयमपिः
 सलोकेश ॥ २ ॥ उदन्वत् पारेयः समगम यदश्चैः स्वगप
 धा दीशक सुनुंक्षोणी पतिकमलया योजयदीपः ॥ ज्वल
 दीपज्वाला विन्तुत्रिनव पुराणि क्षितरिपुः सलोके श ॥ ३ ॥
 षडंशोर्जिह्वं यतपिवति मनुजो दीपक युक्तं सुवीज पालासं
 भवति विरत्नं तस्य गरलं ॥ अहो धन्यं याम्यार्क्षं शिखितिधि
 यात्रादि दिवसं सलोकेश ॥ ४ ॥ विमानं सद्गुणकृत भुजंग-
 राजं प्रतिवसन् सहाहा हुहुभिः कनरुचिर वादित्र निनदै ॥
 भुवर्धुः स्वर्मादं रथं चरणा घोषे प्रातदिशत सलोकेश ॥ ५ ॥
 चतुर्वाहु सारथ्य मभजतदां अस्मारिपु भुवर्धुः वदित्व मम
 र पतिश्चैत्र भुग भूत् ॥ विदिग्दि ग्रपालस्ते रथचरणा धुर्याः स-
 मभवन् सलोकेश ॥ ६ ॥ विध्वन्याने हेतुः प्रकट यति नेपालवि-
 षये सुरक्षां पंचारयां सुरभिरवरि शृखे प्रतिवसन् ॥ चकारा

विस्वागा दुहित हरिमुखान् सुरगनान् सलोकेश ॥ ७ ॥
 परितेन स्वर्गेन को नरक नषीते शो दितकर शुधासुः कल्पद्रु
 विविधतनु धारी भय मुखः ॥ महाकाला लोमिन रुचिगुरुः
 पंचजिन पान् सलोकेश ॥ ८ ॥ इयं यावद्वीधेः स्तुतिरनुरवं
 सालिजननि कृपा सिधो श्रीमत्पद कमलयोः शोभन अरं ॥
 मदिद्या विज्ञप्तिः कवि जय मुने ! सस्कृतिरिव प्रियत्वं भुयादि
 नि कमल पाणिर्विर्जयते ॥ ९ ॥ इति श्री लोकात्मनः स्थ सुन्द
 रास्तक समाप्तम् ॥ ॥

(२२) सिन्दूर लारुणा

श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ सिन्दूर लारुणा बालुतुकं भ
 नीलजसक्ति केशपरितंभ ॥ ज्ञान गुणाधिप सिद्धि न स्यवं
 नोमिसदा गणानायक देवं ॥ १ ॥ नील समायुत लायन
 नेत्रं ॥ हस्तीमना हर सुमन गात्रं ॥ दान रसात्मन पात्रदलावं
 नोमिसदा ॥ २ ॥ सुप्र समाकृति कर्णा विरंता रदतुवर ताल
 तुनारं ज्ञान रसामृत विविर्भावं नोमिसदा ॥ ३ ॥ पाशक
 लंकुश नीलजहस्तं पिवर कोमल देह सुपुस्तं ॥ नन्दिकरा
 दत नजं सुहामं ॥ नोमिसदा ॥ ४ ॥ कौस्तुभं नेष्टुक भीमि
 गुहावं विकल मुख कृतातुनिकायं ॥ मुखकलाज कृतासन
 नावं नोमिसदा ॥ ५ ॥ हेममना हर कुराडन हारं जम्बगुरु

स्लतार मुदारं ॥ यन्मनोरथ सत्यत सावं नोमिसदा ॥ ६ ॥
 निव शरीर तलोक तर्शा खर्वर वारुणा चंचल करी ॥ एकशि
 ना एकदन्त सुहावं नोमिसदा ॥ ७ ॥ चन्द्र धुनिसमर्नमन
 कार्य रत्नाविभूषित दिव्यरूपाय नागबलंकृत शुद्ध शोभावं
 नोमिसदा ॥ ८ ॥ दात्री सलक्षणा संयुक्त गात्रं रुद्रकका
 रणा लालसु पुत्रं नृत्तपदासन साधिन देवं नोमिसदा ॥
 ९ ॥ बालच निवर परिडन भावं सूर्यविनायक स्तोत्र विषेष्टं
 येच पठति सदा सुखं वित्तं तेनु भवन्तु महोदय देवं नोमिसदा
 ॥ १० ॥ गणानां गणानाथाय सुर्वार शुभमङ्गलं काम
 ना सुख संपन्ना देहि मे सर्वसंगदं ॥ ॥ इति श्री गणा
 पति स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(२३) सर्व सुरा सुर वन्दे

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ सर्व सुरा सुर वन्दे निभूते ज्ञान
 मनोत्तर भाविन चित्ते ॥ मोह महाशांति शोषणादक्षः श्रीजित
 पाप हराय नमस्ते ॥ १ ॥ बालादिवाकर कान्ति सुवर्णा रत्नवि
 निर्मित कुराडन करी ॥ प्राणिगणा धिन संचित श्रेष्ठः श्रीजि
 नपाप ॥ २ ॥ अंबक वत्सर निर्जित मारः सर्व शिरोमणि चंवि
 तपाद ॥ पौनल पर्वत देव निषादं श्रीजिन ॥ ३ ॥ स्वर्गनादि
 जल धोतक पर्द निर्मल निश्चय निश्चय शान्त ॥ आधिसहस्र

विनासराजिन् श्रीजिन॥ ४ ॥ अर्कशशांक प्रयदिनितेज
आनु मम रुक्मभसाई ह भेदः॥ अष्टविधानविभावितभुक्तिः
श्रीजिन॥ ५ ॥ धर्मराज सुगता नय देहपद्मदलोचनलोच
नरस्य॥ सत्कमलोपरि सुस्थितदेहः श्रीजिन॥ ६ ॥ किनन
पूजितवानीस भक्त्या॥ नन्दिकपृष्ठविलोचनमितंच श्रीजिन॥
७ ॥ तावदलोभनसागरविज्जा लोकजिनभयोपेनमाना॥ ते
पोहिचांते भवायरा भुयोः श्रीजिन॥ ८ ॥ मनसि विभूतमा-
त्रेना शुभीतीं गतस्य॥ मरणा विधुरघोरं गर्भकाले च नून॥
९ ॥ ननु भुवगुरुदुःखं यस्य नानं कृपला॥ तव शरणागतं
हि नाहि नां हीनमेव॥ १० ॥ इति श्रीआचार्यवलीकिने अग-
ष्टकसमाप्तम्॥

(२४) सोम्यमुहूर्ति

नमो लोकनाथाय॥ ॥ सोम्यमुहूर्ति अक्षरमणिस्वर
अनादि बुद्ध अर्हन्पति परमेश्वर॥ १ ॥ त्रिभुवने जयंजयंकर
राक्षसालं चन्द्रमकुटावरभुवरां २ मुकुटकेशभयंकर
थाद्युचर्मनिवासनं॥ २ ॥ एवासक्ति यज्ञो पीवितान्नराशिराव-
लिशाभीता ३ उर्ध्वकुराडन अस्थिभरना करानं कपालधरा
॥ ४ ॥ अमलस्थिता वरभारदं परिगोचना॥ ५ ॥ जिनजिना
नयलोकप्रवृद्धा २ तेननेन रूपप्रकाशिता॥ ६ ॥ क्रमकहेम

इहगिरियावराहा २ मन्वभुवननरहृदया चित्तगुरा॥ ५ ॥
कनकसुव्रततर्द्धनराहा मार्गशदानपतिपरमेश्वर॥ ६ ॥
इति श्रीलोकनाथगीतसमाप्तम्॥

(२५) (वृद्धादिदेवमनुजो)

ॐ नमो मञ्जुनाथाय॥ ॥ (वृद्धादि)॥ नमामि मञ्जुनाथाय
त्रैलोक्यव्यापित नृये मया कृतं तु मे पादो नमः श्रीमञ्जुनाथं
॥ १ ॥ मोक्षिजोतिश्वर चैत्यपीरसिंहसनास्थानं गोमिस-
त्वं मोस्तुत नमः श्रीमञ्जुनाथ॥ २ ॥ लोकेश्वर जगतस्वा-
मि अमृताभ मोक्षिधर द्वेष मोहन काम नमः श्री॥ ३ ॥
स्वर्गमर्त्यचपाताले सर्वसत्त्व उधारण पद्मपाशो महा-
वीरं नमः श्री॥ ४ ॥ दहिन श्री विनायक वाममहाभयंकरं
पद्मनृत्यश्वरमध्य नमः श्री॥ ५ ॥ रत्नमकुटेशोभाय
खड्गपुष्पकधरं धनुधारि मञ्जुशील्वं नमः श्रीमञ्जु॥ ६ ॥
पूजनिपंचमञ्जुश्री पुष्पधूपगोहृतेरेवाद्यसद्य सुमङ्गलं न-
मः श्री॥ ७ ॥ विद्यानां विद्या राजत्वं सर्वाविद्या मद्विफलं
सर्वसत्त्व हितार्थकं नमः श्री॥ ८ ॥ चन्द्रसूर्य सुमण्डले
वह्नुतेज सुशोभितं प्रहतेज मञ्जुशील्वं नमः श्री॥ ९ ॥ राग
द्वेषाभि मोचन मोहमायाभिनासनं नत्सर्वहरणं मोक्षान-
मः श्री॥ १० ॥ मञ्जुशील्वं जगत्स्वामि कानिजने भिक्षोदितं

१ इति श्री मद्भगवाचार्थ भरण विन्यासार्थ समाप्तम् ॥

नेपाल मराज्जन् स्थामे गुरुर्वचरणात्मनः श्रीमन्नुनाथकं ॥ १ ॥

(२६) नमामि जिननाथाय ✓

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ नमामि जिननाथाय नित्यानित्य
विधायिने ॥ निरवरनिरासप निर्विकल्पाय तेनमः ॥ १ ॥
मोक्षदत्ता कृतं मोक्षसौख्यं पुद्गलक ॥ मेरु मराज्जन् मध्यस्थ
मोक्षदाय नमोस्तुते ॥ २ ॥ लोककंदर्प पासाय लोकेशाय
महात्मने ॥ लोकरक्षाय देवाय लोकरक्षाय तेनमः ॥ ३ ॥
कनकात्मन मध्यस्थ किन्तरे तस्य पतिने ॥ किन्तिहेतो समा
लोषको निदन्ता मुपास्महे ॥ ४ ॥ नानारत्न समुज्ज्वला ना
गाभरणधारिने ॥ निरवद्याय बुद्धाय वीरिदाय नमोस्तुते
॥ ५ ॥ धानुरक्षा कृताधीर स्थान अस्त प्रपालक ॥ लोचना
सामाकि तारा पाशदराभो नमोस्तुते ॥ ६ ॥ यक्ष राक्षसवेता
न भुजंग भय भेदिने ॥ अमृताय किरिताये सिद्धिदाय न
मोस्तुते ॥ ७ ॥ भिक्षु नोन सहस्राणां भिक्षुरक्षाय तेनमः ॥
श्लोकैकैक मिदं पूजयं किन्तिहेतो समाधिष्य ॥ ८ ॥ इति श्री
मदार्या वलोकितेश्वरस्य स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(२७) सौपरी नागेन्द्र ✓

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ सौपरी नागेन्द्र मनुष्य सत्त्वैः त्वं
चैत्रक नित्य समर्वनाय ॥ शाल्यादिधान्य भुविर्ज पदतं तन्नो

मिलोके श्वर पाद पद्मं ॥ १ ॥ सहस्र सप्ताब्द वर पदतं तन्नो
त्रय स्वर्ग महा सुखार्थ ॥ वैमाद्य वैसे वनपूजनाय तन्नोमि
॥ २ ॥ शुक्लाभिधाने चतुर्वर्गन्या दुःखार्थ चंपारग वीरि
मन्त्र ॥ महानु सत्सा विदधेद नुत्तं तन्नोमि ॥ ३ ॥ भक्त्या सु
चो प्रार्थने वदनाय सत्कोष संज्ञात कर्मदत्त ॥ सुस्थावता
सालय कामराज तन्नोमि ॥ ४ ॥ शुद्धार भाषित तार दोषे
सुश्रावणे सत्य ठ तोत्रनिय ॥ प्रारणार्थ मेवं कृत कर्म नियं
तन्नोमि ॥ ५ ॥ सहाय नान्यदि सहस्रानि देवा न्यो हा
सित तोषितो हि ॥ नभस्य के नित्यतनाथ मरा तन्नोमि ॥
६ ॥ महेन्द्र नांता समरत्न दाना हाराज गाथा गुणा भावनेष
॥ यताश्चिने धर्म दे सारथिय तन्नोमि ॥ ७ ॥ उज्ज्वानिता
घनय पद्म रोगस्तेनाप वारिन् मपुष्प निय ॥ सुवाते चैत्र
मनो हरेय तन्नोमि ॥ ८ ॥ देलय प्रामुदिता सुवास सायो
जिको सर्जक धुपनिर्णय ॥ सतापने रचकुलकोटि दीपित न्नो
मि ॥ ९ ॥ संप्राप्य प्रजो लिता वदापं त्रिकाय शुनेन सुष्ठो
कनिय ॥ सचक्र वर्ति नमुरा ह्य भुजितनामि ॥ १० ॥ वैमाद्य के
च दूमरिणा प्रभादो प्रेमयसो शोभित दिव्य योग ॥ संयुक्त गन्ध
निलके प्रहिय तन्नोमि ॥ ११ ॥ तपस्यक सत्त्व सुखोदयश्च क
ल्योनेपेति प्रदोता तन्नोमि ॥ नैवद्य पञ्चामृत दीपनीय ॥ सहस्र

कल्याणपतिप्रदाना नक्षौमि ॥ १२ ॥ वागार किंतव वरणीयं
कोभावनीयं खलुरूपदर्श ॥ स्वचिन्तसंकोधन कामहेनो नस्मा
दिगभीयं वलोकनाय ॥ १३ ॥ मासाष्टमियवनवारनित्यं
यपूजयति स्वरूपकन ॥ सदार्थमोक्षा श्रयसोपलनेन
तेनेवलोकौ स्तु शुभं भवतु ॥ १४ ॥ वेदादशो मासि फलप्र-
संसा मुषोषवा दुद्धत रोनुभावा ॥ नीला सुवर्जाहमिदं प्रव-
क्ष्य श्रीवोभिसत्त्वस्य गुरो नमस्य ॥ १५ ॥ इति श्रीमदाय्यी
वलोकितेश्वरस्य क्षरमासफलानुसंसा स्तोत्रसमाप्तम् ॥

(२८) वन्देत्वां मानन्द

ॐ नमः श्री विद्या धरी देवी ॥ ॥ वन्देत्वां मानन्द नविषि
नेल्लिलिते ॥ १ ॥ नन्दवनक्षतशोभा सुवन्दे मानुनिवहर्की
डास्स सुरवेदे ॥ वज्रयोगिनि विद्या धार विदिने रुद्रप्रदिपारि
मर्गदिने ॥ २ ॥ विष्णुपदितन पर्वतकरिनि भद्रनदिजल
संगमवलिते सुरपाद पसन शोभा मिलिते जोगिनि कोटिग-
निरा कुरेत ॥ ३ ॥ करवीरसिद्ध पृथिवन मध्यरत्न मकुट
मण्डिर मणिगन्धे तस्मीन त्वमिह विराजति शालीरानित्य
कान्त साधक हरणे ॥ ४ ॥ चिन्तामणि निर्मित लवण
गिरिवर मध्य हाककनिरये ॥ वार दिवाकर समरुचिललि-
ते महजानन्द रूप गुरावलिते ॥ ५ ॥ रचिन चारुचिकुल

चयराग्य खगिडन दनुज दयारस मगास्मा वदेनरो मां जि-
न देहे साधक प्रकानि कृत स्तैहे ॥ ५ ॥ सद्य वज्र वाम कर
करेवे गुरा लोचन पापिजन विमुख केशल कुसुमविनि-
र्मित माने मुराडमालारमणाय विशाले ॥ ६ ॥ रक्तपानमा
दितवन्ननेने उर्ध्वपाद तर्जित कृत भुक्ते ॥ सिन्धुरक विरा-
जित भारे भुक्ति कुनिर विमरिडन काले ॥ ७ ॥ शुभनि
सुंभदल नयन दन्द महीषासुर वरखराडन चन्द्रे ॥ कुराडन
युगले विलालित गराडरंजित भार सुधाकर खराड ॥ ८ ॥
करुणा कोमल सुविमल हृदये देहि समिहित वलमिह स-
दये तव मन साधिन सिन्दुरे वशान यतिज गोविन्द सुर ॥ ९ ॥
चदिभारे वनिता नतनुते किंकर भिन्न पुरुष खलु कुरुते ॥
प्रवल प्रताप महिपति भनिने विरनुमङ्गल समुज्ज्वल मि-
र्मिते ॥ १० ॥ इति श्री समस्त शास्त्र संगिता सकल विद्या
पारङ्गत महा राजा विराज विदग्ध चूडामणि श्री प राज
राजेन्द्र कविन्द्र जय प्रताप मह्यदेव विरचिते जगत माहिनि
नामस्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(२९) कल्याणदिके भव -

ॐ नमो लोक नाथाय ॥ ॥ कल्याणदिके भव शिर्कोहिम-
हा गभावा सङ्केधो स करुणा भय । वश्व मुर्ति काय्यादिके

पनमनि तिसमस्त सत्वाः श्रीलोकनाथ नवपादजुगं नमोहं ॥ १ ॥
 आकृत्यमेनजजस्य हिचवर्तमानं चाप्यासिसुमिसकारे
 प्रतिवासेच हम्सहूपरेक नृसुमुज्वरेण ॥ श्रीलोक ॥ २ ॥
 अस्त्वं भवहिम विप्रकुन्त प्रसिद्धो ॥ विष्णुच वैश्वमने
 वर धर्मतेतु सर्वरा कशितमतेप्रभु वैयन ॥ श्रीलोक ॥ ३ ॥
 बोद्धाक्षय भवसिनजक सुप्यरूप योग्यस्वराहि शुभयाग
 क मार्गाक धुजग प्रो भवभयोत विनाश करिः श्रीलोक ॥
 ॥ ४ ॥ कारुण्य भाव हृदया सहगसरो हिविशोकलो गुणा
 सागरं च ॥ चिन्तामणि रत्नमार्गारैक गुरुकृपसः श्रीलोक ॥
 ॥ ५ ॥ वंधुकावर्ण बहुरूप निशाननेत्रं सर्व प्रसुनि किं
 हस्ता ॥ तं पद्मपाणि विमलोत्तमनिवहृषं ॥ श्रीलोक ॥ ६ ॥
 तव बहुरगुणा वेक सम धारित वक्त्रे नदपिमुपदभावे भयमेव
 सपात्रं यदिधिपदमसर्व मेत क्षेप स्वस्तुतिरिति कुसुम स
 भक्ति गांताननमस्या ॥ ७ ॥ इति श्री आर्या समाजिनेश्वर
 स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(३०) नाना कृति सुकृति

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ नाना कृति सुकृति न जगता
 मारुतं ॥ लोके सवहरात्म धरवरण्य सत्सार सागर तरं
 कमला चतांश ॥ पुं ॥ श्रीलोकनाथ विबुद्धं शुभदेभजा

मि ॥ १ ॥ रक्षाकरं लकल भित्ति वतां जनानां ॥ व्यवननं
 कनक कुराडल चारुकरां २ गेवैयका दिमशिना भरने सोभं
 श्रीलोक ॥ २ ॥ भक्त्या नतस्य मनुयस्य विपनि रत्नं स्वर्गा
 पवम फलदं वरदं दयारु देवा ॥ धीदेव ममरं जिन संघवेदे ॥
 श्रीलोक ॥ ३ ॥ सनपारुगा तिलकं सुरावां रत्नकरं कन-
 क कत्त सोभहस्तं २ भोजिषा माभरणा धारणा दिप्तवत्तं ॥
 श्रीलोक ॥ ४ ॥ दुर्गन्ध दुर्गनिहर दुरिता प्रहारं दुर्भिक्षना-
 सन कर करुणा करं २ विद्या नवगुण निधि शुनि शुद्ध
 देह ॥ श्रीलोक ॥ ५ ॥ इत्यवरं सकल भूतजाग विनायकं त्रै-
 लोके नाथ मसनैजन पुष्टिकारं २ कान को चित रथक्ते
 सुखसं प्रविष्टं ॥ श्रीलोक ॥ ६ ॥ यक्षादि किन्तु नरे
 मुनिभिर्गजगै विद्या धरे सुरगने दनुजे पिशाचे २ स-
 र्वे प्रकारा नामितं ग्रहस्ते ॥ श्रीलोक ॥ ७ ॥ गन्धाधर
 दन पुते मृगनाभि भिक्षु कपूर कुम्कुम वरे हरिचन्द्र मादौ २
 तस्या तुल्यपन कृतेन सुसोभितांग ॥ श्रीलोक ॥ ८ ॥ रा-
 गाधि नासन करे भवतां शुनानं २ शोकादिदुःख हरणं सु-
 ख चित्त नियं २ पिपूष तुल्य वचनं मृदु काल गात्र ॥ श्रीलो-
 क ॥ ९ ॥ आजानुलंबित करं मृगराज मध्य सौंदर्य कुराड
 शिखर फतिदा भदत्तं २ अतेन सुद्धर तनु शुभ रक्षनाङ्ग ॥

श्रीलोक ॥ १० ॥ येलोकनाथस्य सदाननंगनोत्रपठिष्यन्ति
जनाभावाः श्रीलोकनाथं प्रियदिप्सीनये २ स्तपुधस्तुते भ्य
त्वरितं ददातु ॥ श्रीलोक ० ॥ ११ ॥ इति श्री गणपति शाय
क विरचितं लोकनाथस्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(३१) जटाधर सौम्य विसाल ✓

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ जटाधर सौम्य विसाललोचन
सदाप्रसन्ना मुखचन्द्रमण्डल सुरासुरैर्वन्दित पादपङ्कजन-
मामिनाथ मारण पद्मसंभव ॥ १ ॥ सरोजपत्रायतदिव्य
लोचन कुदृष्टि संसोधन शुद्धलोचन नमामिनाथं ॥ २ ॥
हरिदु शराद्वाह माधिको ज्वलनिधृष्टि गण्डामलतालकुराड
ल गट् भक्तिभाला कुल कोटि संकुल नमामिनाथं ॥ ३ ॥
बुद्धार्म ध्वनि प्रेम धातुर्गं सहश्रवाह विजतुष्ट षट्भुजं
धधानुनातुल्य समनन पुष्पं ॥ नमामिनाथं ॥ ४ ॥ उप
राव प्रज्ञो दीधमस्थनोद भवं त्रिधातुसंभवं ॥ नमामिनाथं
॥ ५ ॥ पद्मो पीरितं नार्यं पद्म हस्ता गताधरं आर्यावजो
किनेश्वरं वन्दे सर्व सत्त्वहितोदयं ॥ ६ ॥ इति श्री आर्याव-
जोकिनेश्वरस्य वासुकि नागराज सत्त्वस्तोत्र समाप्तम् ॥

(३२) देव मनुष्यां ✓

ॐ नमो भगवते श्री आर्यावलोकितेश्वराय बोधिसत्वाय

महासत्वाय महाकारुणाय ॥ नमो लोकनाथाय ॥ ॥
देव मनुष्या सुर नर तव चरणा पूर्ण हन जन्म जरा रुज मरणां ॥
लोके सत्त्व मामस रणे रक्षकपालो कुरु कारुणाय ॥ १ ॥
संसारो दीधमध्य निमग्नं केश महोर्मिसमाहित भग्नं ॥
मानव धीरस्य माविरुन्नं प्राणि महा कृपणो मि विवृत्तं ॥ २ ॥
तुच्छा निमिषा पद्मनेत्रं मरणा महा भय विह्वल गात्र ॥
पालय भगवन् नवलोकितेष्वा यावद विरचि यास्मिन् विषमा ॥ ३ ॥
कृन्मन्यस्त्री ग्रहरा मज्झं हतमंजना प्राणि सहश्रं ॥
नाथ मया कृतपापमस्यधं नासय संपाति कायकदेव ॥ ४ ॥
यज्जीवित सत्कारुणा नित्यं लोकानित्यं भनितमसत्यं ॥
तद्भोपेक्ष्वर सभाय समस्त वातिक नरकं निरमाभ्यस्य ॥ ५ ॥
रात्वा नामेक चित्तिग महितं स्वयमनु मोदिन माप परविहितं ॥
तदिदा निगम मानस पापं स्फोटय नाथ को मि विलापं ॥ ६ ॥
देव मनुष्या सुर जातिनां तीर्यक नरकं प्रेत गतीनां ॥
सत्वाये निवसति सदानां रक्षसिना निनि नव मयि वार्ता ॥ ७ ॥
तेन म मो पारि श्रुज कारुणायं वीक्षा शरीर गत कारुणाय ॥
इति शृणु भगवन् भवति भनामि यावत्तारकं नैव विश्रामि ॥
किंवा प्रोषिक रोहि पार्थ मुञ्चास भगवन् मामकृतार्थ ॥
अथवा प्रेक्ष कृपातव पुराय जनयासि दृष्टं कथमविपुलम् ॥ ८ ॥

(पुष्पगोतिभरी पङ्क्तयेनैव मरुतो मेहोभयै विह्वले गान्)
 स्मररायनापि भवसि परिनुष्टाक्षपयसि कलुषं किमिति न दृष्टा ॥
 तस्मान्भगवन् पराहिनदक्ष क्षणमाकुरु मा मिहरक्ष ॥ १७ ॥
 दन्ति नुरंगम पुत्रकलत्रं राज्यमकह कवेस्मा विचित्रं ॥
 मासांतिसिरो सिकपधेनं भवार्थिभ्यो दत्तमननं ॥ १८ ॥
 अंजन गुनिका पादुक सिद्धि सिद्धी यद्विमानमत्र विमुद्धि ॥
 सिद्धे नयत्य स्तोपुरवेस तुष्यसि यथा त्वं लोकेशः ॥ १९ ॥
 येकरचरणा विलोचन हिना विविध व्याधि महाभयहीना ॥
 तत्त्वापि तुष्ट पुष्ट शरीरा विरसंतनुजो गुणागंभीरा ॥ २० ॥
 गरल व्याधि ग्रह आकित्या शान्तिपात्रि सदा योगीन्या ॥
 सरति नितस्य पुरोगम दत्त प्रीतो यस्य स्वजिन भूत ॥ २१ ॥
 इति लोके चर किं प्रियमान मुच्यसि भगवन् माम कृत्राणा ॥
 रामिह मनुदिन मुदित पाणिना सयत्राश शमा कुल वारिणा ॥ २२ ॥
 पीद्विषे यद्विष चञ्चल मनसा कृत बह्मपापं व्याकुल वपुषा ॥
 नित्यं जन्ममपाप्मन सकलं जघर्ति मित्रं प्रमोते विकल ॥ २३ ॥
 तत्कुरु संप्रति मम लोकेश प्रणतो विविधां जलिरह नृश ॥
 येना भुत्वा पापिक दुस्त सुगीत भवतो यामिन मोक्षगा ॥ २४ ॥
 मोह द्वेष विनाशन हेतुं स्वसंसार महो दीदि सेतुं ॥
 जातितत्त्वस्तोभापनवाह त्वगुरु दुरित निसाकर गह ॥ २५ ॥

दीक्षित सुगता नुनर तनौ त्वं पारित वहु दुःखित सत्व ॥
 निर्जन दुर्जय मन्मथभार त्वंसतीरा भवार्थो वपार ॥ २६ ॥
 सकल ज्ञान विह्वल न देहा त्वपरि मखिल जगतसु देहा ॥
 भगवन् ननुपम करुणा सिन्धु त्वं जना विहितो कारणा वन्धु ॥ २७ ॥
 लीला विहीन करार्थि भङ्ग त्वं पार हर्षा यय व्यासङ्ग ॥
 दिव्य ध्यान समाहित चित्तं त्वं याचक साधारणा चित्तं ॥ २८ ॥
 परमुप कुर्वं भयिकरुणा नान्मजीरतो धनं करोति भवान् ॥
 कथमिह माह महोरग दृष्टा विषय शरीरा कुपुर्ण भवता ॥ २९ ॥
 सकल जनार्थं प्रीतिया करुणा शान्ति भवतो नियतर करुणा ॥
 येन नरक्षीस किन्वीष व्रतं भवता पुरतो मा विरु व्रतं ॥ ३० ॥
 नाथ कृपाते यौम विसाला सत्यं सयथा बुद्ध जल धारा ॥
 स्थल जल निम्नान्त बहु देशे शरति निरतर मशिमम शिप ॥
 इति भगवन् स्मरणेन यत्पुण्यं मम त्वेनैव जगद् क्षुब्धं ॥
 लभतां श्रीपीतल काचल वासं जनयन् सुन्दर विविध विनाशं ॥
 इति श्री मद आचार्य वक्तो किते चर भवत्कस्य चरणे
 पाद विरचित स्तोत्र समाप्त ॥ ॥

(३३) स्तुत्वा प्रणाम्य

ॐ नमो श्री आर्या वलोकितेश्वर्य ॥ ॥ स्तुत्वा प्रणाम्य भयं
 कर सर्व सत्वाः संपूर्णा चन्द्र वदना म्बुजपत्रनेत्रः सर्वज्ञान

मकुटो धृज मुक्तिमार्ग ॥ तं पद्मपाणि वरभूषित ज्ञानराशि ॥ १ ॥
 अनुंगना सबल पिनकपोतवक्त्रं रक्ताधरं हिमनुषार विवासुदन्तं ॥
 वज्रधरं शुक्तिधरं सुधरं वचाक्यं तं पद्मपाणि मुदुवर्णाधरं नमामि ॥ २ ॥
 मालाधरं कनकजम्भं विभूषितांगं नैत्रभूषणं जतविभूषितं कानचन्द्रं ॥
 कृष्णाजिना वरधराय सुवर्णवर्णं तं पद्मपाणि मुदुनात्रधरं नमामि ॥ ३ ॥
 त्वं लोकनाथ सर्वलोकनाम धार्य यज्ञोपवीत सदयश्चर सर्पराजां ॥
 चित्रामोशो प्रबलकुराडन प्रभुकर्णं तं पद्मपाणि नूतनं सर्वकृतं नमामि ॥
 त्वं ज्ञानराशि वरभाषित सर्वसत्त्वा सत्सारपङ्क निमिराशं व मग्न सत्त्व ॥
 आलोकिते प्रथमनुत्तरबोधिमार्गं तं पद्मपाणि वरमार्गददं नमामि ॥ ४ ॥
 गत्वाचयेन नरेकेऽसु अर्वाचिसग्नं सिनीकृतं हृदिविभार रुहं स पद्मं
 येनारकेण सकल दुःख विनाशयन्ति तपद्मपाणि नरकादी समं नमामि ॥
 संव्राप्यंति यमपालक भयभूमि हनर्म राजमिदमगत कामरूपि ॥
 येकर्मभूमि गिच च्छसितं ते निमित्ते तपद्मपाणि हनसासतं नमामि ॥ ५ ॥
 गत्वाचयेन अतिरूपमवेहराय त्रैलोक्यनाथ अभयं कर सर्वसत्त्वा ॥
 दुःखारोवेन तत्र स्मरामि विमुक्तिदुःखं तं पद्मपाणि हनकिल्वधनं नमामि
 त्वं प्रेतलोकगतं ये करुणा वसेन सुचिमुखं उदरपर्वतजिर्णं मग्नं ॥
 क्षुधाः नृणां दुःख पिडितं प्रेतसत्त्वा त्वं पद्मपाणि नृषणासकरं नमामि ॥ ६ ॥
 अन्योन्यभक्ष क्षुधापिडितं प्रेतसत्त्वा संप्रियते करुणा हे श्वनेनदिभि ॥
 पुस्तमशिर हन भुक्षन् नृणां नृणां तं पद्मपाणि हन भुक्षन् नृणां नमामि ॥ ७ ॥

गत्वा नमं भुवन वर्जित चन्द्रसूर्य चित्रामोशो ज्वलितरत्न प्रभावभासे ॥
 ते यक्षराक्षस गने चरणे नमस्ते तपद्मपाणि नमभग्न कृतं नमामि ॥ ८ ॥
 गत्वाचयेन वलिभग्न मनोरथस्य यद्वियत फलमनुत्तरा विराडपात्रं ॥
 धर्मकथन परिणं पीदं दानवदत्तं तं पद्मपाणि नरभक्तददं नमामि ॥ ९ ॥
 गत्वाचयेन दिविकराय च देव पुनः दानस्य हीनक्षुधापिडित दुःखितं नः
 तं याचयन्ति परिपूर्णा स्मृद्धिरत्न तं पद्मपाणि भन वृद्धिकर्तृ नमामि ॥ १० ॥
 त्वं कामरूप मुपदर्शितं राक्षसीभी दानस्य चित्रपीरवर्जितं धर्मवित्तं ॥
 तं पद्मपाणि बहुरूपधरं नमामि ॥ ११ ॥

मलमुच भूमि कुमिकोटि समुद्रभवन्ति गत्वाचयेन अतिरूपमनास्मरता
 निश्चारितं धनु पुनाय ददंति धर्मं तं पद्मपाणि बहु गानधरं नमामि ॥ १२ ॥
 दुर्भिक्षमार्ग पिशाच भवेषु वीष्ट क्षुण्णं दुःखभय पिडित दुःखितं नः
 धान्यादि वीष्ट बहु वृहिसमृद्धिरत्न तं पद्मपाणि वरकारुणिकं नमामि ॥
 वाराह अस्वकृत रूपं महोजवेन अनुंगजेन वनिजभय राक्षसीभी ॥
 आनुनेवं पवनवेग महा समुद्रं तपद्मपाणि जित मृत्यु भयं नमामि ॥ १३ ॥
 त्रैधातुर्क तव स्मरामि विमुक्तिदुःखं नानाभमावि पौरपूरा विचित्रमग्नं
 त्वं लोकमकुपनिवरय अनेक सत्त्वा तं पद्मपाणि क्षयनासकरं नमामि ॥ १४ ॥
 नानाभयं तव स्मरामि विमुक्तिदुःखं राजस्थदन्दभय राक्षस चोर भूतं ॥
 नद्याणि मार्ग हतकं दर चाग्नीदग्धं तं पद्मपाणि अभय ददं नमामि ॥ १५ ॥
 व्याघ्रभयं खगपिशाच डाकिनिनां आपत्तिथापि भयकुक्ष विधोग दुःखं ॥

वैराग्यदुःखबहुभाषविनासपात्रे नमः शिवाय भयनासकरं नमामि २०
 शुक्लाद्यामि विषमधर्म अमोघपात्रं यत्करोमि जितमिद्विषयपुत्रकर्म
 सर्वपुत्रमभिनवस्य अमोघपात्रं तं पञ्चपात्रं वरदाय सदां नमामि ॥ २१ ॥
 नित्यं नमो गुरास्मद्दि फलतरेषु नावा दुर्मात्रे न कंचनक पात्रे जातो ॥
 रम्या नदाग द्विजसा पदस्य विनाते तं पञ्चपात्रं निरय सुसंनमामि ॥ २२ ॥
 स्त्री कुर्वरे वरुणा जग वंदितस्य गन्धर्व जस्य मुनिदातव वंदितस्य ॥
 यक्षपुत्रागेषु मनुष्य नमस्तस्मै भूतै पिशाच गरुडै नमस्तस्मै २३
 यत्प्राप्ति करुणास्तव नित्यकालं साक्षी च पुराणी च धनवदि कामा
 आशुविभूति वह पुत्र विसाल भागि परयांत्रिकाल मपि पस्थानि लोकानां
 संघर्षतेषां तत्र वीर्यं महानुभावं रावो दिवा च नवनाम मनुभरति ॥
 दुःखद्विष भयविनासपात्रे तुष्यंतु देव सततं नवरक्षपात्रि ॥ २४ ॥
 इति श्री आर्या वल्लोकिने श्वरस्य करुणागरतवरस्तेन समाप्तम् ॥ ० ॥

(३४) आराधितो पि भुजगा ✓

अं नमो लोकनाथाय ॥ ॥ आराधितो पि भुजगा सुरदेव संघेः
 गन्धर्व यक्ष मुनिभी परिवदितायः नित्यं नमामि शिरसा करुणा
 मयाय ॥ १ ॥ वाल्मीकि कोटि समतेज कलेवराय आश्रित
 सुगत शेषर परितायः नित्यं नमामि ॥ २ ॥ अं भोजपात्रिक
 मन्नासनमास्थिताय यज्ञोपविन फणिशत सुमरिड नाय ॥ ३ ॥

अज्ञानगाध निमिरा पीर ध्वंसनाय ॥

त्यं नमामि ॥ ३ ॥ उत्पाद भङ्ग भवमागर तारस्य दुर्गाति
 दुर्गाति भुव परिमोच नाय ॥ रागादिदोष परि मोचन निमोच
 यः नित्यं नमामि ॥ ४ ॥ मेत्र्यादिभक्षतुर ब्रह्म विहारनाय ॥
 धारा मृते सकल सत्त्व सुषो पनाय ॥ मोहान्धकार कृत दुःख
 विहार नाय नित्यं नमामि ॥ ५ ॥ दीप्यद्दुःखं वनि नारणा
 मोक्षदायः सन्तोषकार त्वरित कृत नीश्वराय ॥ सर्वज्ञ ज्ञानपीर
 पूरित देशनाय नित्यं नमामि ॥ ६ ॥ अष्टादशो नरकमार्गवि-
 शो धनाय । जनेक दृष्टि व्यवलौकिक मोक्षदाय । नित्यं नमामि
 ॥ ७ ॥ त्वं लोकनाथ भुवनेश्वर सुप्रदाय । दारिद्र्य दुःख भयं
 पञ्चन दारणाय ॥ त्वं पाद पंकजयुगं परिवन्दनाय । नित्यं नमा-
 मि ॥ ८ ॥ मार्तण्ड मण्डल रुचि तधता स्वभाव । त्वां नौम्य
 हं सफलदे विमल प्रभाव ॥ चित्तामणि च स दृश सत्यवतिव
 गोहं । नित्यं नमामि ॥ ९ ॥ नद्धक्तो दक्ष नरता श्रुति चोतमां
 गः अष्टाङ्गभिः पूरामितं स्तव पाद युग्मे ॥ दुःखार्णव द्यतितमां
 समुत्तानयस्त्वं नित्यं नमामि ॥ १० ॥ सप्ताष्ट भुजगत माधव
 शुक्लपक्षः तारा पुनर्वसु सहे भृगु मनुवारे ॥ श्री क्रौंचदारणा
 तिथौ चतुर्तिकरोमि । मेदेहि वाञ्छितफलं भुवनैकनाथ ॥
 ११ ॥ येष ठाति महापुण्य पवित्रं पाप नासनं । सर्वकामार्थ
 मोक्षं च गमिष्यन्ति सुरवावति गमनं ॥ १२ ॥ इति श्री मदाय

लोकोक्तिभार भट्टारकस्य तुष्टवधारास्तोत्रसमाप्तम् ॥ ॥

(३५) अलिकाङ्गिरि शो दृशी -

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ अलिकाङ्गिरि शो दृशी जौंशशभुः
दिनकृत्कमलासन वाहु भववो ॥ ह्मुरस्क भवो मुखजपवनीः
रुदजारमीणा जधरा करुणा ॥ १ ॥ नरनामि भवो धिभवापु
धिरी युगजानु भवो कमला धनपौ ॥ तनुरुन्य भवासुर रात्रपुमु-
खा सकलस्त्रीदशानखजोसरितां ॥ २ ॥ पतिवादवकाव नि-
ताभ धरं वर पद्म कर पुरातोस्त्रीसदा ॥ इति श्री विद्याकृतं
हरिहरी वाहन लोके स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(३६) त्वंपद्मपाणि अभयं -

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ त्वंपद्मपाणि अभयं वर मोक्षदाता
त्रैलोक्यनाथ कमलासनस्थिताय ॥ संसार त्रिदहा भवे परि-
श्वेदेदाय त्वंपद्मपाणि वर दाना चरणौ नमामि ॥ १ ॥ भेनाकरा
गलसंगतसार्धवाह ज्योति धर सकल सत्त्व उधारनाय ॥ श्रीलो-
कनाथ भवभयार्तवी नाशकारः त्वंपद्मपाणि ॥ २ ॥ लोक-
रं सकल पाप विनाशमोक्ष दिव्येश्वरं सकल सत्त्व उधारनाय ॥
लोके नां नरक उधार मोक्षदाय त्वंपद्मपाणि ॥ ३ ॥ विश्व
पति जगत संसार रक्षेनाय संपूर्ण सकल सत्त्व उधारनाय ॥
सर्वज्ञज्ञान गुराभिधि गुरा सागराय त्वंपद्मपाणि ॥ ४ ॥

सर्वसत्त्व नरक प्रेन उधारनाय दारिद्र दुःख भयर्थं जल दारनाय ॥
त्रैलोक्यनाथ शरणा चरणां नमामि त्वंपद्मपाणि ॥ ५ ॥
सर्वसत्त्व सकल पाणि उधारनाय जगत्सं करुणा सागरमय
रूपं ॥ संसार दुःख भय नाशन मोक्षदाता त्वंपद्मपाणि ॥
६ ॥ इति श्री मदार्यावन्तो कितेश्वर स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(३७) अन्यत्र चोडामणि -

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ अन्यत्र चोडामणि धर्मधारिने
शशांकचोडामणि कर्मधारिणे त्वंपद्मपाणि कर अम्बुभा-
रिनी नमामि लोकेश्वर सर्वतारिणि ॥ १ ॥ निश्वासजोगं
मनगम्भ वासित महाज्ञान पैथो महादेव सच्च ॥ परंपदजा-
न पदवो ध्वजे त्रिशात धरन विचिद्र पूजितं ॥ २ ॥ अत्रे
पुष्पं मुखचारु हासन निलारि पद्म विमल सुलोचन ॥ पद्मल
पूर्णा जल कारु नार्चः कृतान्त सत्तम्भो भय मोक्षकारं ॥ ३ ॥
धुमा धुकार मनकंच हारकं विन्दुर विस्नान्यनजगता सकं ॥
सहस्र दिव्य युध धर्मचकृतं सहस्रभुजं त्रिय अक्ष माजितं ॥ ४ ॥
सत्पतत्वा पाद शिरसा नमैतं अमोघपासं च दर्च्य जलितं ॥
जदमयानेन सुगते पदोभौ श्रीलोकनाथ च सराणां शोभे ॥ ५ ॥
जक्षादि भूता भयभंगकारिना देवा सुरनर नागा रकीन्द्रा ॥
नानारत्नादिरत्नमणि भूषितं सुगन्ध धूप शीत पुष्प शोभितं ॥ ६ ॥

(३८) यमाराध्य साधा भूनामा —

(३५) हाहाहूँ कारनादे:

नमो श्री महाकाराय ॥ ॥ हाहा हुं कारनादेः किंकिरीतरवेः
भृगवेतालवृन्दैः हूँ हूँ कार समन्ताः नलपीसतमुखै रत्नमाङ्गा कु
लांगेः स्वर्वाङ्गे शक्रपाणिः नलकमलधरः कामरूपी विकृषिः पीं
गाक्षे पिङ्गकेशोः शवगरानरतेः क्षत्रपालवनाह ॥ १ ॥ फैं फैं
फैं कारनादेः प्रीतिजनिनवहंः बहिरगर्भाग्रवक्त्रैः वक्त्रे मालावि-
रब्धजंः प्रकृतिभयवपुः भूषितांगाशुशोभाः विलारक्तश्रवोदः
नृकसकलवृत्तोः मार्जिनामुग्रपाणिः कूडं कूडा विनाडेः नरदह-
नभुविः क्षत्रपानुयुष्मान् ॥ २ ॥ हाहा हा टट्ट हाशः रतिश-
यभयकृत्ः सर्वदायपशुनांः लोकानां विघ्नहन्ताः प्रीतिद्वयसमभंः
प्राप्तमुचाधिराभ ॥ हूँ हूँ हूँ कारनादेः त्रिभुवने कुहरः पुरायपुरा
शक्तिः मायादक्षत्रपालः कपिलसुतजयाः शासुकेणापहार ॥
३ ॥ खँ खँ खँ खँ स्वङ्गपाणिः सकलभयहरः तीक्ष्णचराडवेगः कुक्कुं
कं कुठदृष्टिः कुरुकुरु कुनिराः कुचिता शेषमालाः दँदँ दँदराड
पाणिः डमरुकसाहितो रक्षणक्षत्रपाल ॥ ४ ॥ कँ कँ कँ कृत्तिपाशाः
कृत्तिनिपुरिमयः क्रोशित शेषमालाः कँ कँ कँ कुमारमारिः कवि
कलुषहरः कान्तिचद्रुभकाय ॥ चँ चँ चँ चन्दुवेगः प्रलयतरश्चमः का-
ललोका नुलोकेः संसँ संसँ जातमानो समयसुरवर पानुयुष्मां चक्षुः
॥ ५ ॥ यँ यँ यँ यानिरूपाः यमइवनियतः यामनो यामतत्त्वाः वँ वँ वँ

पिनंकुलीः ॥ अमोघेनापि पाशेनः सायुरि ॥ ३ ॥ यन्मन्त्रजपतो
जिताः प्राञ्जिन दुष्कपादपाः ॥ मृतसंजीवनं जपेः सायुरि ॥ ४ ॥
यन्मन्त्रिसंगि पवनो महापद्म शास्त्रे कुज ॥ बुद्धानां गोविदानित्यं
सायुरि ॥ ५ ॥ इति श्री महासायुरि स्तोत्र समाप्तम् ॥

(४३) यधीरणी मनुजपनु

ॐ श्री महाशीतवती नमः ॥ यधीरणी मनुजपनुः रा-
हुतो मद्रमाप्तवान् ॥ विहीरतो ग्रहे सर्वैः शीतवतिनमाम्य-
हं ॥ १ ॥ पापतापे शान्तकरीः शीतये पसर्गतीः शीतोष्ण-
दुःखशमनीः शीतवति ॥ २ ॥ मन्त्रगुथिन सूत्राणां धर-
णान्तद्वयोजनं ॥ पठिकानां गान्धर्वपतिः शीतवति ॥ ३ ॥
स्मशानक्षेत्रे मुनिनाः यासन् चारतापुण्ड्र ॥ ग्रहा पद्म शास्त्र-
वैः शीतवति ॥ ४ ॥ ग्रहाभिभूत बालानां गण्डिपदविधा-
रिणां ॥ ग्रहमिति प्रशमणीः शीतवति ॥ ५ ॥ इति श्री म-
हा शीतवती स्तोत्र समाप्तम् ॥

(४४) बुद्धाधिष्ठानतो बुद्धा

नमः श्री महा मन्त्रानुसारिणे ॥ बुद्धाधिष्ठानतो बुद्धाः
भयदा भयनाशनी ॥ भवांबुद्धिनिमग्नानां नमो मन्त्रानुसा-
रिणी ॥ १ ॥ यन्मन्त्रोच्चारणात्तः पत्रत्रयो मुदा रूपाः ॥
नैसुस्त मांसी चरतेः नमो मन्त्रा ॥ २ ॥ मन्त्रानुसारिणी लोकं

नान्ये मन्त्रादयो गृहाः ॥ पीडयन्त्यपि पाश्चापीः नमो मन्त्रे ॥ ३ ॥
बुद्धाभ्य भामज्ञा थास्ताः यन्मन्त्र कठनांतरं ॥ यन्मन्त्र सर्वत्र स्वस्ति
म्याः नमो मन्त्रे ॥ ४ ॥ कलौ बुद्ध विहीनस्मिन् लोकानां हितमा-
चरेत् ॥ पापान्पात प्रशमनी नमो मन्त्रे ॥ ५ ॥ इति श्री मन्त्रा-
नुसारणी स्तोत्र समाप्तम् ॥

(४५) नमामि लोकेश्वर

नमो लोकनाथाय ॥ नमामि लोकेश्वर पादपंकज-
सदा विबुधं वरुणा मयैर्द्वय ॥ अयं न दोषं प्रचयं गुरा श्री-
यः परथागं बोदयवांसिनां शितं ॥ १ ॥ विशुक्क करणीय-
मुखाविमुर्धा ह रौ कयो दर रोगापि दित ॥ कथं पद्वि-
हमुदार मद्रुतं गुरो दयं हेवरं देव राजेते ॥ २ ॥ तथा विव-
क्ष गुरोरं शमात्रकं यथावरं भक्ति समुन्मुको कृतः ॥ प्रीति-
दलोक कादस्वभावेन यतो न गच्छामि जनस्य त्रा व्यर्ता ॥
३ ॥ त्वयामिह दोष समुद्भवा रूपाः श्रीकिर्तिना धर्ममहागद-
नवै ॥ जनस्य रोगादि कृत्वा पराजयि कथम भित्ते करुणानि-
धेयभा ॥ ४ ॥ जनस्य दुःखेन यदि प्रदप्यस्य कथं तदतिन-
समिकरो मिनेः ततः समाना करुणा कठ प्रभा ॥ थावाह मेवा-
स्मित सत्त्व मध्यम ॥ ५ ॥ पद्विद्विष्ये पिसमाश्रये सतीति वि-
द्यत्यदोष गुरो स्तेक धा ॥ तदा श्रज्यहं करुणा निधे पदं कमेप

दुःखात्परितमानसः ॥ ६ ॥ श्रुतागमादौ स्वरूपं सविभाः
 जनेकेनाथ स्तुतिमिह केवले ॥ तथादिदोषे यदि पद्यनेजनः ॥
 स्तुताकर्षणं नान्यथापि निश्चिन्तितं ॥ ७ ॥ तथापि नार्थं कुरुणा
 नरवरैः गुणाकरं दोष मराप्रहारितं ॥ श्रयानि नित्यं विकरी
 कृता शयः स्वकियदोषेयतेः स्वकर्मभिः ॥ ८ ॥ स्तुते प्रथो
 कश्चिदिहास्ति दोषकोः ममापराधो शुभकर्म निर्मित ॥
 नयादिवा यस्य तिनोऽनुसंधकः तदापराधो नहि चाशुभा
 रितः ॥ ९ ॥ भवस्माराध धनतान शपयते मया विद्वान् यदि
 दुःखभागिना ॥ कथं तदा ह्येवमसमप्रभोः धिगंतु ममादु
 रुजाकमाश्रयं ॥ १० ॥ जतस्य तस्यापि हि जन्मनास्तिकिः
 भवात्समाश्रयनं नहि कर्मना ॥ भवादि संतारण कारनाश्रयः
 तवाशयं धर्म समाश्रयं श्रयत् ॥ ११ ॥ भवेद्विधे कारुणि
 केननः कथं पराधु स्वत्व भजते विमोहितः ॥ अजातचक्षु-
 श्च राधेवकाद्यर्थः विहाय सन्मार्गं मत्तं द्यूदेशकः ॥ १२ ॥
 भवन्तसमः कारुणिको न विद्यते नदुःख हन्ता नहि शुद्धचरणाः ॥
 प्रविश्य नत्वा नरका नरत्नयाः समुद्धिताः दुःखपरिते मम ॥
 १३ ॥ विमारदुः पुरत रोदरः किंश्वः विभुक्षीतः शुचिमुखो म
 धुक्क कशम्बुजा जन्म शृङ्गार संश्रवः प्रपुलकैः पुरित विग्रह
 कृत ॥ १४ ॥ न संति किं देव गणा मह धयु ॥ परापकारश-

य हस्तचेतसः ॥ निहने सत्ताधकुदुःख पिडितान् कुत स्वका
 धा विपरित बुद्धयः ॥ १५ ॥ तथा वधे स्वाथ परायणो सुरान्
 मे मनोहं दरवं प्रयानिहि ॥ स्वाकाधता याश्रु कुतः पराधता
 विनापराधं ननु सेवया चकिं ॥ १६ ॥ ननो मनो वाक्क नुभिनमे
 विभूजगत् गुरु सोक्षननु महा फलं ॥ भवाधग लेक्ष महातपा-
 पहं सुरा सुर ओशिविहं गतं वितं ॥ १७ ॥ भवन्पुसादे न वराष्ट
 सिधायोः धुपर भननव भक्ति भाजिन ॥ यदस्य मायवफल लभेन
 तः विदगस्तुमा भक्तिविहिन मानसं ॥ १८ ॥ जदा भवट भक्ति
 पराजने जमाः भवेत्तदा दुलतरं ननफलं ॥ महाक्ष पापरित मा-
 नस स्यते नराणा ममात स्मलनं नहि सक्वते ॥ १९ ॥ न चैत कृपाते
 हृदयमु चत्तने पराधता नाथकुतः समुद्धेत् ॥ असार सत्सार
 समुद्र पारगः पुनश्च तत्रे वाहतिष्ठ ते कथं ॥ २० ॥ महाक्ष पाते
 पराभा मिमारद जनस्य दुःखानि शान्तापहारिणी ॥ यथा विगु-
 णि पुगणी साक्षिताः भवेपि दोषस्त पराध कारणा ॥ २१ ॥
 भवाधिसंग नजनाः समुद्धताः नौरा कृपा व्याकुल जानिनी सदा
 ॥ महा सुखा भोधि महार्ग चेतसा प्यहा प्रतिवं पदम् पयत्नत
 ॥ २२ ॥ विधायलोके सन्तुतिं मया शुभं यदाजितं कुराड हिमन्दु
 मन्निर्भ ॥ सर्व सुखापित अजना भवन्त लोको नर धर्म भाराभ
 नभिन ॥ २३ ॥ इति श्रीमदाय्यावलोकिते आश्वीलोक धारस्तोत्रम्

(४७) भगवति बहुरूपे

नमः श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ भगवति बहुरूपे निर्विकल्पे निरंजे
निर्विकल्पे निर्विकल्पे निर्विकल्पे ॥ अखिल निगमपाले
नित्य नित्य भवति श्वरणा कयन युग्मं नो भिद्वीत्तदियं ॥ १ ॥
हसन मुख सशांक ज्योत्सया रात्रिभूतं ददाशत विरोगोद्य-
वक्रमाध्या हिकते अरुणा वदन शोभा वोदयश्चास्माका
न चरणा ॥ २ ॥ गलजठरपदेषु स्वर्ग मर्त्या हिलोकाः सक-
ल भक्त दत्ता व्यामराणि दुमास्तेः गिर्यस्वनिर्वा रक्तशुक्रा
समुद्रा चरणा ॥ ३ ॥ पवन दहन वेगा स्वासपुस्वाय यवः
प्रलय प्रभव कालोत्पीलने गिलनाभ्यां ॥ द्विदशतपनभू-
ता भीमवक्रा रत्नदीपा चरणा ॥ ४ ॥ अनुपम तनूदहं वा-
यमान समज्ञानः निखिल निगमसार दशपदं देवीदिव्यं ॥
त्रिभुवन मखिलं तद्विशितं मेति बुद्धि चरणा ॥ ५ ॥ विभि-
मुख विविधार्ता किंकरा पाद मर्याः सुकल विधृत बुद्धे सर्व-
मार्गा निशुद्धे ॥ किमुत न मोहिमातं वराय गुह्यदेवी वराणा-
॥ ६ ॥ अनुपठति सन्नाप्ते पूजेन भक्ति मानयः नुतिमति
पितनोति पुष्ट भवार्थ बुद्धिः सकल जन जनन्या भक्ति सं-
पत्ति युद्ध करतल वसगास्तासिद्ध धीस्तौ जसन्ति ॥ ७ ॥
इति स्वायं भुषणारो मंजु पी कृतं गुह्य धरोस्तोत्र समाप्तम् ॥

(४८) नमामि वज्र योगिनि

नमः श्री वज्रयोगीय ॥ नमामि वज्रयोगिनी निवासिनी
मनो गिरी ॥ द्वितीय बुद्ध पौलस्त सौतेक मुन शोभिना ॥ १ ॥
कृशानु भाव शीतल कदम्ब कपाल मार्त्तनी ॥ महोत्पलामि-
कर्त्तिका कपाल हस्त धारिणी ॥ २ ॥ तत्रिस्तहश्चेभोजाल
दिगंतार मेहधरी ॥ नरक्षु सिंह तुर्दिक्का वृत्ता विधिस पूजिता ॥
३ ॥ भुजङ्ग भूषणोद्भव कक्षा ध्रुमस्त कंदरा ॥ महोत्पलारि-
कासिवा जगत्रये कपालिका ॥ ४ ॥ स्व मन्त्र काम पूरण स-
मुद्रवा महोत्कथा ॥ प्रशस्त वस्तु वर्द्धिना समस्त किन्तिय दि-
श्वदा ॥ ५ ॥ पठति ये तव मुदा मनो भिका शतं सदा ॥ शु-
वाष्प रान्त चतुर्विधः रमनियोगिनि पूर ॥ ६ ॥ इति गीतममु-
नि कृतं वज्रयोगिनीस्तोत्र समाप्तम् ॥

(४८) जय जय देवा सुर नर सेवा

नमः श्री विद्याधरी देव्यै ॥ जय जय देवा सुर नर सेवाः
चितपद मन्त्रां कुसुम विचित्रा ॥ जय जय सदा कुसु-
ममाला ॥ जय जय ससार जल क्षिपारा ॥ १ ॥ जय जय
हंसा मृतपरवंशा कुलिश करेते करतल रेतेः मुकुट वि-
राजे शिरशि मुनिशो मणिमय कुराडोद्भवसित भुजंगे
॥ २ ॥ जय जय विद्याधरि शुभ कारि उरसि भुजङ्गा-

धिपमरिण माता ॥ जयजय वीरो ननिवरदेहे कठिनट संवे-
 क्षिर शुभ परोठे ॥ २ ॥ जयजय वीरे भरी भवदुःखहारी म-
 रिया पितृ शत्रु पुरजसदंष्ट्रा कनक सुपुष्पा रुरा शतवर्णा
 तदिदयुताभि सुनिरासिता ॥ ४ ॥ जयजय दुर्गे जननि भ-
 तानि जननजरा रुक निभनसपत्ने ॥ षड्विक त्रिशाक्षर म-
 नुमाने पुन्य निमग्नोत्सृजननिदाने ॥ ५ ॥ कुसुमविचि-
 त्रां पठति मयतां नभति शस्थ कृतजन वस्यः निगम सुसा-
 र सकल रहस्वा भवजल धोपारे कृदप वर्गा ॥ ६ ॥ इति
 स्तुत्वा देवी पीरित यथा शक्य गौरे पूराम्य पानर्च यामित
 गुण यशो नाभ सुखादां महा कर्ता महे भगवति सदा त्रैव
 वसनात्तथे न्युक्तां तदा त्वमपि यशो गहनगरे ॥ ७ ॥
 इति श्री स्वायंभुपुराणे वज्रपाद कृतं विद्याधरिदेवीस्तोत्रं
 समाप्तम् ॥ ॥

(४९) कल्प्योदितेन विधिना

नमः श्रीवसुंधाराय ॥ ॥ कल्प्योदितेन विधिना परिप-
 थ्यमाना याधार याविधिधिरत्न सुवरो मर्या ॥ पूरार्करो
 नि भवन सह सेव सर्व तां सर्व लोका जननि पूरामामि भक्त्या
 ॥ १ ॥ त्वं देवी सर्व गुण रत्न महानिधानं सत्त्वार्थकार्य ध-
 नधान्य समृद्धि हेतो ॥ हाराद्ध हार मुक्ता मरिण कल्पवृक्षं त्रै-

लोकनाथ वसुधा वसुधारनामा ॥ २ ॥ उत्सृष्ट रोग भयमृत्यु
 रणौक दोषाद्धारिद्रदुःख वनरोहन मौषधिनः सोभाग्यरूप
 गुण पुष्कल गोत्र वर्णा सर्व ददाति नवपाद युग नमामि ॥ ३ ॥
 यासम्यगुप्यविधिभि परिपथ्य माना लक्ष्मीददानि विपुला
 सुगतोपभोगान् ॥ तान्धारनि सकल सत्त्वहितैक चिन्ताः भक्त्या
 नमामि सततं वसुंधारा नामा ॥ ४ ॥ यासस्मृता सुविर सुस्तु-
 तेरं प्रबुद्धः दारिद्र्य दुःख दूरितं शमते नराणां नांकल्पवृक्ष श-
 दृशि वसुधार संज्ञाः भक्त्या नमामि शिरसा जगतीं हिताय ॥
 ५ ॥ यारत्नपारिण सफलं भवभासयति त्यागा वर्त सदयने
 खर मुदहति ॥ हाराद्ध हार वर कुराडल भूषिताङ्गि माया न्त-
 मामि वसु वृष्टि ददा शरणायां ॥ ६ ॥ रत्नाकर रत्न निधानको-
 शा विचित्र रत्ना प्रति भास वर्ष्वा ॥ रत्नावर्त रत्नमयि निचचा-
 नमामि चार्था वसुधार धारा ॥ ७ ॥ इति श्री वसुधारा देवी
 स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(५०) मर्गेश्वरं प्रकृत भाषणा

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ मर्गेश्वर प्रवर भाषणा मानका
 य संसारिके भवस सत्त्व विहेथा जन ॥ पूरणाति पान विर-
 हा खलु मुक्ति लोके लोके इति न नवपाद युग नमामि ॥ १ ॥
 दुद्रोत निष्ठुर महाकरुणा वशो यो नागेन्द्र वशापहरो अभयं

पदाना ॥ पादतदान रहिता भवता भराशो लोकेश ॥ २ ॥
 कल्याणदग्ध इत भुगत त्वितायुतेन भंगाय सत्त्ववदुःख वि
 नासकारि ॥ अचल चर्य विरता अभिमोक्षभागी लोकेश ॥
 ३ ॥ नावावितं कुल फलामोरिण वचु गौमी दृष्टा करान्नवदो
 नन्नामिह दुष्ट ॥ मोक्षदिगाश विरता दीप भोज भङ्गो लोकेश
 ४ ॥ ५ ॥ दुष्टादिका पुरुष तस्कर कोटिनक्ष मोक्षरक्ष
 य परमाथ निधानचिन् ॥ नृपादि किंच गिरहाट भयनि
 र्ममे लोकेश ॥ ६ ॥ सुजाप शोनि गड वधन काररत्न गो
 वातिक कक्ष गिराति मरीचकारि ॥ उपासनाति हरितामस
 वद्धसातो लोकेश ॥ ७ ॥ दुर्गाठ तोनिध चंचर भंग वा
 को भिनादिनेक कमथालपूरा भित ॥ संपासनाद्य लय नाज्ज
 न भोजहार लोकेश ॥ ८ ॥ पिसाच तान महाभय हूत रेह
 ज्ञाधाने भोम नयना नर भास भाति ॥ वैकाल भोग्य विरताद
 भयंकरो शो लोकेश ॥ ९ ॥ अष्टाङ्ग मार्ग समुपेत्य धानरत्न
 लोकेशरत्नवरभर्म महा प्रसिद्ध ॥ नित्यं सदाष्ट महा भयगोत
 तोपि लोकेश ॥ १० ॥ लोकेश्वरस्य स्तुतिं सी चित्तं तव विना
 वंजेन दान पतये शुभ संपदार्थः ॥ सत्त्वोपकार परमार्थ पदं
 निशालं तस्मै नमस्तु सततं जिनपुत्रकाय ॥ १० ॥ इति शो न
 दाया क्लोकिनेश्वर भट्टारकस्य अष्ट महाभय हरणा हृदयमासि कलने
 स्तव स्तोत्रं समाप्तम् शुभानुदास सुगत दासया संकलने
 आशा सफु-कुरियात उपहार

वस्तुश्रमसर्वार्थ सरस्वती प्रिय सर्वसु WEIGHTS AND MEASURES. श्रयोऽस्तु

INDIAN BAZAAR WEIGHT.	BENGAL BAZAAR WEIGHT	BOMBAY BAZAAR MEASURE	BRITISH AVOIR-DUPOIS WEIGHT
4 Sikas = 1 Tola. 5 Sikas = 1 Kancha. 4 Kanchas or 5 Tolas = 1 Chatak. 4 Chataks = 1 Powah. 4 Powahs = 1 Seer. 5 Seers = 1 Masra. 5 Masras or 40 Seers = 1 Maund.	5 Chataks = 1 Kunka. 3 Kunkas = 1 Khurda. 3 Khurdas = 1 Rek. 3 Reks = 1 Pah. 3 Pahs = 1 Dama. 3 Damas = 1 Kati. 3 Katis = 1 Arbi. 20 Arbis = 1 Brah. 20 Brahs = 1 Kahar. 10 Kahars = 1 Maund. 8 Dams = 1 Maund. 20 Dams = 1 Sak.	36 Dams = 1 Tipari. 8 Tiparis = 1 Seer. 4 Seers = 1 Payil. 16 Payils = 1 Phara. 8 Pharas = 1 Kandi. 25 Pharas = 1 Mada.	16 Drams = 1 Ounce. 16 Ounces = 1 Pound. 14 Pounds = 1 Stone. 3 Stones = 1 Quarter. 4 Quarters = 1 Hundred-weight. 20 Hundred-weights = 1 Ton.
JEWELLER'S WEIGHT.	BENGAL JEWELLER'S MEASURE	BOMBAY MEASURE OF LAND SURFACE	CAPACITY
4 Dhans = 1 Nath. 4 Nathas = 1 Anna. 8 Annas = 1 Dhan. 11 Mashtas or 16 Annas = 1 Tola. 16 Annas = 1 Dhan.	1 Dhan = 1 Ansh. 4 Anshas = 1 Mura. 3 Muras = 1 Brista. 3 Bristas = 1 Hat. 3 Hats = 1 Gaz. 3 Gazes = 1 Dhamu. 2000 Dhamus = 1 Kosh. 4 Koshas = 1 Yojan.	361 Square Cubits = 1 Kathi. 80 Kathis = 1 Bhand. 20 Bhandas = 1 Bigha. 6 Bighas = 1 Rukhi. 20 Rukhis = 1 Chatur.	4 Gills = 1 Pint. 2 Pints = 1 Quart. 4 Quarts = 1 Gallon. 8 Gallons = 1 Peck. 4 Pecks = 1 Bushel. 8 Bushels = 1 Quarter.
INDIAN TIME	BENGAL GRAIN MEASURE	BOMBAY CLOTH MEASURE	BRITISH LINEAL MEASURE
60 Anupal = 1 Vansh. 60 Vanshs = 1 Pal. 60 Pals = 1 Danda. 60 Dandas = 1 Deen. 7 Deens = 1 Hafta. 30 Haftas = 1 Mahana. 30 Mahanas = 1 Vansh.	5 Chataks = 1 Kunka. 3 Kunkas = 1 Khurda. 3 Khurdas = 1 Rek. 3 Reks = 1 Pah. 3 Pahs = 1 Dama. 3 Damas = 1 Kati. 3 Katis = 1 Arbi. 20 Arbis = 1 Brah. 20 Brahs = 1 Kahar. 10 Kahars = 1 Maund. 8 Dams = 1 Maund. 20 Dams = 1 Sak.	8 Anpalas = 1 Tessa. 24 Tesses = 1 Gaz.	12 Inches = 1 Foot. 3 Feet = 1 Yard. 5 1/2 Yards = 1 Fathom. 40 Fathoms = 1 Furlong. 22 Yards = 1 Chain. 10 Chains = 1 Furlong. 8 Furlongs = 1 Mile. 1760 Yards = 1 Mile.
INDIAN LIQUID MEASURE	BENGAL PHYSICIAN'S MEASURE	MADRAS LOCAL MEASURE	BRITISH MONEY TABLE
4 Chataks = 1 Tola. 4 Powahs = 1 Seer. 40 Seers = 1 Maund.	4 Chataks = 1 Kunka. 3 Kunkas = 1 Khurda. 3 Khurdas = 1 Rek. 3 Reks = 1 Pah. 3 Pahs = 1 Dama. 3 Damas = 1 Kati. 3 Katis = 1 Arbi. 20 Arbis = 1 Brah. 20 Brahs = 1 Kahar. 10 Kahars = 1 Maund. 8 Dams = 1 Maund. 20 Dams = 1 Sak.	160 Grains = 1 Tola. 1 Tola = 1 Seer. 1 Seer = 1 Maund. 1 Maund = 1 Kandi. 1 Kandi = 1 Mada.	4 Farthings = 1 Penny. 12 Pence = 1 Shilling. 20 Shillings = 1 Pound. 2 Shillings = 1 Florin. 1 Shilling & 5 Pence = 1 Half-crown.
INDIAN WOOD TABLE	BENGAL CLOTH MEASURE	MADRAS BAZAAR MEASURE	BRITISH MEASURE OF LAND
1 Pica = 1 Line. 12 Lines = 1 Inch. 12 Inches = 1 Foot. 3 Feet = 1 Yard. 5 1/2 Yards = 1 Fathom. 40 Fathoms = 1 Furlong. 22 Yards = 1 Chain. 10 Chains = 1 Furlong. 8 Furlongs = 1 Mile. 1760 Yards = 1 Mile.	4 Chataks = 1 Kunka. 3 Kunkas = 1 Khurda. 3 Khurdas = 1 Rek. 3 Reks = 1 Pah. 3 Pahs = 1 Dama. 3 Damas = 1 Kati. 3 Katis = 1 Arbi. 20 Arbis = 1 Brah. 20 Brahs = 1 Kahar. 10 Kahars = 1 Maund. 8 Dams = 1 Maund. 20 Dams = 1 Sak.	8 Chataks = 1 Tola. 4 Powahs = 1 Seer. 40 Seers = 1 Maund.	144 Sq. Ins. = 1 Sq. Foot. 9 Sq. Feet = 1 Sq. Yd. 1210 Sq. Yds. = 1 Rood. 4 Roods = 1 Acre. 240 Acres = 1 Sq. M.
INDIAN MONEY TABLE	BENGAL MEASURE OF LAND SURFACE	UNITED PROVINCES MEASURE OF LAND	BRITISH TABLE OF TIME
1 Anna = 1 Pice. 12 Annas = 1 Rupee. 1 Rupee = 1 Shilling. 1 Shilling = 1 Penny. 1 Penny = 1 Farthing. 1 Farthing = 1 Halfpenny. 1 Halfpenny = 1 Quarterpenny.	4 Chataks = 1 Kunka. 3 Kunkas = 1 Khurda. 3 Khurdas = 1 Rek. 3 Reks = 1 Pah. 3 Pahs = 1 Dama. 3 Damas = 1 Kati. 3 Katis = 1 Arbi. 20 Arbis = 1 Brah. 20 Brahs = 1 Kahar. 10 Kahars = 1 Maund. 8 Dams = 1 Maund. 20 Dams = 1 Sak.	20 Kartavansi = 1 Bisvansi. 20 Bisvansi = 1 Bisva. 20 Bisvas = 1 Bigha.	60 Seconds = 1 Minute. 60 Minutes = 1 Hour. 24 Hours = 1 Day. 7 Days = 1 Week. 4 Weeks = 1 Month. 12 Months = 1 Year. 365 Days = 1 Year. 366 Days = 1 Leap Year. 52 Weeks = 1 Year.
CEYLON MONEY TABLE	PUNJAB MEASURE OF LAND		
100 Cents = 1 Rupee.	9 Sars = 1 Marla. 20 Marlas = 1 Kanal. 4 Kanals = 1 Bigha. 2 Bighas = 1 Ghuma.		



REG. TRADE MARK

The
**ELEPHANT
EXERCISE BOOK**

64
Pages

No. 4

Price
0-2-6

Subject सामान्य सुगत-दासया संकलन

Name बासा सफ-कुमिसात उपहार !

School }
College }

Class _____

Year _____

T. P. M. Co. Ltd.

THE BIHAR COMMERCIAL AGENCY, MUZAFFARPUR.

(५१) कल्यादिने भवसिंको भाषा सफू-कथियात उपहार !

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ कल्यादिने भवसिंको हि महा प्रभाव
सर्वेश्वर सकल गुणा मय विश्वमूर्ति ॥ कल्यादिकं प्रणमति स-
मस्त कल्यां श्रीलोकनाथ नन पाद युगं नमिह ॥ १ ॥ आकष्ट
केन रक्षा काहिच वर्तमान विश्वांस भूति संकले प्रतिपादये
व ॥ हेम श्वरूप रथकेन समुदारेणा श्रीलोक ॥ २ ॥ प्रसा
त्वमेव हि साव प्रकले प्रसिद्धा विमलुश्चै वैशावमने ररधर्म
केतु ॥ सर्वशक्त शिवमने प्रभारव्ययश्च श्रीलोक ॥ ३ ॥
बोधाधये भवसि वजसूया स्वरूपो योगेश्वरार्ति शम योग
कमार्ग केतु ॥ नटा वरा भव भवार्ति विनाश करि श्रीलोक
॥ ४ ॥ दक्षकवर्णा बहु रूप विशालनेत्र सर्वप्रसुति कृत तीष्ठ
तिक्रान्तु हस्ता ॥ तपप्रपाणि विमलौतमं मित्ररूपं ॥ श्रीलो-
क ॥ ५ ॥ तव बहु गुणवैक समर्चादित ववक्तुं ॥ तदीये
मुखर भावै श्रुयसे त्वं मयान ॥ यदीस वदम शब्द सर्वमेतत्
क्षमस्व स्तुतिरिति कुसुमश्रुति नात्रार्थन स्यात् ॥ ६ ॥
इति श्री नदायाविलो कर्तार भट्टारकस्य लोके भव स्तोत्र

समाप्तम्

(५२) पंकेरु हस्ताय मदां बुजाय

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ पंकेरु हस्ताय मदां बुजाय वंद्युक्त

पुष्पद्युति सुन्दराय ॥ सरोजहस्ता जटाधरायः नमोस्तु तस्मै
करुणा मयाय ॥ १ ॥ कापुन देसोट भवमङ्गलाय जिनेन्द्र
रूपाय नथागताय ॥ सन्सारदुःखारोचि पारनाय नमोस्तु ॥
२ ॥ समस्तभद्राय सुरार्चिताय सुवर्गा ग्रीवाय करुसिनाय ॥
तान्तक करुणाय विनायकाय नमोस्तु ॥ ३ ॥ सोदयशोदाय
दुस्तासनाय चूडामरिण शीर्षधराय नमः ॥ अनन्तरत्ने परि
मराडनाय नमोस्तु ॥ ४ ॥ सत्कं बुकंदाय मनोहराय त्रैलोक्य
संपुजितसर्पदाय ॥ कारुणाय संपुरा हृदां बुजाय नमोस्तु ॥
५ ॥ स्तौत्रं प्रचक्रे चुगमेश्वरपदकं पुरोयार्थतोय छुनराजधी
मान् ॥ येयेहिष्यन्ति नराप्रयत्नान् तैने गता श्री सुरसङ्गरम्ये ॥
६ ॥ इति श्री स्वज्ञस्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(प३) संभाषयं त्रिभुवन

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ संभाषयं त्रिभुवन जिनराजदिपैः
यधोद्धरन्ति जय भिमीदित्य सत्त्व ॥ सोखावति पुरवरे युगवा
गदत्तं त्वं धर्मराज गुनदं सततं नमो हं ॥ १ ॥ यवुद्धजशिवकरं
परमं भयघ्नः दृष्ट्वा करं गुनानेधे सकलाश्च सत्त्वा ॥ पारंगता
विषयपूरा जरा भवाप धी तंधर्म ॥ २ ॥ सत्त्वा गृहाक्ष नम
व्याधिजरात दुस्ता ध्येनोद्धृता मदतयन महाभक्तान् ॥ लब्धा
गृहं परमज्ञान विशा राजं तंधर्म ॥ ३ ॥ यस्मै ददं कुसुम

धूपविलेपनादिनः सारश्रुते विविधधर्म विदेसुचिन्त ॥
प्राप्तफला विबुधराज पदचयुक्तं तंधर्म ॥ ४ ॥ यस्माद्व
लानि परित्यज्य विधुय विद्वान् सोख्याचिन्त सुखभरै परि
तुष्टमानैः ॥ मर्त्यकृता विविधदान शुशील ध्यानं तंधर्म ॥
५ ॥ सुद्धप्रभं जिनकरै परिमिश्रभूतं ज्ञानाद्भवं कर्मजनं
परिपिययस्य ॥ देवो मृत सुगत राजवरो मरेन्द्र तंधर्म ॥ ६ ॥
अस्मिन् सदा सरगा चिन्तमलोत्तभुतं यस्य मदे कलुषदेहम-
नर्थभुतं ॥ त्यक्त्वा तमेजल जलासन नपधवान्स तंधर्म ॥ ७ ॥
सत्त्वोद्धरे सकलदेव विरूपरीन् जलागरो सतत पूजितापा-
दपद्मा ॥ नानाविधै सकलभूत दयार्द्रचित्त तंधर्म ॥ ८ ॥
भुत्वा सुचि परमपुराय जिनस्तवंतं तुष्टा पठन्ति शुद्धविशुद्ध
भावभावां ॥ याथाटफल पदवरं जिनराज भावं तंधर्म ॥ ९ ॥
क्षीमां करोनुहिपदे परिशुद्ध भावे कामंदद सुगतज्ञान सुलब्धहे
तो ॥ सत्त्वाश्चरक्षतुसहभव विघ्नमारात् श्रुत्वा पथन्तु शत्रुना-
स विमर्ददत्ता ॥ १० ॥ इति श्री मदार्यावली किनेधर भट्टार
कस्य तर्मराजस्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(प४) प्रतिसरा अमराद्यै

नमः श्रीप्रतिसराय ॥ ॥ प्रतिसरा अमराद्यै पूजितां त्वां
नतोस्मि ॥ प्रतिपद जनरक्षा कारिणी सर्वकालं ॥ भृगुदहन

समुद्रा पाटदुःखे सुरक्षांः रिपुविषमैय हर्ति राज्यभोग्या
 धिर्कीर्ति ॥ १ ॥ परिवृत निजवर्गां भक्तदत्ता पवर्गां कलि
 तदुरितवर्गां मोक्षलाभैकमार्गां कृतनरसुरसर्गा करि
 तानंगभंगा स्तुतिकृत मुनिगर्गां सर्वरक्षैकसंगां ॥ २ ॥
 पुद्गल सकल विद्ये सर्वलोकेकमान्ये दशकल कृतधन्यपं
 चदेवी वरराये ॥ विषमपदसरराये सर्वदात्मानमस्ये वसि
 नः वरराये दावदग्धे विरम्ये ॥ ३ ॥ सकलजनसुवांश्च
 पूरणा कामधेनु मभिलखित फलाप्ते कल्पवृक्षा शुवल्ली ॥
 असुरसुरनराद्ये वंदितां धेकु युग्मां उरसि ललितनानारत्न
 मालादि युक्ता ॥ ४ ॥ उडुपति शतदिप्तां शरवकुराडा वदातां
 ग्रहभयपरिश्रान्तां वज्रसत्त्वामिकातां ॥ श्वरालललितलोल
 कुराडले संवहंते मुकुट मरीणा शिखाभि काशिकातां नमामि
 ॥ ५ ॥ जनीने सकल दुःखान्ता रिरिगत्वप्सिद्ध सपदिविग
 तरक्षां रक्षामे मातरं च ॥ स करुणा रुदितं मां त्वदया स्वच्छ
 भुनं कृतसरासे निपातां त्वंगतिस्त्वं गतिर्नो ॥ ६ ॥ पठति
 प्रतिमराया स्तोत्रमेतत्सदाया ज्वलनजलविषानां चोरसा-
 दुलकानां ॥ सगदनिधनकानां भीतयो नाशयंते पतिपदम-
 लभत कामुना धैर्यलाभं ॥ ७ ॥ निजपरिगरा युक्ता धर्म
 कामार्थवृद्धा रिपुगरा परिमुक्ता सौख्यमेव प्रभुक्ता ददति

विपुल भोग्य कामदा सर्व दासौ विहित सकल पापं मोक्ष
 मायांतिचाते ॥ ८ ॥ विगलितनयनां वु सा अलिसंविता
 पि स्तुतिमिति प्रचकारे त्रैभवानां जनन्याः भवतु मम तुमा
 तु संपत्तया कृशानौ तनुकुशल सुरक्षा इत्थमेवं सुचित
 ॥ ९ ॥ विपचतुमइ सर्व मादृशकर्मभोग्यं ससुरनरच
 याना भानुमानु दुहानां ॥ कुरुन कुरुन धर्म येन मोक्ष
 सुलभ्यं जठरनिलयवासं मानुपापं कदाचित् ॥ १० ॥
 प्रभवति न करिष्ये कर्म यना दृशानु उदरनरकवासं येन
 दासा वतारं ॥ सतत शुभसुचेना साधयिष्यामि बोधिं
 कृतजगत सुरक्षां येन केवल्य प्राप्ति ॥ ११ ॥ इति स मुदि
 तचेतः कर्मना दिग्धचित्तः प्रतिसर अवतान्मा साधिकामा
 विलंब ॥ अनिष्टमिति वदत्सो निदयतन् स्वकर्म प्रतिभयवि
 षीदिग्धस्तन्धिवानर्भकसन् ॥ १२ ॥ इति श्री भद्रकल्याण
 दत्तोद्धत यसो धरादेवी गर्भस्थित बालरव कृत प्रतिसरा-
 स्तुति समाप्तम् ॥ ॥

(५५) जटाधर सौम्यविशाल
 नमो लोकनाथ ॥ ॥ जटाधर सौम्य विशाल लोचनं सदा
 प्रसन्ना मुखचन्द्रमण्डनं ॥ सुरासुरै वन्दित पादपंकजं ॥
 नमामि नाथ मरीणा पद्मसंभव ॥ १ ॥ सरोजपद्मायतादिव

लोचन कुट्टिस्संशोधन सुद्धलोचन क्रमासृतादं जगदेक
लोचन जटाधरं सोम्य विशाललोचन ॥ २ ॥ हरेन्दु हारा
द्धिमाधिकोज्वर निधृष्टगराडा मललोचन कुराडनं ॥ गर्भ-
ष्टि माला कुल कोटि संकुलं सदा प्रसन्न मुख चन्द्र मण्ड-
लं ॥ ३ ॥ प्रवृद्धधर्म ध्वनि धर्म धानुजं सहश्रवाहुद्धी चतुर
षट् भुजं ॥ खधानुना तुल्य मनन माधिन सुरासुरैर्वदित
पाद पंकज ॥ ४ ॥ उपाय प्रसो दधिमन्त उट्भव त्रिधानु सं-
रक्षणा हेतु संभव ॥ जिनेन्दु भोरि जिन धानु संवभ नमामि
नाथं मरिण पद्म संभव ॥ ५ ॥ पद्मो परिगन नाथं पद्म हस्तं
जटाधरं ॥ आर्या वलोकितेश्वर वन्दे सर्व सत्त्वानुकं पुन ॥
६ ॥ इति श्री मदार्या वलोकितेश्वर भट्टारकस्य बाल शुकि कृ-
तं स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(५६) श्रीवाग्मति अमोघं च
नमो रत्न त्रियाय ॥ ॥ श्रीवाग्मति अमोघं च फलदायिने संग
मे रक्तवर्गा तक्षकं च पुरायतिर्थं नमाम्यहं ॥ १ ॥ पुराय
तिर्थे स्नान कृत्वा दशा कुशल पाप नाशनं ॥ तक्षक तिथसं
तपे रक्षकं लोक नाथक ॥ २ ॥ वाग्मति मारदायिने संग
मे शान्ति तिर्थं स्नान कृत्वा विग्रह पापनाशनं पार्वती ति-
॥ ३ ॥ शान्ति तिर्थे स्नान कृत्वा विग्रह पापनाशनं पार्वती ति-

र्थ संतपे रक्षकं श्री गुरुश्वरी ॥ ४ ॥ वाग्मति मरिणो हि-
नि रुद्र धारा त्रिसंगमे गोरवर्गा शंखपाल शंखनिर्ध
नमामिहं ॥ ५ ॥ शंखनिर्धे स्नान कृत्वा कष्ट रोग पापनास
नं गोपाले ब्राह्मणा तपे रक्षकं शंखनिर्धकं ॥ ६ ॥ वाग्
मति राजमंजरि संगमे राजनीर्धक श्वेतवर्गा स्वरूपं च रा-
जीतिर्धं नमाम्यहं ॥ ७ ॥ राजनिर्धे स्नान कृत्वा राजा प्रा-
प्ति फलं पदं विरूप तिर्थ संतपे सुरूप राज प्राप्ति कं ॥ ८ ॥
केशावति विमलावति संगमे श्री मनोरथ भयंकर कुलिकं च
नमे मनोरथ तिर्थं ॥ ९ ॥ मनोरथ तिर्थ स्नानं मनो वाञ्छा फ-
लपदं ॥ वराह व्याघ्र मृत्युर्धे प्रतिज्ञा पूर्णा तिर्थकं ॥ १० ॥
केशावति भद्रनादि संगमे निर्मल तिर्थ पीतवर्गा उपलान्न
नमामि निर्मल तिर्थं ॥ ११ ॥ निर्मल तिर्थ कृत स्नानं निर्मल ज-
य प्राप्ति कं वज्रपाद तप तिर्थ रक्षक श्री विद्याधरी ॥ १२ ॥
केशावति स्वर्णावति संगमे निधान तिर्थ नील रूपाय द्वय नाग
नमामि निधान तिर्थं ॥ १३ ॥ निधान तिर्थ संस्नानं दारिद्र्य दुः
ख नाशनं दिन चरुदं तपे तिर्थ धनाया फल प्राप्ति कं ॥ १४ ॥
केशावति पापनासिने संगमे स्नान तिर्थक श्वेतवर्गा बाल सुकि
ज्ञान तिर्थं नमाम्यहं ॥ १५ ॥ स्नान तिर्थे स्नान कृत्वा अज्ञान पा-
पनाशनं अज्ञान सोधन राजा सट्ज्ञान फल प्राप्ति कं ॥ १६ ॥

वाग्मनि केशावति संगमे श्रीचिन्तामणि श्वेतवर्णा चरुणा
 य नमे चिन्तामणि तिर्थं ॥ १७ ॥ चिन्तामणि तिर्थ स्नानं
 चिन्तामणि फलपदं कोटिकर्माक्षु तिर्थे पितृलोक मुक्ति
 पदं ॥ १८ ॥ वाग्मनि रत्नावलि संगमे श्री प्रमोदक पीतवर्णा
 पद्मनाभ नमामि प्रमोद तिर्थं ॥ १९ ॥ प्रमोद तिर्थ स्नानं विद्या
 वाक्पितृसंपदं तिर्थे कौत्रिक वाद्यं रक्षक प्रमोद तिर्थ ॥ २० ॥
 वाग्मनि चासुनि संगमे श्री सुलक्षणा श्वेतवर्णा महापद्म नमे
 सुलक्षणा तिर्थ ॥ २१ ॥ सुलक्षणा तिर्थ स्नानं द्वाविंश जल-
 ण पूरा अलक्षणा कुमारतप शुलक्षणा फलपदं ॥ २२ ॥
 वाग्मनि प्रभावति संगमे जय तिर्थकं श्वेतवर्णा कान्तिनाग ज-
 यतिर्थ नमाम्यहं ॥ २३ ॥ जयतिर्थ स्नानं कृत्वा भयनासं जयप-
 दं पालिकाति तपं तिर्थे रक्षकं श्री वसुंधरा ॥ २४ ॥ अनादि
 गतिर्थ स्नानं निर्जोति फल पदं ॥ मणिशिला तिर्थ स्नानं निर्न-
 लजरा प्रतिकं ॥ २५ ॥ गोडावरी तिर्थ स्नानं पुत्राज्ञान फल
 पदं ॥ माता तिर्थ स्नानं कृत्वा माता व्रत सत्सुखं ॥ २६ ॥ नदि
 कृष्ण तिर्थ स्नानं आरोग्य फल प्राप्ति ॥ मत्स्य मुख तिर्थ स्नानं
 रत्नद्रव्य फलपदं ॥ २७ ॥ इन्द्रकिल तिर्थ स्नानं सत्तान वृद्धि प्रा-
 प्ति ॥ लूति तिर्थ स्नानं कृत्वा स्त्री पुरुष फलपदं ॥ २८ ॥ नव
 त्रिङ्ग तिर्थ स्नानं स्वच्छ फल प्राप्ति ॥ काकेश्वर तिर्थ स्नानं

इच्छवन्धु फलपदं ॥ २९ ॥ निचाप तिर्थ संस्तानं तेजवत्त फल
 पदं ॥ वागीश्वर तिर्थ स्नानं वक्त्रसिद्धि फलपदं ॥ ३० ॥
 सहश सुन्दर तिर्थे इच्छा पूर्ण फल पदं ॥ अगस्त्य तिर्थ स्ना-
 नं ध्रुवलोक फलपदं ॥ ३१ ॥ आनन तिर्थ स्नानं ते निष्कटि
 नागराजं ॥ नारा हृदं तिर्थ स्नानं आर्यनारा दर्शनं ॥ ३२ ॥
 वाग्द्वार तिर्थ स्नानं सकल फल प्राप्ति ॥ केशावति मूल
 तिर्थे अन्यत्त उत्तम फलं ॥ ३३ ॥ कान्ति तिर्थ स्नानं कृत्वा
 शुभसं फल प्राप्ति ॥ विश्व तिर्थ महास्तानं सर्व तिर्थ फलं
 पदं ॥ ३४ ॥ मञ्जुशीय स्थापयित्वा कापोर तिर्थ सिद्ध ॥
 द्वारपाल वालसुकि पद्मपाणि नमस्तुते ॥ ३५ ॥ नेपाल
 दादश तिर्थ उपतिर्थ शोभितं ॥ इति ते तिर्थ संस्तानं सर्वत्र
 पापनाशनं ॥ ३६ ॥ इति श्री दादश तिर्थ उपतिर्थ नैमान
 महात्म्य स्तोत्र समाप्तम् ॥

(५७) लोकेश्वर गतस्वामि

नमः श्री वीतरागाय ॥ ॥ लोकेश्वरं जगतस्वामि सुखा
 वति समागतं ॥ पुराय तिर्थे तक्षकादि गरुडादि उधारणं ॥
 १ ॥ चारु गिरि निवासिनं सर्व सत्त्व उधारण ॥ हरिहरि हरि
 वाहं लोकेश्वर नमाम्यहं ॥ २ ॥ मणि तिर्थे मेचिवोधि मणि
 चूड प्रभावकं ॥ श्री वत्साकार समिद्धं वीतरागं नमाम्यहं ॥ ३ ॥

गोकर्ण गगण गङ्गा पितृलोक उच्चारणे पद्म आकार संसि-
द्धं वीतरागं ॥ ४ ॥ कीर्तेश्वर समनाभद्र कुलिक बोधिदायि-
ने ॥ ध्वज आकार संसिद्धं वीतरागं ॥ ५ ॥ कुम्भेश्वर वज्रपाणि
स्व सर्वपाद रक्षकं ॥ कलशाकार संसिद्धं वीतरागं ॥ ६ ॥
गतिेश्वर मञ्जुषा मञ्जुगर्भ उच्चारणे ॥ चामराकार संसिद्धं
वीतरागं ॥ ७ ॥ फरिकाकेश विष्कंभितं ओदियान सिद्धिप-
दं ॥ मन्त्र्य आकार संसिद्धं वीतरागं ॥ ८ ॥ गन्धेश्वर द्विनि-
गर्भ अष्ट सिद्धि परिष्कं ॥ छत्र आकार सिद्धं वीतरागं ॥
९ ॥ विक्रमेश श्रीरवभर्ग शरत् सद्य सुमङ्गल ॥ शंख आ-
कार संसिद्धं वीतरागं ॥ १० ॥ विधतिर्थ पद्मपाणि जल-
कृदा सुसंस्थित ॥ सर्व तिर्थ फलदायि संघ रत्ना यते नमः ॥ १
१ ॥ जेपठति इदं स्तोत्रं पवित्रं पाप नाशनं ॥ इह लोके सुख भुक्-
त्वा परत्रे सुखावतिम् ॥ १२ ॥ इति श्री अष्ट वीतराज स्तोत्र स-
माप्तम् ॥ ॥

(५८) सुवर्ण चूडामणि श्रीरघ्यानं
नमो लोकनाथाय ॥ ॥ सुवर्ण चूडामणि श्रीरघ्यानं मुनि-
राज तिरिहा पछालं मैत्रेयनाथं करुणा वतारं त्वंधर्म राजं स-
ततं नमो हं ॥ १ ॥ भवोद्धन श्री करुणा नयसं ज्ञानोपदे संशु-
क्ताक मिसं ॥ दश भुवैश्वरता जामिसं त्वंधर्म राजं ॥ २ ॥

कुरांडे २ दुवर्ण कुमुदोपभस शहं सरं श्रीकमलाशरो श-
त्रैलोक्य नाथ भुवनेश्वरसं त्वंधर्म राजं ॥ ३ ॥ त्रैधानु-
भुमेश्वर सिद्धरूप संपूर्ण वाक्पथ श्वरसौंदर्य वाग्विंस-
लक्षणा संपूर्ण रूपं त्वंधर्म ॥ ४ ॥ सत्सार सार भक्त कृ-
तानं ज्ञान पज्ञान सुविशुद्ध देह नमामि लोकेश्वर राजमिहं
त्वंधर्म ॥ ५ ॥ अवद वनुरघ्यानं अस्वगजानि त्रयः कृति-
मिति स्तुति सिद्ध मैत्रिनाथं संहेश पद्मगति भवतार सर्वज्ञ-
ज्ञान देश दिविभुवि लचिंतं श्रीलोकनाथं शुरेस ॥ ६ ॥
इति श्री मदार्या वल्लोकिनेश्वर भट्टारकस्य त्रिगुण सागर-
अवलोकितेश्वर स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(५९) चित्तेश्वर प्रभुमनो -

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ चित्तेश्वर प्रभुमनो मणि पञ्चा-
तं चिन्नामणि प्रवर भूषण भूषितांग ॥ संबोधन त्रिगुण-
भुक्करुणा मयोसि श्रीलोकनाथ चरणां भवतो भजे हं ॥ १ ॥
धर्मेश्वर सकल पाप विनाश हेतु सोखावति गती महाजन-
सार्थ वाह ॥ पञ्चालनय प्रतिददास्य भिवाञ्छितार्थ श्रीलोक-
॥ २ ॥ सम्यगुपाय नरकोद्धति शब्द शील क्लेशानुर यशम-
नोत्तम वैद्य राज ॥ नाथो विरचित सिसदा जिनराज मोलि श्री-
लोक ॥ ३ ॥ शान्ति कृत त्रिमल पुष्कलि रोद्रवहि शान्ति

पदित मखां वुज धीर मुनि ॥ बोधि प्रचादन करो प्रतिभाधि
 लोके श्रीलोक ॥ ४ ॥ दुःखापधिपारगमनोत्तम कर्णधा
 र बोद्ध पद परिगधिगंवर सविभर्ता ॥ लोकेश्वर विजयस्य
 जितमार होत्य श्रीलोक ॥ ५ ॥ ध्याना हितो मदनजोदुय-
 मदुःखहारि वेनेयक प्रतिविबोधन विश्वमुनि ॥ पद्योतस्य
 त्रिषु समाहित बोधिसत्व श्रीलोक ॥ ६ ॥ मोहान्धकार नि-
 हितो निष्ठा भामु वागीश्वरो जित निर्धकोद्य ॥ प्रज्ञानिधि
 प्रतिविद दर्शय बोधिपाल श्रीलोक ॥ ७ ॥ मिथ्या कुल प्रीति
 निधि सस्कृति विश्वकर्मा तान प्रभा निर सिनोत्तम धर्मराज ॥
 संयोगिमार्ग वठितं परिरक्ष नांमां श्रीलोक ॥ ८ ॥ स्तुतमणि
 मुनिमण्डप सर्वलोक विदेवं ॥ अहमीप नुति पुष्पां श्रिभारभ्यर्चय
 त्वां ॥ यदीप पदम सुद्धं तत्क्षमस्वन्नार्थं तवगुणा मखिलं वै कस
 मर्थो दिवक्तुं ॥ ९ ॥ तवपद कमलोये भक्ति नमो तमांगा प्रति
 दित मनुमोदात्सपठंति स्तवतनु ॥ १० ॥ त्रिमल भवविमुक्तोक्षे
 तिवर्ग प्रयाताः ॥ शुभगुणा सुरव राजं संलभन्तु प्रमोक्षां ॥ ११ ॥
 इति श्री मदार्या जल्लोकिनेश्वर भट्टारकस्य जयमुनि विरचित
 राजस्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(५५) चित्तेश्वर प्रभु मनो
 नमो लोक नाथाय ॥ ॥ चित्तेश्वर प्रभु मनो मरिण पद्मजानं

चिन्ता मरिण प्रवल भूषण भूषिनाङ्ग ॥ सर्वो धन नृगुरा
 भुक्कहणा मयोसि श्रीलोकनाथ चरणां भवतो भजेहं ॥
 १ ॥ धर्मेश्वर सकल पाप विनास हेतु सोखावनिगतिमेहा
 (६०) आनन्द कराड मनि सुक्ष्म
 नमो लोक नाथाय ॥ ॥ आनन्द कराड मनि सुक्ष्म मनन
 काद्यं मार्तन्द चन्द्र दहनालय मध्यवासं ॥ विस्वाट् भवस्थि
 नि विनास निदान मेकं श्रीलोकनाथ मखिला दिगुरुं नमा
 मि ॥ १ ॥ सत्सार शृष्टि समय दुहिणा स्त्वमेव विधातु स्थि
 तो प्रवलयः पुनमेवरुद्र ॥ कितं क्वामि महिमान मनन
 मुर्त श्रीलोकनाथ मपि विधेहि कृपाकराक्ष ॥ २ ॥ सार-
 स्त्वमेव जगतां जनता पहारि त्रेगुणा भावरहितो गुणाता भिना-
 म ॥ लीलावतातिननुस्तव सांति भान श्रीलोकनाथ भुविमा
 सवता समता ॥ ३ ॥ लावराय मुर्ति मरोवेन्द विशाल नेत्रं
 नीलाभि कुंचित सुकौमल चारु केशं ॥ दत्तावनि विजित
 बाल निसाकराभं श्रीलोकनाथ मनि सुन्दर माश्रयामि ॥ ४ ॥
 रत्नावत शपरि मरिडित चारु गराडं कराक्ष वलं दित मुनिमे
 ल दिव्य हालं ॥ हस्तिवुजा पित महा मरिण कं करातं श्रीलो
 कनाथ मरिणस्यं शरसां प्रयामि ॥ ५ ॥ वक्षस्वतनव महाद्
 भुतचक्र रत्नः ज्योतिष्प्रकासित मनन्य गुणां गुणिय ॥ यामि

वभास्कर रसत्परितो विमानि श्रीलोकनाथ मम चेतसि म
 त्सदास्तु ॥ ६ ॥ देवत्वदीय वपुष खलु मध्य भागं पंचान
 ने ननु निज्जनि हि समुद्रे ॥ द्रुता सुवर्णा तनु सन्निभ सान्न
 सार श्रीलोकनाथ सततं विहस्मरामि ॥ ७ ॥ सार्धं त्रयो बलि
 विराजित नभ्य मध्यं नाभिसत सुजन कल्मषतो पहारि ॥ ता
 नोत्तिसंभलित पुन्य महा रविदं श्रीलोकनाथ मम मन नि
 लित सदास्तां ॥ ८ ॥ रभा करिन्दु कर कोमल चारु बंचन्य
 दृतां वरीवृत मसेस गुराण ऊर्मध्यं ॥ ऊरु द्वयं तव सुरेश्वर स
 र्वतोपि श्रीलोकनाथ मम मङ्गल माननोनु ॥ ९ ॥ जानु द्वयं
 तव सुवर्ण नभ्यं तथैव मोहान्धकार दिवसा विष विव कल्पं ॥
 भक्तानुत्तरा फलदं रत्नित सिसं पं श्रीलोकनाथ मम दुःखत
 रोधुनोनु ॥ १० ॥ पादां वुजं सुरनरा सुरनाग यक्षा रक्षाधिराज
 रवमोत्ति मरिा प्रभाभि ॥ उद्धो धित सुजन संगति दान शीलं श्री
 लोकनाथ तद दं जयदं यजामि ॥ ११ ॥ प्रातर्भजामि भवभिति
 विभंगहेतु भक्तानि भक्ष्य फल दान विशाल बाहु ॥ बालार्क
 कोटि तिभ मद्भुत मादि देवः श्रीलोकनाथ मम लघुति मूल
 काशं ॥ १२ ॥ मध्यं हनि प्रवर चराडकर प्रचराडं चिन्ता मारीण
 प्रनिममोत्तमने सुनित्यं ॥ सत्पास्यदं परतरं वपुराद धानं श्री
 लोकनाथ मस्तु नरुतं नमामि ॥ १३ ॥ सायाह्नोपि करुणा

करसंबुजाक्षं ख्यात प्रभाव मरिबले यु जगत्सु सान्ना ॥ स-
 र्वार्थदं दलित भक्त जनाधिभिदं श्रीलोकनाथ मनपुं पुरुषं
 पुरातनं ॥ १४ ॥ जागृं स्वपं स्निभुवने सतर्थे वभुज स्निग्धं
 वजस्तव महाभुत रूपमेतत् ॥ नित्यं स्मरामि शरणा वस
 रेपि चित्ते तस्मै प्रकाश माधि गच्छतु लोकनाथ ॥ १५ ॥ इविरा
 विरहयोगा लोभमोहान्धकार प्रवयति मित बुद्ध्या चिन्तितं
 नाम येवं ॥ चरणा सरोसे जाते भीतिरेवा यसां नदिह सुर
 वीरेश त्राहि मां लोकनाथ ॥ १६ ॥ हरति कलुषजानं स-
 ज्जनानां मनेना दिशतु गुरव ममेतं सर्वदा सर्वतानं ॥ स्फु
 रतु हृदि हरि म प्रह्लाद ममेक भूतं शरतद परमात्म ज्ञान वदं चा
 दिरूपं ॥ १७ ॥ सुरनर दिति जेद्वै रचितं पद पद्मं परम पद
 निधानं किंपुनर्वशा यहं तदपितव गुराणां कीर्तिनासा मनो
 मे न्यजनु नच कदा चि लोकनाथ प्रसिद्ध ॥ १८ ॥ भक्त्या न-
 मोतमागास्तव चरणा तले सच्छिता यत्र देव नागा यक्षा मुनि
 द्वा दिवित नयवरा भूत वेताल संघा सौम्य उग्रास्तथैव प्र
 मुदित हृदया सज्जनानां समन्ताद्भव्या न्युच्चैः क्रिया सुवदरनु-
 तिमतां सर्वदा लोकनाथ ॥ १९ ॥ आनन्द मुक्ता बलि नाम हं
 हरि हर प्रतिनं स्तव मा चरचिय ॥ तेभ्यो ददा श्रिय मेवः जन्म
 निमोक्षां परत्रे पिबनाथः ॥ २० ॥ इति श्री हरि हर विरचितं श्री-

लोकनाथस्य आनन्द मुक्तावलि तव स्तोत्र समाप्तम् ॥

(६१) सौवर्गा नागेन्द्र मनुष्य सत्त्वे

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ सौवर्गा नागेन्द्र मनुष्य सत्त्वे त्वंचैत्र
के नित्य सर्जनाय ॥ शाल्वा दिवात्यं पुनिगं प्रदत्तः तन्तोमि
नोकिंभर पादपद्मं ॥ १ ॥ सहस्र सताद वर प्रदत्तं त्रिसत्रय
शब्द महासुखार्थे ॥ वैमाध वेसे वन पूजनायः तन्तामि ॥ २ ॥
गुल्का वधाने स्वल्प नन्दनिपा दुःखारविं पारग नोभिसत्त्व ॥ म
हानुसंशा विधनेन दत्तः तन्तोमि ॥ ३ ॥ भक्त्या शुचौ प्रार्थ
न वन्दनाय सात्कोष संजात कहेन दत्त ॥ सुस्वायता सालयका
मराजः तन्तामि ॥ ४ ॥ शुद्धाने भाषितर नारदो वै सभावे
सम्पहतो नित्य ॥ प्रारणार्थं मेवं कृत कर्मनिर्यं तन्तोमि ॥
५ ॥ राताय नात्यष्टि सहस्रजिव देवालयो हासित नोषिनेहि ॥
नभस्कोनेत्य तवाश्रयणाः तन्तोमि ॥ ६ ॥ मेहेन्द्र तांता ममरत्न
पानाः होरात्र गाथा गुणा भाननिय ॥ यताश्चिने धर्म दशार्थिय
तन्तामि ॥ ७ ॥ उज्ज्वलितो नपर पद्म राग स्तेनो पचा रेतम पु
ष्यतीय ॥ सवाहुले चैत्र मनो हरेयः तन्तामि ॥ ८ ॥ देवालय
प्रामुदिता सुवासः सांजोलिका सर्जक धुपनिय ॥ संताप नेस्व कु
लकोटि दोषः तन्तोमि ॥ ९ ॥ संप्राप्यके प्रज्वलिता च दीपं
त्रीकायं शास्त्रौ न शुद्धकनिय ॥ सचक्र वर्तिनसु ध्यकनीय ॥

सचक्र वर्तिनसु राज्य भूजीः तन्तोमि ॥ १० ॥ वैमाद्य केच
द्युमणि प्रभादो प्रमेय शो शोभिन दिव्ययोग ॥ संयुक्त गध
तिलक प्रदीपः तन्तोमि ॥ ११ ॥ नपस्य केश त्वशुखोद
यश्चः नेवेद्य पञ्चमृत दीपनीय ॥ सहस्रकन्या नृपनि प्रदाता
तन्तोमि ॥ १२ ॥ चणो चरकिं तव वेरानीयं कौभावनीयं
स्वल्प रूप दर्श ॥ स्वचिन्त सर्वोद्धान कामहेतो स्तस्माद्विगंभी-
र्यवलोक नाथ ॥ १३ ॥ मासाष्टमि पवनेवार नीत्वं ये पूजयं
नि तव पूष्य केन ॥ सदार्थ मोक्षा श्रय सोफलैः नेनेवल्लो-
कस्तु शुभं भवतु ॥ १४ ॥ वैदादश मासि फल प्रसप्ता
मुपोष धादु धृत रोनुभावा ॥ लिलासुवज्रा हृमिदं प्रवक्ष
शीवोभिसत्त्व स्प गुणोत्तमस्य ॥ १५ ॥ इति श्रीमदाचार्य
वल्लोकिनेश्वर भट्टारकस्य द्वादश मासि फलानुसंसास्तो
त्र समाप्तम् ॥ ॥

(६२) जापा कुसुम संकासं

नमो तव ग्रहाय ॥ ॥ जपा कुसुम संकासं वगस्थेयेय नहाय
नि ॥ सर्वपाप विघ्न हरं प्रणमामि दिवाकरम् ॥ ॥ ॥ दीप
शंख नुसारं भं क्षिरो दोषा वसं भवम् ॥ नमामि शशिनं देव
शंभो मकुट भूषण ॥ सो ॥ धरणी गर्भ संभूतं विद्युते
जस्मम प्रभं ॥ कुमारं शक्ति हस्तं अङ्गारं प्रणमामि ॥

॥ मं० ॥ प्रियङ्गु कलिका रूपं रूपैर्नां प्रतिमं पुद्गलं ॥
 सोम्या सर्वगुणो वं नमामि शशिनी शुभं ॥ वु० ॥
 देवानाञ्च ऋषिनाञ्च गुरुकाञ्च नमस्त्वयि ॥ वृ० मुनि
 क्रिन्ते केदां प्रणमामि नृहस्पति ॥ वृ० ॥ हिमकुण्डमु
 नात्ताभं दैत्यानां परमं गुरु सर्व शास्त्र प्रवक्ता च भार्गव
 प्रणमाम्यहं ॥ शु० ॥ नीलोत्तम समाभासं रविपुत्र महाग्रहं ॥
 द्यावाभोगङ्ग संभूतं वन्दे भक्त्या शनिश्चरं ॥ श० ॥ अर्द्धकाय
 महावीर्य चन्द्रादित्य प्रमोदकं ॥ सिहिकोदरसंज्ञात राहु
 नित्यनामाम्यहं ॥ रा० ॥ प्रारुधर्म संकासं तारका ग्रह
 मदनम् ॥ रोद्रं रोद्रात्मकं घोरं त्वं केतुं प्रणमाम्यहं ॥ के० ॥
 शुभांभोर हसंकासं सर्व देव नमस्कृतं सविर्जन्मकाले बु
 जन्मदेव नमाम्यहम् ॥ ज० ॥ व्यासो नात्तं निदं स्तोत्रं प्रतरुत
 गाय यपथेत् ॥ दिवा वा यदिव रात्रौ सिद्धितरण नमं सयत् ॥
 ११ ॥ नरनारि नृपानाञ्च भय दुःख स्वप्न नासनः ऐश्वर्यम
 तुलं तस्मां आरुण्य पुष्टि वन्दनम् ॥ १२ ॥ दस्य कीर्त्ती घमो वा
 पि यच्चाने रोग पि दिवा ॥ तसंच विरयं यान्ति व्यासो वृतेन
 संसय ॥ १३ ॥ इति श्री नवग्रहस्तोत्र समाप्तम् ॥ शुभम्

(६३) अमित रुचि शिरः

ॐ नमो लोकनाथाय ॥ ॥ अमित रुचि शिरः पत्रपत्रा

यताक्षं दुरितकृत विलाश मोहमाया विनाश ॥ करधन
 कनकाक्षं लोकपालो रुद्राक्ष प्रणामित शिरसाह नमि
 तं लोकनाथ ॥ १ ॥ भरुणा वरुण शोभा बोधिविज्ञानहेतुं
 मीशामयैकुट सत्पारका बोधिस्यतुः मनसिजकृतनासं बो
 धिसत्त्वा दिकेतुः प्रणामित ॥ २ ॥ सरसिजकृतवासं दूरकं
 दर्पपासं सुरनर दनुजासं पूर्णचन्द्र प्रकाशं शुक्ति
 जन विलाशं कोटि सूर्ये प्रभाशं प्रणामित ॥ ३ ॥ उरसि
 विहितनागं मोचिता शेषरागं भवभक्त धिविभागं मोक्ष
 सौरये कमार्गं ॥ प्रतीपितकनकागं बोधिवो वैकरागं प्रणामित ॥ ४ ॥
 जिनवर सुतराज मोक्तिमाला विराज सुत
 लित फणिराज किरीटार्चा भिलाज ॥ प्रमुदित वलिरा
 जः पालिता मन्थराज प्रणामित ॥ ५ ॥ धृतमधुकररूपं
 क्षुब्धपासार्त्तकुपं सुचरित हररूपं सिंहनादत्तभूषं
 अगुर सुरभिधूपं धारिता शेषरूपं प्रणामित ॥ ६ ॥
 त्रिविध विधूतपापं मेहरत्वं नृपापं प्रतिदिनमिति जापं
 श्वक्ते विलापं निरय भयकत्तापं भदयो ज्ञानचापं अव
 हितकृत विलापं मां कृपा राजपापं ॥ ७ ॥ विहि शुभजना
 नां मुक्तिर्षोद्यमानां विगलित कलुषानां भक्ति पूजार्ता
 नां वर कुशल समुहं संप्रमोदे स्वभक्त्या अवहि ॥ ८ ॥

२०
 १५
 १०
 ५
 ०
 प्रवल सुगतरत्नं धर्मकाय ससंघ सरणमिह व्रजामि का-
 रिता नगभगं प्रमुदिन मनसाहं वोधिनाभे कथेन अवहि०
 ॥ ८ ॥ दशकल कृतसिद्धि संदधे बुद्ध बोधि जनम सरणा भीतो
 मारकासां भिनिनो मनसि मनिवृत्ते पूरया ज्ञानचित्तेः अ-
 वहि० ॥ १० ॥ श्रीलोकनाथं चरणां व्रज भक्तिपद्यं प्रियूषनं
 चरितानविस्तराद्यं सप्ता विधार्चन युताद्रसानि हृद्यं
 सोरवावति गमरा मार्गकमस्तु संघ ॥ ११ ॥ स्तुत्वा पद्म
 धरं गुरु मुनिवरं सर्वार्थ सिद्धि पदं पुराय यत्समुपार्जित वृ-
 जनुतत् पुरायत सोरवावति श्रीलोकेश्वर पादपंकज रसोद्भा-
 से कहवोदितां लोक केशवत्नं सुदुजर्य वत्नं जित्वा प्रमुक्ता
 सन्त ॥ १२ ॥ इति श्री मराम्या वलोकितेश्वर भक्तारकल्प स-
 प्रविधानुत्तर युता स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(६४) मोक्षपद्म भवा पद्म

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ मोक्षपद्म भवा पद्म पद्मपाणि
 भयं हर चक्रपाणि भय मोख्य पद्मपाणि नमोस्तुते ॥ १ ॥
 दानसौम्य प्रभादान पद्म शोम्य पनानकं ॥ सुरआस्य देव
 पद्म पद्मपाणि ॥ २ ॥ पानिजात पभाजात रक्तवर्ण
 पारिजात ॥ दिन भुसभन देवः पद्मपाणि ॥ ३ ॥ वीश्वी
 नारायण देव लोके श्वर देव मुनि ॥ पद्मवर्ण लोके श्वर

पद्मपाणि ॥ ४ ॥ कर्ण या मराडल भीम चन्द्र मराडलनं
 देव ॥ सान्निपुरि प्रभा यज्ञो पद्मपाणि ॥ ५ ॥ भज ह
 त्रपता कीद सांन भार सना पद्म ॥ नीलवर्ण सम देवः प-
 द्मपाणि ॥ ६ ॥ पद्मकन पंचकर्ण शुरमान नवन्तर ॥
 पंचवर्ण देव कन्याः पद्मपाणि ॥ ७ ॥ लोकपति देवमू-
 र्ति सावमान भिना देव ॥ अमिताभ किलो सूर्यः पद्मपा-
 ॥ ८ ॥ इति श्री मराम्या वलोकितेश्वर भक्तारकल्प स-
 प्रभास्तव स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(६५) ॐ कारं परमं बीजं

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ ॐ कारं परमं बीजं सर्व रक्षा
 करं पदं ॥ वकारा कार संयोगा ॐ काराय नमो नमः ॥ १ ॥
 मकारं मानसं बीजं महा सत्व वर पदा ॥ महारक्षा कर्तृ-
 णां मकाराय नमो नमः ॥ २ ॥ शिकारं शीयते मोक्षं नि-
 त्यानित्य विचारनात् ॥ निःशेष पापनासाय शिकाराय
 नमो नमः ॥ ३ ॥ यकारं पंकजा कारं परमार्थ पद परं ॥
 परमं पदमं पुरायं यकाराय नमो नमः ॥ ४ ॥ झकारं मेराणं
 बुद्धे मेरु मराडल संस्थिते ॥ महामय पुराण शायं झका-
 राय नमो नमः ॥ ५ ॥ हंकारं सिद्धिदातारं हं हंकाराग्नी-
 नासक ॥ हुयते होम सद्यै र्यत् हुंकाराय नमो नमः ॥ ६ ॥

यत्र क्षर महाबीज मन्त्र राजान्मकं शुभं ॥ षट्भिस्तथा
 राद्यं नमामि षट्क्षरिं ॥ ७ ॥ षट्पारमिताश्च षडायन
 न संशकं ॥ समापन्नं स्वधानुष्टं नमामि तं षट्क्षरिं ॥ ८ ॥
 षट्कामावचराद्येस्तु स्वधानुष्टं नमस्कृतं ॥ षट्इन्द्रियस
 माधाय नमामि तं षट्क्षरिं ॥ ९ ॥ पंकजासन मासीन यथा
 पर्यङ्क मुत्तमं ॥ सरदिन्दु समानाभं नमामि तं षट्क्षरिं ॥ १० ॥
 पदक्षिणेन हस्तेन जपमाला वरं विभू ॥ वामेनां ज माधाय
 नमामि तं षट्क्षरिं ॥ ११ ॥ हृदि कृताञ्जलि पुनं विभारां जन
 दर्शने ॥ दाम्प्याकाराभ्यासनतं नमामि तं षट्क्षरिं ॥ १२ ॥
 असंख्य याभसंबुद्धा शिखरा जितमस्तकं ॥ लोकावने महा
 दक्षं नमामि तं षट्क्षरिं ॥ १३ ॥ सार्या भुक्ती नाराभ्यां वा
 म दक्षिण तोपूना ॥ करुणा मय देवे सं नमामि तं षट्क्षरिं ॥ १४ ॥
 लोकेश्वरं विश्वरूपं भुक्ति मुक्ति प्रदायकं ॥ विध्यर्थनेस्वो पु
 न्यं नमामि तं षट्क्षरिं ॥ १५ ॥ षट्क्षरिष्टं वंयत्पीयुषानन्द
 निर्मिता ॥ सपठति मुदा भक्ता तेषां युक्तां सुरवावतिं ॥ १६ ॥
 इति श्री षट्क्षरि लोकेश्वर महारक्त्य षट्क्षरि स्तोत्र समाप्तम्

(६६) त्वन्मोषध वर्यशा -

तमो लोकनाथाय ॥ ॥ त्वन्मोषध वर्यशा वलिनो वय
 वामम ॥ निवेद्याः श्रीमहे सान मायोजय स्ववाहने ॥ १ ॥

सहस्रवदनः शेषः सद्योषं वक्तु मिश्वरं ॥ ननु सप्त मुखसाहं
 मौने नक्ति गरिचसि ॥ २ ॥ यो सो मां दर्शिताक्षे मयनवीह
 निवृत्तः ॥ महिमस्तव नासक्तो विष्णु नृषिणा मुपाययो ॥ ३ ॥
 ॥ स्वापराधीने मद्बोह काय वाक्चित्त संचिन्तः ॥ क्षमस्व ज
 पनोनाथ नाथवाहं स्मि सां प्रतः ॥ ४ ॥ मेन यस्तुष्ट आयासि
 रक्षा भुङ्क्षु यक्षिणः ॥ सर्वस्वरक्षकस्यामः अहो महमनोह
 ॥ ५ ॥ कायन मनसा वाचा परांमेन न्यअस्तु मे ॥ नजो
 नाम्यर्चन विधिः नच विधिः कृताञ्जलि ॥ ६ ॥ इति श्री स्वा
 यंभु पुराणे नक्षकनाग कृतं श्रीलोकेश्वर स्तोत्र समाप्तम् ॥

(६७) सुरवावति समागतं

तमो गौकरो श्वराय ॥ ॥ सुरवावतिसमागतं सा भक्तव
 त्सल पत्ने ॥ स्वयंभुवं महाविभूः नमामि बोधिमतकं ॥ १ ॥
 सरश्चति वतितैठ समुज्ज्वलत्सुनिंगक ॥ अनन्त गंज संशकं
 वलोकिने भराजया ॥ २ ॥ समस्त पाप स्वराडनं सुरादि लो
 क वन्दनं ॥ शशांक चुडमराडनं विलोपितांग वन्दनं ॥ ३ ॥
 अनादि बुद्ध नन्दनं विषादि कुष्ठ भन्दनं ॥ कृताभिषेक रंज
 नं नमामि भक्तनन्दनं ॥ ४ ॥ वराक्ष पाणि पंकजं विभीत
 काम पंकजं ॥ पुगादितार्ध रंकजं विनासिताय शंकजं ॥
 ५ ॥ सुवर्गासारसासनं स्त्रादिशावभाषणां ॥ नमामि तं म-

इश्वरं महेश विश्वा कर्चिर्न ॥ ६ ॥ वठंनि पंचचामरं विष
धरो विनिर्मितं ॥ वृषाद्य करिणिकेशरा यतस शुद्धमानस ॥
७ ॥ सपिबलोक सुधारनु सुखावति सुपा सधन ॥ सलोकना
व सर्वपद्मिनि सुमाद सेवकां ॥ ८ ॥ प्रदक्षिणं ससाचनं
विजपुरं समा विज्ञात् ॥ मदा वलोकितेश्वरं भजे नैपालयन्प
र्जा ॥ ९ ॥ श्री स्वायंभुपुराणे गोकर्ण कृतं गोकर्णेश्वरस्तो
त्र समाप्तम् ॥ ॥

(६८) नौमि समन्त सुभद्रं रुद्र

नमः किलेश्वराय ॥ ॥ नौमि समन्त सुभद्रं रुद्र मुखामर
नंदं ॥ हृद्य पदा वनिगम्यं नौमि पदां वुज युग्मं ॥ १ ॥ मा
ह्वरक्षरा पातं उत्पल संदृशपानं ॥ दुःख महा नल कक्षं लोक
सदो वनदक्षं ॥ २ ॥ मंजु कुमार वरिष्ठं सर्वशुभादिगर्जरिष्ठं ॥
गङ्गाति लोक हृदिस्थं कारुणा पूर्णजविष्ठं ॥ ३ ॥ बुद्ध विरान्ति
तशीर्षं शुद्ध समस्त हृषीकं ॥ चारु गिरौ कृतवासं कीलनानि
विलाशं ॥ ४ ॥ पारमिता नवपार धमविहार सुमारं ॥ दुकृत
पर्वतदानं निजित दुज्जपमानं ॥ ५ ॥ ज्ञान प्रकाशन सुखं सा
मर वादिन तुर्यं ॥ सर्वजगदिन पुण्यं दुःख मिमोचन सूर्यं ॥
६ ॥ लक्षणा सुन्दर गान्धर्वी च न सन्तारा शास्त्रं ॥ मङ्गल व
र्ण सुपात्रं विष्णु विश रण दार्ढ्यं ॥ ७ ॥ काय बचो गीतपापं

नासय मल्लतिनापं ॥ सन्ध विवादिन तत्त्वं नन्वदृते सुक्रीग
त्वं ॥ ८ ॥ त्वं प्रणऽस्मि मुनिद्वं नौमि सु भुक्त फरिणद्वं ॥
यस्तु निमाचर तन्मांतस्य समन्त सुभद्रं ॥ ९ ॥ नुव्यानि दास्य
निचार्थं यास्यति यतन बुद्ध ॥ सौमिधि भाग पिबुद्धे पुनरावृ
त्तिनिवृत्तं ॥ १० ॥ इति श्री स्वायंभुपुराणे कुलिकनाग क
र्त किलेश्वरस्तोत्रं समाप्तम् ॥ ॥

(६९) नौमि महा वज्रधरं वादिघराठ

नमः श्री कुंभ्येश्वर वीतरागाय ॥ ॥ नौमि महा वज्रधरं
वादि घराठ वलितं ॥ डमरु शुलो ज्वलितं मालिक भूषो
वृषितं ॥ १ ॥ स्वर्णाकिरिठस्थजिनं भस्म विलपाङ्गवरं ॥
चक्र सुमुद्राक लितं दीपिषू चर्मा वीरितं ॥ २ ॥ कुंजल कृत्या
हृरित भीषणा मुर्त्या निचितं ॥ हास्य विलास्यारसितं पात्र
मुधा सतुपितं ॥ ३ ॥ भक्तजनो शारसिकं स्वच्छ कृताशा
दकं ॥ पाहिसदा त्वं सकलं राग मदा शविकारं ॥ ४ ॥ वज्रवि
लास्या सहित योगिनि जाला वीरितं ॥ भोगिगराणां करणं
योगिजनानां वरणं ॥ ५ ॥ यत्कुलिशं वज्रमयं कोटिश
तं सू शुभेति ॥ रत्नचयं यत्गलितं तपरा मा मिस शरितं
॥ ६ ॥ यत्कर धराठा तिनदौ कंपय देवं भुवनं ॥ मरचमु
त्रा शपदांस्तो प्रणामाणि शसरवं ॥ ७ ॥ यज्जपमालागति-

कां विद्युदिवामौ ज्वलिकां ॥ अष्ट शत यन्धिनिकारुतं
प्रणामाभिः सरवं ॥ ८ ॥ यन्मुबुताक्षो भ्याजिनंस्तत्रम
पारससृजे ॥ सर्पश साराचलं नैतं प्रणामाभिः सरवं ॥ ९
॥ स्तोत्र मिदयः पठिता योगवर सं भविता ॥ दुर्गम मोक्षं
गमिता काम नवा प्याशु सुभिः ॥ १० ॥ इति श्री कुम्भेश्वर
दीनराग स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(७०) व्याल विभूषित बाल मृगाङ्ग
नमः श्री परशिकेश्वराय ॥ ॥ व्याल विभूषित बाल मृगाङ्ग
विश्राम मण्डित भाल पदेहा ॥ शारद पार्वणा चन्द्र प्रकाशः
तं प्रणामाभिः सदा फलिकेशं ॥ १ ॥ हातक पंकज सुन्दर
स्तं दान समुद्यमलं वित हस्तं ॥ नैभव जापित नाम प्रसस्तं
तं प्रणामाभिः शदा फलिकेशं ॥ २ ॥ प्रेषित सौगत भक्त स
मस्तं रक्तम समुज्ज्वल सारस सस्थं ॥ विद्युदिवोजोत्तम
र गजस्थं तं प्रणामाभिः ॥ ३ ॥ सर्व निवारण विष्कंभि संज्ञ
पंचांगिनेन्दु किरित विराजं ॥ वाञ्छित द्विपद करुणा द्यां तं प्रण
माभिः ॥ ४ ॥ दुःख महोदधि तारण सेतु दुर्गति नौचन सुगति
हेतु ॥ करी सुकुराडन प्रज्वल रत्नं तं प्रणामाभिः ॥ ५ ॥ यः प
ठति श्वर पंच पदं स्वयं क सिद्धि मवाप्य महेहा ॥ जन्म जरा
रुज मृत्यु मर्त्योर्मि तारिणिता भव तोपयो धानं ॥ ६ ॥ इति श्री

आदि शानाचार्य कृतं परशिकेश्वर स्तोत्रं समाप्तम् ॥ ० ॥

(७१) गजवन्दनी मुसर
श्री गणपति देवराय ॥ ॥ गजवन्दनी मुसर गहन मुसर
नाय दुर्मिभारितं सर्व विघ्न हरण देव नमोस्तुते ॥ १ ॥
कुजोत्तम वदन चतुर भुज अक्षमाल धरा जिता ॥ स्वतवर्णा
शर त्रिभी नौचन गणपति देव नमोस्तुते ॥ २ ॥ इति गण
पति गीत ॥ ॥

(७२) रार पंदु मन्त्रव कर्णक
राग वसन्त ॥ ताल माध ॥ ॥ रार पंदु मन्त्रव कर्णक कम
न विराज सतकोटि रवि स दह विराजं ॥ श्रीजय नमः लोक
नाथं स्थानाधनु ॥ १ ॥ तव नन्द रुचि हस्त मत्त नक्षत्र राज
तव ध्या दहा वास फुल्ल सुभिक्ष सुख राजं ॥ २ ॥ तव सुख
दर्शन पाप नाशनं तव नाम सुमरन सुखावति गमनम् ॥ ३ ॥
त्वय सुति भुव जन कृत प्रतिनत्रणी जित गुण वज शान अपार
॥ ४ ॥ रसुरा असुर जन प्रज इक्ष पादा विरि विरिजी हरि
हर इन्द्र भुगुणं विनाहा ॥ ५ ॥ ॥

(७३) चन्द्र नपति मन्त्र कर्पूर
राग ललित ॥ ताल माध ॥ ॥ चन्द्र नपति मन्त्र कर्पूर कुंकुम
नाभिसिरादिसंज्ञना कुधवरन चम्यक केतकि पञ्चपहारं

जितां ॥ १ ॥ देव श्रीलोकेश्वर पूजित प्रसादनं मनोवाञ्छिता
सिद्धिदेहि प्रसन्नं ॥ २ ॥ ॥

(७४) प्रस्फुल्ल पुष्प हृद्

राग नलिन ॥ ताल ॥ ॥ प्रस्फुल्ल पुष्प हृद् मान भारि
बूबालि गोरि रसलोचन श्री विनीत चरणा वासो गृहानो प्र
भासो विला सुर सौन्दर्यनि प्रतिसो ॥ १ ॥ ॥

(७५) वद्धराने यार रिभु

राग वसन्त ॥ ताल माध ॥ ॥ वद्धराने यार रिभु वसुसागर सं
जुत मार्ग मास सित पक्षा अष्टमि तिथि र्जुन मुगसिर वि
कह अनन्त कुम्ह सिस विष तजा मितर विवोर श्रीमद्विद्व
नाथ प्रति ह्वन चूडामणि सुवर्ण पत्र ललित स कम्पित
कन्दर्पक निता विद्याले सानि गरा धिमति प्रजा प्रतिपाल
श्रीनिवास नल्ल प्रिति जगत प्रख्यात मृगावनि देवी प्रति पु
ष्याति नाथो यथा दृष्ट तथा कृपा भक्षरा पुस विरिंचि
नारयण पान्थ्यादि नृप गत ॥ ॥

(७६) नेपाल वनसर भुज सागर

राग वसन्त ॥ ताल माध ॥ ॥ नेपाल वनसर भुज सा
गर नुरगे माधव मास शित विरिञ्ची तिथि निह सल
वनां सुरवर्ण निमित्त दानि ह्वन कुशुम माला रहना ॥ १ ॥

दान प्रति शील निता पुरी नृप श्री सिद्धि नर सिंह मन्त्र
देव ॥ २ ॥ षट्गति सन्सार द्वारणा दाना यद् यत्कजे युगे
नोमि शिरसा श्री बुद्ध लोकेश्वर पूजित सुमङ्गलं ॥ ॥

(७७)

राग मलार ॥ ताल २ ॥ ॥ रवि सत सम मुख तेज विराज
अन्बुजलोचन सम शोभित तेज श्री पर मेधर अष्टरूप ॥ १ ॥
कर धर पदमे सुन्दर तेज धन्य मदि करुणा मयजे नरका दु
धर मोक्ष पदसाले रिपु ग्रहान सुज उधारि ॥ ॥ ॥

(७८)

राग नाटक ॥ ताल दुर्जमान ॥ ॥ नेपाल मराडन कमल
संयुक्त अनुपम कमल अभय प्रदाता ॥ नमामि श्रीलोक
नाथ विभु वनेश्वरं ॥ १ ॥ दहिन कमल सम वज्र प्रदाता
॥ वाम कमल जुन अभय प्रदाता ॥ २ ॥ रत्न मणि कुन्दल
कर्ण स्वभाव ॥ नानारत्न मणि हेर वज्र साहिता ॥ ३ ॥
मणि मराडन प्रजा प्रतिपाल ॥ श्री योग नरेन्द्र मन्त्र देव स-
हिता ॥ ४ ॥ ॥

(७९) अरुणा सम विशाल

राग ॥ ॥ ताल रूप ॥ ॥ अरुणा सम विशाल नयन
जगत उधारण निर्मल देह श्रीलोकेश्वर नोमि पाद पद्म ॥ १ ॥

पद्मगतिनारण भय दुःख हरणं कारुणि मानसं श्रीगुणेश्वर ॥

॥ ॥

(८०) वत्सरनेपाल मुनिदुर्गा

राग नारक ॥ ताल नृप ॥ ॥ वत्सरनेपाल मुनिदुर्गा सा
गर संयुता मधुमास शुक्रपक्षे दशमि तिथौ विरचित श्रीनिवा
स मन्त्र पुनर्गतिता ॥ १ ॥ स्वकारणा विक्षयिण मार समाप
त लोकनाथ इत्यं देवता स्वामि प्रभु कामुना ॥ २ ॥ ॥

(८१) अम्बुजतं नवादि

राग सत्तार ॥ ताल नृप ॥ ॥ अम्बुजतं नवादि शुरुभिलतो
न वरिता पुनित्या श्रीगुणेश्वर ॥ १ ॥ द्वादश वत्सर अना
वदिन मोन्दुता विजय श्रीललितापुरि रथचक्रमजान्नाश्रीन
पति पात्र परिजन भगवति मानसा ॥ २ ॥ विविधिवहु उपरा
ग छत्र चज परिजितां पुनित्या श्रीगुणेश्वर ॥ ३ ॥
तुरङ्ग मस्तक विरवह रागं शोण प्रभास विन स्वत संग्राम भू
मौ विचरं पुनर्गति नारक मुक्तिनि कायपयेन ॥ ॥ ॥

(८२) कमलपाणी परमेश्वर

राग अनित ॥ ताल ॥ ॥ कमलपाणी परमेश्वर देवति
देव गरा पुजितं ॥ १ ॥ आहा भगत नाथ गनेश्वरा चरणा दर्श
न पापनाशन आहा भगत नाथ करुणेश्वर ॥ २ ॥ ॥

(८३) लोकनाथ जगदानन्द

राग अनित ॥ ताल ॥ ॥ लोकनाथ जगदानन्द मु-
रुनि ॥ शेरवादि निहित भासुरगीते ॥ १ ॥ करुणा
मृतप भीलकेश्वर शिरमा मन्त्र भारि पाद पम ॥ २ ॥
कनकाभ ओकारि कस्तूरेश्वर कमलायरा नक्षप कुरु
इदेहा ॥ ३ ॥ नागाजान निरतट विद सिता लोकनाथ
सहचके सहस्तं ॥ ४ ॥ धानलक्षक अनुपम फलदेवा
पयमे सुभ मेहि गोविपदं ॥ ५ ॥ ॥

(८४) कमलमणि संभव

राग ॥ ताल ॥ ॥ कमलमणि संभव
जगत हितार्थ भवसिन्धु तारणा दैसि भर्म ॥ १ ॥ पृथमा
मे दधानय श्रीलोकेश्वर निर्मल निषिरलक्षणा मुसि अ-
मिताभ कुल मृत सभौलि भरं ॥ २ ॥ सुरा सुर नर सीहित
ज्योति प्रभास्व नारक दानव बोधिप्रदायकं ॥ ३ ॥ मोमि
निराज पाणी भयहरणं चरणा पंकज युग्म शिरे नमामि
॥ ४ ॥ अनित पल्लव महिपति श्रीनिवास अक्षतीहृष
तग मधुमास रत्न श्रीरविता ॥ ५ ॥ ॥

(८५) आदित्य मण्डल

राग मन्त्रार ॥ ताल ॥ ॥ आदित्य मण्डल

लासन वा अपम कमल निसतुन्य ॥ १ ॥ नमामि श्रीलोकना
 व गोविन्दन दीहन कमलन नरद मुद्रा ॥ २ ॥ वाग कमल सं
 जुन अगम मुद्रा ॥ ॥ विजमरी कुराडन सोभिन कना ना
 नारत्न परि विन कना ॥ ४ ॥ जिनराज भूषिन जता मुकुट
 व्याघ्र कर्म रत्न प्रभा विन कलि ॥ ५ ॥ सुरा मर नर चरित
 चरणा सर्व मार गरा हरणा ॥ ६ ॥ सर्वलोकहित त्रिगुणा
 सोभाव जगतीन्द्र दिपालेस्वभाव ॥ ७ ॥

(८५) चतुर ध्यान कोटि पातग

राग मल्लार ॥ ताल रूप ॥ ॥ चतुर ध्यान कोटि पातग
 देव विन्तामारा रवि गुणा वि श्रीलोकेश्वर नौमि पादपद्म
 ॥ ५ ॥ विविध सहस्रसतवलीम निवासित कथामिह मेव न
 विरूप अन्त ॥ २ ॥ निनिहित तत्त्वोरज्ज्वा सुरगणा मिधि
 गंगे फलिगारा पुता ॥ ३ ॥ पक्षीदिन सिबिन श्रीलोकेश्वर
 अपसरोज नौमि श्री बुग मेध्वर ॥ ४ ॥ महेन्द्र श्री योगेन्द्र मह
 विजयतु शुभ सन्तु विविधिसङ्गता ॥ ५ ॥ अव नव सुधर
 मङ्गल सहिता कुलिश प्रारित वन श्री विर चिता ६ ॥

(८७) भगवत वाछितय

राग नानक ॥ ताल रूप ॥ ॥ भगवत वाछितय दनीलज
 लोचन इन्द्र वरुणा समर धनेन्द्र किरण सुनिबन्धित चर

राग ॥ १ ॥ श्रीजयलोकेश्वर जन्म नारना सुकन चित्ताम
 रीण दुकन दरना श्रीजयलोकेश्वर नौमि चरणा ॥ २ ॥
 मरणा जग भय निवारणा मन्द भुवन मन्दल प्रतिद्विष्टरना दु
 खजगन ॥ ३ ॥ सहस्र किरण समरत समान किरणा प्रति
 अस्मि अर्चन प्रभुवन्द्य ॥ ४ ॥ नेपाल हायन भृनु किमि
 तराम चतुष कारना श्रावणा सशक्ति वीरिन चरणा दुर्गति
 रणा ॥ ५ ॥ ॥

(८८) कापुनर नगरस

पञ्चराग ॥ रूप ताल ॥ ॥ कापुनर नगरस आराधिया
 गमरोऽसिद्धा योगो बन्धु दत्त नरेन्द्र देव नमामि श्रीलोकेश्व
 र त्रिभुवन गमने करुणामय जग सरदनेते ॥ १ ॥ वल्लाह
 रि हर इन्द्रादिलोके पात नाग पक्ष असुरगणा पूजित चरणा
 ॥ २ ॥ रक्त तत्र दर देव गमनेजम सन्नामनस्थतु करुणा ॥
 ३ ॥ वल्लाह स्मरते पाप हरणा व्याधि दुःख दीरिद्र हरणं ॥
 ४ ॥

(८९)

तमो लोकनाथाय ॥ १ ॥ लोकेश्वर विमल शुभ कृपा
 कनिष्ठ मार्ग हसा य धित देशनयाथ वाचं सर्व स्तन
 धियु वल्लु विल्लु धदेहं हल धितान ललितं शिरसान
 मामि ॥ १ ॥ चैते य भेद सता वपु भाव भाषे रेको पिधा

निसर्जनेषु जनि वयस्मान् संतर्कहे परहिमा नुगतेव
 तस्मात् वृद्धिस्त्व हो परम विस्मयिनी ॥ २ ॥ संपूर्ण
 चन्द्रवदने ललिता ललानि देवादिनिर्मल महेश्वरदेवपुत्रा
 वेनेय साभक्त विजयप बोधनाय देवनिदेव गति मोनज-
 मीधरस्त्वं ॥ ३ ॥ वेनेय कामज भवा प्रणिबोधनाय स्क-
 धात् सुसंहत मह शुभ लक्षणात्ने निर्यातनु वृद्धि यिता
 महावर पुत्रलोके धरं धर वरिहारसा नमामि ॥ ४ ॥ वेनेय
 विशाखवद्वान् प्रीतिबोधनाय रजीव पाणी हृदया प्रीतिनिधि
 सितोसो नराय नोदुप भुवने धर नवतस्मात् पुष्पात्त मेष
 पर मान तुवै नान्य ॥ ५ ॥ चन्द्रार्क सोदल वलाहित भक्ति
 भाजा जंदेश नाथ मभिर्निरस लोचनत्वां धत्नी सृतीनीनि
 र विभु विमै चनातां स्वकातरारतमसं तमहं नमामि ॥ ६ ॥
 सारस्वति चिनय योजित भक्ति भाजा धोधाये वै भगवति
 हस्त स्वनियं दृष्टान्न तत्सव जिनात्म जय प्रसुका पुजा भिला
 ति प्रलभ्यते महं नमामि ॥ ७ ॥ वेनेय वायुबनि ताज्जला
 मार्गग सिद्धे पलोके नाथ मुखतो धवीनी श्रीनो सो देवस्य
 प्रीतनवरो भुविजन्म भाजा मीज्या पथाध पलदं तमहं नमा-
 मि ॥ ८ ॥ वेनेय वारुणसि वायनमी सितानां संवोधनार्थ
 नुदरा सुगतान् मजस्यो न्यनिवृत्तो वरुण देव बलीयकस्या

दे सोर्य्ये सिद्धि कलदं सततं नमामि ॥ ९ ॥ वेने संमहन् फ-
 लादे भिलासि निवेसं सिद्ध य प्रवल लक्षणा पाद पञ्चा य
 त्रिश्चिनो भगवति धरनी प्रसिद्ध वेनेलोच्यनाथ मसमं तमहं
 नमामि ॥ १० ॥ सन्सार युक्त मपि सुस्थित मेव तत्रं कारुणेन तश्च
 भव चारुनी सर्व नार भूयात् स्थीतिर मम सदस्थीरमा भवन्तु
 एवं महासय पदं परमं नमामि ॥ ११ ॥ एकन पादनल केन भव
 स्वकेन चाक्रान्तं वर मनं नर लोक धातुं ॥ कल्याणदग्ध भुवने
 जालिनोगु वनि नीस्वास वायु वरनस्तव निरवृत्तस्या ॥ १२ ॥
 सोमनरंजनं मुख धृताहितर्जनेन सचासीता स्वबहु मेरुग
 ना मगस्यो ॥ कोस्यो धृतं जल धृतो यमस्य सतस्यान् साम-
 र्ध मीदुस महो भवत कुतोने ॥ १३ ॥ कैदं च सहि सवपरं नान
 चार रूपं सददर्शनीय वर कोमल वालचन्द्र दुर्ध्वार मारमव
 नं च भयं कण्ठं विस्कातदु सफुपरं कोचतस् स्थितं ने ॥ १४ ॥
 यता चाना जनानि भोजरुता वीरेमा फोति ले चारु विकतांश
 सिरो रुहाया ॥ कसं वनं ज्वलित वीर्युधरित त्वधमे धुमान
 लिव विमला तनुरक्ष तन्ने ॥ १५ ॥ लत्कातिले सविमला
 दशादि क्षोतानि यक्षा सिता क्षायकृता सकला रुशोभा ॥
 इज्येत्त इस्त शिशिनो भुवने श्रीयुक्त तमने विराजिनि विलं त-
 वको तिले सत् ॥ १६ ॥ विदुय कुठसंगीत्तसं मतं मतं नरो

नराणां हितस्य परमं परं ॥ परार्थसंग्रहादिनसंवरं वरं नमा-
 मि भुमीश्वर रजिनीं जिनं ॥ १७ ॥ गभस्ति माला मितसंकु-
 नं कुलं तनसुपाणी धीतपंक्तं कजं ॥ रक्तानुगा माहिन सं-
 तरतं नमामि भुमीश्वर रजिनीं जिनं ॥ १८ ॥ अपीनोनीर्वा-
 णा भवांस्थितं स्थितं पुभाधराधि स्थितसं हितं हितं तस्मै
 कृपासेस जरा सिवं सिवं नमामि भुमीश्वर ॥ १९ ॥ स्वधर्म-
 धातुं करुणा पदं पदं शुभाविसंभावसुतं भुनंभुनं ॥ विकल्प-
 हीनं धीनिदेसकं सवं नमामि भुमीश्वर ॥ २० ॥ तथता-
 तथता दोषसातिसतं सतस परि पूरित धर्म कथं नीय विराजि-
 त सत्ते ॥ २१ ॥ परमे वरमे निश्चर रज्ज वरं ॥ २२ ॥ वरतं निजरू-
 पि जमत्प सद सर सिरूह लोचन चारुतदं ॥ ननसाखिलस-
 त्व विशुद्धि पदं परानेश्वर धरनीश्वर यजवदं ॥ २३ ॥ वर-
 नीर्मित भोग पदार्थ रतं तर सुते निरञ्जन धर्म वरं ॥ धरनीन्दुवो-
 र बोधित सीद्धी पदं पुनमे धरनीश्वर ॥ २४ ॥ वरसं सहयोद-
 धि चन्द्र मुखं मुख भाधित सर्व निरुक्ति पदं पद भूषण लक्ष-
 णा नानुपदं प्रणामे धरनी ॥ २५ ॥ लोके धराय स्तव रत्न-
 माला मज्जि कर स्त्री वर रत्न पाद अपाधियन्ते न सुभं पवित्रं
 तेनैव लोका स्तो समस्त भद्र ॥ इति श्री मदार्या क्लोकिने
 धर स्य रत्न माला स्तन स्तोत्र समाप्तम् ॥

(६०) प्रभव निय कारणा

राग ललित ॥ ताल एक ठान ॥ ॥ प्रभव निश्चय
 कारणाः निददा भुवन यन्त्रिदिता ॥ भव भय तारणा
 सान प्रकाशितः कल द्वादश भूम्ये स्वरा ॥ जगदा धारन
 जगजन पूजितर अनुत्तर वटगति तारणां ॥ ॥ अष्ट
 महाभय नासन सत्त्व भवनं गीकं विश्वभव वद दान प्रदा-
 ता विश्वपञ्च निरालय ॥ ॥ दुरग सम्भव भासित
 वदनाः जल जम्माहिवर सुभव ॥ अमृताभ जिन वामो-
 लि विभूषित विश्वभुवन विश्वधापिता ॥ ॥ सक-
 ल मार बल भजनं देव सूत पूतो जितं ॥ मानस वारिज
 कायन दुःखं कलुष हरण करुणेश्वर जगदा ॥ ॥
 अनुगतो धीर्युग सायक सकल भक्तिजन प्रेमिकं श्रीलो-
 केश्वर गीत भनिता सावन धिरय सुख संपदं ॥ जगदा-
 धारन जगजिन पूजितर अनुत्तर वटगति तारणां ॥ ० ॥

(६१) अमर ग्रहण नाथ

राग नाथ ॥ ॥ अमर ग्रहन नाथ श्रीकरुणेश्वर कथ-
 चित्तामणि विभवो ॥ ॥ तृदश भुवन पति श्री युग मेध
 र जगजन तारणा मोक्ष प्रदाता ॥ ॥ इन्द्र सीतुर कनि-
 कुराडन यापु नम भूषित श्री अमृताभ वीमोरि वर ॥

श्री वज्र दत्त गुरु नरेन्द्र देओ नियः करुणामलधिओल
अभय प्रदाता ॥ ॥ जयन इन्द्र नाग जिन नेपान्न वज्रर
माद्यवे सुक्त पक्ष गिरिगतिधि ॥ ॥

(५२) नमामि सुरा सुरलोक गुरु ✓

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ जयसिद्धि सुरा सुरलोक गुरु कम-
लासन साधिन पाद युगं ॥ दशपारमिता दिग पद्म करं प्रण
मीन सदा वर कारुणिकं ॥ १ ॥ बहुकोटि मराधिपरं च
वरं जय सुस्थित सुस्थित नाथ मुनि ॥ भवसागर पारङ्गनाथ
करं सरणागत सरनागत सत्वहितार्थकरं ॥ २ ॥ कमलासन
चारु सूरूपं अमिताभ नथागत मोनिधरं ॥ कमलोज्ज्वलभू
षित गात्र धरं वभाष्कर शोभन दिप्तीकरं ॥ ३ ॥ मृदुता नखां
गुणि शोभमुखं शशिबिम्ब समप्रभ सौम्यमुख ॥ षट्भिज गु-
णाकरवन्दि ननु वर सुष्ठित नेपुण हार युगं ॥ ४ ॥ मरीचकुराड
न मरीडत गराड युगं धन गजित तुल्य गभिरक्तं ॥ गिरिग
होल पीतनि वासितलं वृषवाहस मृगेन्द्र गतं ॥ ५ ॥ ऋषि
देव गणा धिय सस्तुतिवं जिनैरूप धरात्मक बोधधरं ॥ द्विप
दोत्तम नाथ सुराधिपतिं मलया गिरिच दन धुपरतिं किन
क्षक जल पीतलि दाम धरं प्रणामामि हृषानलि दाम वर ॥
७ ॥ ज्वर रोग धिर्वैजित कुष्ट हरं बहुबोधि मना धन भ-

इ धनं ॥ भवदुर्गतिनासन मार्गददं करुणा नथनांदय
विश्वपतिं ॥ ८ ॥ इति श्री आर्यावलोकितेश्वर भक्तार
कस्य पीतल कास्तव स्तोत्रं समाप्तम् ॥ ॥ ॥

(५३) नमामि जिननाथाय ✓

नमो लोकनाथाय ॥ ॥ नमामि जिननाथाय नित्यनित्य
विधारिणे ॥ निरवद्य विज्ञानाय निर्विकल्पाय नमः ॥
१ ॥ मोक्ष दत्ता येने मोक्ष मोक्ष सोख्या पेदशकं ॥ मेरु
मराडल मध्यस्थं मोक्ष दाय नमोस्तुते ॥ २ ॥ लोककंदर्प
पासाय लोकेसाय महा मुने लोक रक्षाय देवाय लोक वन्द्या
यने नमः ॥ ३ ॥ कनकोच्चल मध्यस्थं किन्नरे रूप पदकं ॥
किर्ति हतो समाधिषु कांतिं महा हतं ॥ ४ ॥ नानामन्त्र समा
योग नागाभरन धारिने ॥ निरवेद्याय बुद्धाय बोधिदाय न-
मोस्तुते ॥ ५ ॥ स्थानरक्षा कृता भिसं स्थन व्रम पुष्योत्तकं लो-
चनी मामकी तारा पाराड राय नमोस्तुते ॥ ६ ॥ भद्ररुणानां
सहश्रानि भिक्षुरक्षा यतेनमो ॥ श्लोकास्तक मिदं पुरायं कि-
र्ति हतो समाधिषु ॥ ७ ॥ पक्ष राक्षस वेताल भुजङ्ग भय
मोचने ॥ अमिताभ किरिनाय सिद्धिदाय नमस्तुते ॥ इति
श्रीमदार्यावलोकितेश्वर भक्तारकस्य सप्ताक्षर स्तोत्र समा
प्तम् शुभम्

(२४) सर्व सुरा सुर वन्दे विभुत ✓

नमो लोकनाथाय ॥ १ ॥ सर्व सुरा सुर वन्दे विभुत ज्ञानमनोहर
भाविनचिन्त ॥ मोह महानेव सो सनदक्षः श्रीजिन पाप हराय न-
मस्ते ॥ १ ॥ बाल दिवाकर कान्ति सुतरा रत्न विनिर्मित कुन्दल
कर्ण वाराणा गताऽखिल सांचितश्रेष्ठः श्रीजिन ॥ २ ॥ सेवक
वत्सल निजित्त मारं सर्व सिरो मणि बुधित पाद ॥ पौसन पर्वत
देवनिषादः श्रीजिन ॥ ३ ॥ स्वर्ग नदि जल धोनक वादं निर्मल
निश्चलानि विक्रिय सात्र व्याधिसहस्र विनासन वेदाः श्रीजिन ॥
४ ॥ अर्क शशांक पाय विनिर्जित आत्म मठल आसामिह भेद
॥ अष्ट विधान विभासित मुर्ति श्रीजिन ॥ ५ ॥ धर्मराज मुग
तालप देह पद्म दलायन रोचन रम्य ॥ सत्कर्मरागीर सस्थित
देवः श्रीजिन ॥ ६ ॥ विजय पूजित वानसि भक्त्या त्वत्तमिना
नितो सितकेनन भक्त्या नन्दिक पृष्ठ विलासितं वै श्रीजिन ॥
७ ॥ तावदसौ भव सागर चिन्ता लोकजित्त भवयापि न मेतिते
णिह्वा निभवाय न भयोः श्रीजिन ॥ ८ ॥ मनसि विधृत मा
थनासु भित्तिगनस्य मरणा विधुर भारे ॥ गर्भवासि धनूनं तद्
भयतुरदुःखं गम्यमानं कृपाला तव वरणा गतां हि त्राहि माहि
ममैतमे ॥ ९ ॥ इति श्री गदाय्या वल्लोकिनेश्वर भक्तारकस्थ
श्लोकष्टव स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(६५) दानवराज निर्देशित ✓

नमो लोकनाथाय ॥ १ ॥ दानवराज निर्देशित धर्म पूजि-
त रत्न विवेका विवेका ॥ नाशित मोह विवेका सहस्रं श्री-
जिनपक्ष करं नमानि ॥ २ ॥ मोहनमोमय भूमि न दारं रा-
क्षस यक्षगण निविशान् ॥ पारमिता कथनाय परंतः श्री-
जिन ॥ ३ ॥ जेतव नाहिन देह मयुसं रोम सिविसित लोक
समस्तं ॥ मा भव सत्त्व विमो चित छेदं श्रीजिन ॥ ४ ॥
दिन बुभुक्षित पुरित भुतं खराडन दुर्गति दुर्गत पुतं ॥ आ-
हित सेवक मुक्तिविशेषं श्रीजिन ॥ ५ ॥ मोहाप हस्ति ह-
र मोजरस्मै लोकाचितं निरजलान हस्तं मुक्ति पदस्तं करु
णार्दचितं तं लोक नाथाय रयं ननामि ॥ ६ ॥ मृतांकरस्मै कृत
नारकोयं सुर्य दुर्कोट सत निक्षारम्य ॥ जातादी मावा छयं
युक्तं देहं तं लोक ॥ ७ ॥ समुद्धरक्षं नरकं प्रपन्नां सत्वासमस्ता
नत्रिणस मुक्ति ॥ पंकेतिमया निवहस्त दामं तं लोकनाथ ॥ ८ ॥
पादापनेनै सम्यक् ददं क्षमाना विषे माय्य विविच ॥ समतं व-
स्थितस्तपचित्तां तं लोक ॥ ९ ॥ यत्पाद सम्यक् कर्म बाप्य
कुम्हि शिषाकलापेर विगर्भ पूरा यज्ञा पुषो बं कुरुते समन्ता
तं लोक ॥ १० ॥ सुरवावति प्रेषित सत्त्व सप्रे दुर्भिक्ष शैला मृत
वज कल्प ॥ अता कलापं प्रहिता मिताभं तं लोक ॥ ११ ॥

परांमामि सुरासुर वन्देपदं पदबोधकरं करपद्मधरं ॥ धरणी
 जवता परित्रासहरं हिरनिर्जित विधाविशेषधरं ॥ ११ ॥
 स्मरनास्कृतता वयं रक्षभवं भवता भवता परिगुप्तननुनात
 पुना कृतिविश्वददं पदं तम भुतसमस्त पतिं ॥ १२ ॥ परि
 प्राप्तिन लोक समस्त गरां गन किन्वर नाग नमस्तनु ॥
 ननुनिर्जित मार विशेष सतं ज्ञान स ॥ निकल्पित कामकरं
 ॥ १३ ॥ विभुता विभुति दीगता दिमतं रत भक्ति जेवो ध
 निशेषलयं ॥ लय नत्व सही दीधि पार करं करुणा कर कार
 रा राज करं ॥ १४ ॥ स्वर्गा दोलोक धानु उदित नयदयादेव
 देवाधिदेवं ॥ सर्वा धारे कमागिप्यसि मत फलदं राजने लोक
 नाथ ॥ यस्तसेवा प्रसादा दशरथ इति याधिर विद्वानि मुक्ति
 समलोक नाथ तव मणि कमला निरुज स्वाभिरासा ॥ १५ ॥
 इतीश्री मदाय्या वलोकने धार भलार कल्या श्लोकारतवस्तोत्र
 (६६) लोकेश्वर लोकनाथ
 नमो लोकनाथाय ॥ ॥ लोकेश्वर लोकनाथ लोकनाथ
 गुरु गुरु ॥ लोक पुज्य लोकवन्दे लोकोत्तर गतं नमः ॥ १ ॥
 करुणा नय कारुणिकं कार्या सिद्धि कां करः ॥ कामुना विकारं
 इव ततोस्मी करुणा करः ॥ २ ॥ तानां भय हरं तानां रूपेन नाम
 नेदते ॥ तानां पितृ समुत्पल लोक रक्षा करे नमः ॥ ३ ॥ धाई

निरव्यान् भुक्ते निष्ठुनिनयु वेद्येय ॥ कृतमो धरणां येन नो
 भितथा ननायकं ॥ ४ ॥ यथा यथा वेने यान भुक्ता सत्त्वा
 तथा तथा ॥ पादे स धर्म भनुत्तं तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥ ५ ॥
 नमोरत्न नया येनि ये पठंति बभूधया ॥ सौरवाकति प्रेष
 यनि नमामि नित्यं दायकं ॥ ६ ॥ महाकारुणं मेरुमराड
 वस्थं महागुरुं ॥ मोह माया राग हरं माया सुत गुरुं नमः ॥
 ७ ॥ सप्ताक्षर मिदंतोत्रं पठंति भातिमानसा ॥ पांचानतर्प्य
 निर्मुक्ता सुखाकतिं प्रयांशते ॥ ८ ॥ इतीश्री मदाय्या व
 लोकेश्वर भलार कल्या सप्ताक्षर स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(१) उत्तिमशुशीनेपाल संभादि

ॐ नमो बुद्धाय ॥ ॥ उत्तिमशुशीनेपाल संभादि उभय
 स्थार सयं भु चैत्य २ त्येदिस कोटि देव परांमामि धर्म धानु
 जिनालयं ॥ १ ॥ नमामि बुद्धं त्रैलोक्यनाथं सकल जगत
 गुरु २ मामकि लोचन पति नारा पञ्चाजिन धानु मराड
 लं ॥ २ ॥ बुद्ध दशकल तव नीत्यं पुन्यकाय गुनादीध २
 लोभ मोह विषय काम सर्व छादित वाक्य सिद्धि ॥ ३ ॥
 पूर्व मुख श्री हस्तिवाहन इन्द्र नीलवरादिहा २ अनेक देव ग
 रा मार नीजीत वज्रासन श्री अक्षोभ्य ॥ ४ ॥ दक्षिणा मुख
 श्री तुरङ्ग वाहन उदित सुवर्ण देहा २ विविधिरात सम्पन्न

दायक नमामि श्रीरत्नसंभवे ॥ ५ ॥ पश्चिममुख श्रीमय
 रवाहन पद्मरागज्योतिर्देहा २ श्रीअमृताभ करुणा मय
 सर्वलोक प्रणितानिना ॥ ६ ॥ उत्तरमुख श्रीगरुड वाहन
 हरि वरा देहा २ सप्त करि शोभा श्रीअमोघसिद्धि सर्वगु
 णो विद्या दायक ॥ ७ ॥ धर्म धानु मराडन मार्गे करि क वरा
 देहा २ सिंह वाहन ध्यानमुनि त्रैलोक्य नाथ त्रैलोक्य ॥ ८ ॥
 पुष्प बुद्ध सुमन नित्यं क्षान्ति सपद्मराजिनं २ जगत् पालिन
 करुणा मय सर्व देव गण शिरोमणि ॥ ९ ॥ धर्म दान वञ्च
 चनकीर्ती भयस्तु रक्षादिप सन्वरं २ पापनासय बुद्ध सर
 नी मुक्ति पद वर दीप्ति मे ॥ १० ॥ नमोस्तु स्वयंभु चेत्यम्भाप
 न धर्म बानु रत्न चेत्यम् ॥ ११ ॥ विविधिरत्न वननेपन सुवर्ण मुख
 पुनर्न पूरा ॥ नमस्काति पापहरं सफल भवतु भवतु ॥
 १२ ॥ वेद मुनि मुनि नेपाल वत्सर भानुगुण कृष्ण सप्तभि २
 चेत्य स्थापन जग्य संपूर्ण भापु आराग्य सम्पदम् ॥ १३ ॥
 इति श्री चेत्य वन्दनास्तवस्तु समाप्तम् ॥ ॥

(२) गजपुत्र पर्वत ०

अत्रेण बुद्धाय ॥ ॥ ग्वपूछ पर्वत सांख्यत मुद्धि पञ्चबुद्ध पञ्च
 ज्ञान स्वरूपी ज्योतिमय करुणा मय रूपं ॥ संभुनाथ नमो पाद

कमले ॥ १ ॥ चन्द्र सुवर्ण सु सुख सुत्यजं ज्ञान सु बुद्धि
 श्रीवोभिसत्त्व २ पाद सु पद्म भिन्न नाथ सुमंज ॥ संभुनाथ ०
 ॥ २ ॥ प्रज्ञा विष्णु रुद्र महेश्वर देवं श्च जम यक्ष वरुणाग्रे २
 वायु अग्नि राक्षसि वन्दीन पादं ॥ संभुनाथं ॥ ३ ॥ सर्व
 तथागत श्रीवोभिसत्त्व भिक्षु भिक्षुनीभि पूजित पादं २
 अग्नी सवन्ति मानुजराजो ॥ ४ ॥ दारिद्र्य दुःख निनासन
 कर्ता नागर उदर मोक्ष सुदाना २ मार्ग सुदेस्य रु बोधि
 नाथ ॥ संभुनाथं ॥ ५ ॥ इति श्री स्वयंभु गीत स्तोत्रं स
 माप्तम् ॥ ॥

(३) आदि उभय-

नमो रत्नत्रयाय ॥ नमो नृत्ताय ॥ ॥ आदि उभय जननि
 प्रज्ञा पारमिता जिनं ॥ १ ॥ त्रैलोक्य भुवने देव प्राण पुण नमोस्तु
 ते ॥ २ ॥ हरि हर ब्रह्मा सत्त्व नाग यक्ष गुरा सुरं ॥ बह वि
 वि भउपहार पुष्प गार सुरा नं ॥ ३ ॥ प्रणामामि महा बुद्ध
 पूजराय प्रकाशितं ॥ विबु चेत्य भानुश्वरी शुभ किर्ति नमोस्तु
 ते ॥ ४ ॥ रयन चेत्य महा शोभा त्येज वर्ण पुज्वलितं २ जगति
 आलं कुज देहा पोता किर्ति नमोस्तु ॥ ५ ॥ रत्न चेत्य महा
 शोभा त्येज वर्ण प्रकाशितं २ पद्म गिरि स्वयंभु चेत्य भानु
 त्रैलोक्य ॥ ६ ॥ जिनगत पर्व भानु वागीश्वर प्रसाहितं ॥

पञ्चवर्ग पञ्चमुद्रा पञ्चबुद्ध नमोस्तुते ॥ ८ ॥ लोचनगिरि
 चतुरद्वी नारागनमुप्रमुक्ति ॥ मेत्रिवोधिसत्त आदि सर्व
 स्वनमोस्तुते ॥ ९ ॥ हरिदत्तिश्राविसिषि खड्गरायदीरदुष्टं
 ॥ श्वेतनील पीत रक्त स्याम पञ्च नमोस्तुते ॥ १० ॥ अष्ट
 दिग्ग पञ्च चैव अष्ट बोधि प्रदक्षणा २ मरु मरुत्त उपसीष्ट
 त वज्रसत्तनमोस्तुते ॥ ११ ॥ कान्तिसर्प कपिलेन नेपाल
 भुवरथनं २ जर्म आत्मा वञ्चयति क्षोद्रिता भुवने स्थापित
 ॥ १२ ॥ धर्म भूमि गिरिगुहा बुद्धस्थान मनोहरं २ हेमवर्ग
 ध्यानमुद्रा नागार्जुन नमोस्तुते ॥ १३ ॥ श्री विपश्चि क्रकृद्ध
 कनक मुनि शिखि निन ॥ विश्व भुव कास्यपत्री शाक्य सिंह
 नमोस्तुते ॥ १४ ॥ धोषिराजा गिरिवरे वासिनं सुगते धरं ॥ धर्मपाल
 महाराय दीर्घतं पदपापजं ॥ १५ ॥ धर्म गुप्तं सर्वजन देहविकि पुन्य
 कृतं ॥ आर्यताए बुद्ध सारनं तत्त्वसानरमुक्तिदं ॥ १६ ॥ जातमृत्युचि
 तगुप्त पाप पुन्य धर्माधिकं ॥ पुराव नार्ग चेत्य भक्त सर्वपापविना
 सनं ॥ १७ ॥ गुरुदेश उपकार धर्म किर्तिनोपानितं ॥ चैत्यस्था
 पित चापर्यादित मोदिव मोक्ष भुक्तिदं ॥ १८ ॥ सुखद्वारिमाया
 जाल धर्म वाक्य सुजानिकं ॥ इह जन्म गते पुन वासुकि पदपंक
 ज ॥ १९ ॥ धर्म चैत्य त्यजयते बुद्ध दुर्मि प्र भेदिनं ॥ पूर्व जन्म
 फलं पाप शर्वानन्द भुवने नर ॥ २० ॥ भुक्ति मुक्ति विन

भक्त शुक्लाहमि धर्म जनं ॥ विशुद्ध किर्ति वशा नाग
 राय मन्त्र पम् ॥ २१ ॥ किर्तिनेन इह कर्म सारिद्र दुःख का
 रनं ॥ बुद्ध धर्म महा मुने सर्व दुःख विनासनं ॥ २२ ॥
 सूचको अनित्त नेद किं पुन्या किरने फलं ॥ सुदनेन
 सुभे कारी कर्मनामन नासनं ॥ २३ ॥ मे अजानि येने भ
 वतो सर्व दुःख ककारणं ॥ गन्ध जन्म सुमेरे भु सर्व नील
 देपदं ॥ २४ ॥ जिन भक्त महा शोभा राग द्वेष विनासनं ॥
 सुमेरे भु सर्व पाप सुभ किर्ति नमोस्तुते ॥ २५ ॥ गन्ध धूप
 पुष्प दीप पूजनाय प्रमोदितं ॥ श्वेत स्तन प्रतापनामन
 रो हनाय नमोस्तुते ॥ २६ ॥ मुनिजन सुमरतो नादितं
 सफेता फलं ॥ जिन गुन सुर आज्ञा मोक्ष मार्ग संप्राप्तदं
 शोते श्री आर्य आदि बुद्ध गान स्तौतं समाप्तं ॥

(१) मञ्जुश्री कृत

ॐ नमो श्री ३ स्वयं भूषण महे चराय ॥ ॥ मञ्जुश्री कृत रम्य
 पणित त्रिविध दर्प सु दायक सत्य संज्ञक पुण्यने पुह पम्
 पुर्व गिरिद्रुक् २ विनल तेना यान्न देवगु नगु कृत क भर भुव
 द्वापरे वसु दाय क कानि दावके गो सिंह क ॥ १ ॥ ललितना
 म विरं कितं किर कलियुगे गो पुद्रु कं यन्न सिद्धि ने यान
 कारन नन्दनादी मुनारं २ वकुल कुलक कोकनन्द कुल न

पद्मदिग्धी शोभिनें कासकेतीक पातजागुह नागेकेशरा
 सितं ॥ २ ॥ युधिभारति कुण्डकुंकुम मधुर मधुकरनि
 कासितं मञ्जिकासित कमलदातन पारिजात समाकुलं
 विविध सौरभ रत्नमाहूत वीचकैश्वरि प्ररितं सकलदं
 मा विमुग्धमधुकर गुणितं दुममधुनं ॥ ३ ॥ रकु वनानग
 नास किंसुकं कलिकाल विभुषितं सरससारन सारकैव
 रक्तनदन शजितं २ अंगर गुंगुर नगर सरणक रवदीरा सग
 शोभितं दारिद्र नात्रिम प्रनस नारग वीज पूरक पूरितं ॥ ४ ॥
 कदरि नदीर नम्बु खम्बुन दासमापित शोभीतं नारिकेल
 पीठ सीतल क्षीरिकादमिरावृतं २ विश्वदीरकल नैवेयुक्
 तदकरुठ कितापि कं जीनवन्तक दीनतीहुर किन्तिरितर
 पितं ॥ ५ ॥ तन्न रत्न स रोज तोभुषि धर्म धातु समुद्रभवं सा
 द्य सिंह मुनिन्दुवदित मन्त्रभाद्य षडक्षरं ॥ चड्काति सुशी
 तनांसिद्धि सुख्यैकाति समप्रभं ॥ तन्न माभि परान्तरं पर सम्बु
 आममय विभुग ६ ॥ स्थूल शुष्मवि दूर दूरक खर्व दीर्घवि
 धायकं पसरालस सुरद्र दानव सिद्धिराध्य सुसवितं ७
 तिंकारन पाप मङ्गल रूपा रंजन यानितं ॥ ८ ॥ कर्मवन्धन
 कासनासन कर्म वन्धन कारनं रूप रूपक भाग्य भाव
 निप्लेयक वजितं २ विश्वरूपानि रूपनिष्कल सर्वकारणा

कारनं ॥ तन्नताम ॥ ८ ॥ तन्न यत्रक मन्त्रमन्त्रक पू-
 ज्य पूजक वजितं तन्न यत्रक मन्त्रमन्त्रक पूज्य पूजक का-
 रणा २ श्रुष्टि नाष्टि चूतकारन जीवनाटक कारनं ॥ तन्न
 माभि ॥ ९ ॥ व्यानरूपे पारिष्ट मेककं नाक नन्धविभारितं
 तन्न मोक्ष प्रसिद्ध १ विहित मोसमास सर्वजीतं २ देह सुख
 सदेह देह न देह देह निगमितं ॥ तन्न माभि ॥ १० ॥
 नोभ मोह प्रमुख वजित नोभ मोह कारनं नानकार
 णा कार नात्मक नाद विन्दुविचित्रितं ॥ परा वजित वरा
 वन्दित परा भाषा निगमनं ॥ तन्न माभि ॥ ११ ॥ त्रिगुणा
 र्मभज रज्ज्वजित तुर्य माध्यम मन्त्रितं १ त्रिगुण कारणा
 कारनातक मायितं गन मायितं ॥ आदिसध्य मङ्गल वजित
 मोक्ष कारणा नीनर्तनं ॥ तन्न माभि ॥ १२ ॥ रागरंगिम संग
 वजित भागमादिवजित रागरंगिम संग कारन भंगिमादि
 क कारणा २ ईसवाहन वजित ३ पन्नगासन भाषितं ॥ तन्न
 माभि ॥ १३ ॥ भूमिजिवन आध्यात्मन गन्ध साहन वजि
 तं योम वजित सर्व कारणा रूपरेष विवजितं ॥ भुक्तिमु
 क्ति दशो ष कारणा नात धाम विनिजितं ॥ तन्न माभि ॥ १४
 ॥ खड्ग दर्शन रक्त वजित मुक्ति कादिक कारनं अस्ति नास्ति
 प्रमुख वचन श्वेत रात चित मोहनात् २ नित्य सुखानि रूप सतंग

सचिदात्ममयं विभू ॥ तन्मामि ० ॥ १५ ॥ शैवसोर्गेन शा-
 त्तैवेनाक सोरदर्शन कारणं सर्वकारण कारनात्मक रूपि-
 नं जेवमानि २ बुद्ध शेषव यौवनात्मक वार दिव्यक संभव ॥
 तन्मामि ० ॥ १६ ॥ तेषां पाल प्रताप मन्त्र निमित्त किं
 मट् भुतं स्तोत्र मुक्तिक मुक्तलक्षणा संपुक्तं गुणवर्धन २
 विविधसिद्धिनि ध्यान भाजन मुक्तमं मुख दायकं साक
 मोह विनाश कारण मुक्त मुक्ति पदस्थित ॥ तन्मामि ० ॥
 १७ ॥ नवसिमासि वि भाय प्रजाति मुक्ति मार्ग विलम्बकं
 पठति यादेभुवि गारपयति वार सप्रतिदायक २ चित्तक
 पन शोभ दायक स्वर्ग सोरख सपुत्रद कामकुम्भ गन्द
 शरुचि प्रमुख व्याधि निवारण ॥ तन्मामि ० ॥ १८ ॥ ने-
 पाल सभोग स्मिन् गिरियुते भावरो शुक्लपक्ष शुक्लवार
 प्रतिपदा व्यतिपादयोग अश्वे वाया धर्मजात धतिवि
 भक्त निर्मित तोत्रराग ॥ १९ ॥ इति श्री धर्मराजधिरा-
 ज सुप्रकाश कविन्दु श्री ३ जय प्रताप मन्त्र देव विराचि-
 तं स्वयंभुव भृगु करप स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥ शुभम् ॥

(५) अतसि कुसुम ॥

नमो बुद्धाय ॥ ॥ अतसि कुसुम सैकासदेहा पूर्व मुखद्वि-
 राग २ दूरदातक ॥ वपु विजितं नमामि श्री अक्षोभ्य मुरुति ॥

॥ १ ॥ सुगत स्मरण महोत्सवं ॥ वरद कृतनरनाकसं २
 मोक्षबोद्धत प्रानसं स्वामिचरण स रत्नश्री ॥ सुगत ० ॥
 ॥ २ ॥ दक्षिण मुख श्री रत्नसंभव विभव संपददायकं २
 उदित सुवर्ण संकास देहा नमामि तुरङ्गवाहनं ॥ सुगत ०
 ॥ ३ ॥ नव उदित रणे किरा देहा योग मुरुति वारिता २
 मयुर वाहन संस्थितं नमामि श्री अमृतमभ ॥ सुगत ० ॥
 ४ ॥ सप्तकरीण मय आनकुजा हरितवर्ण विराजिता २
 उत्तर मुख श्री अमोघ सिद्धि नमामि गरुड वाहनं सुगत ०
 ॥ ५ ॥ इन्दुकुमुद विकाश देहा त्रिदश भुवं प्रणिपालिता २
 सिंहवाहन ध्यान मुक्ति नमामि श्री वेलोचन ॥ सुगत ० ॥ ६ ॥
 गगणा विन्दु कुमार वदना वत्सर श्री नेपालिता २ गीत
 ग्रन्थित कुसुम माला नमामि श्री धर्म धातुम् ॥ सुगत ० ॥
 ७ ॥ इति श्री धर्म धातु गीत स्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(६) श्री धर्म धातु चैत्य

ॐ नमो श्री धर्म धातवे ॥ ॥ श्री धर्म धातु चैत्य जिनवर व-
 दित पद पंक्तं ॥ मासि द्वादश पुरा मासि आमिता पुरि
 मारोडनं ॥ १ ॥ नमोस्तु २ पंचजिनवर धर्मराज महा मुनि ॥
 येन येन प्रदाशिराते पाप रासि विषारोडनं ॥ २ ॥ चन्द्रमण्ड-
 ल मध्य सास्थित चक्र धारि महा नल २ सिंहमारुत राव-

मुनिवर श्वेतवर्णा महोन्नतः ॥ ३ ॥ प्राच्यादिगस्थित इन्द्र
 नीलसमवर्ति महा रुढ रायति ॥ ४ ॥ रायसम समसुरव ध्यान भारि
 त बुद्ध नाथ महा मुनि ॥ ४ ॥ प्राच्यादिगस्थित रत्नसंभ
 ग दारिद्र्यलोक संपातिता ॥ ५ ॥ तुरङ्गमा रुढ काञ्चनामं वरद
 हस्तसु नीर्मलः ॥ ५ ॥ प्राच्यादिगस्थित राय मुनिवर अ
 मुक्त प्रभु जिन व्यापिता ॥ ६ ॥ मयुरासन ध्यान भारित पद्म रा
 ग मणि प्रभं ॥ ६ ॥ उत्तर दिगस्थित अनोप सिद्धि स्याम
 गणा सुदीप्तिता ॥ ७ ॥ गरुड मासन अभय मुद्रा सर्व सन्त उधा
 रणा ॥ ७ ॥ श्रीवज्र मन्त्र मरु मराडन वज्र वराठ सु धारिता ॥
 विश्व व्यापित जगत नाथ मान शेष्वर रतिन ॥ ८ ॥ जाति च
 पक मालतीवन मारति सुभक्तगीति ॥ ९ ॥ पारिजात कुमुदा धवर
 ताग केदार संयुक्त ॥ ९ ॥ नाभि सिंहा कर्पूर कुम्कुम चन्दन
 तिलोपता ॥ १० ॥ विविध पुष्प कमल उत्पल निन्य संयुक्त व्यापि
 ता ॥ १० ॥ वीणा वंसा मृदङ्ग मुरुगा संख वाद्य सुमङ्गला ॥ ११ ॥ रंभा
 चेता तिलोत्तमा उर्व सिंभि प्रदक्षणा ॥ ११ ॥ इन्द्र आदि लोक
 पाल अध्या सुमनो हरा ॥ १२ ॥ दूरित वदित देव चेत्य पुष्प रोह
 त मालिका ॥ १२ ॥ चूर्णोत्पल सुभक्तीणां पूजा चन्दु सूत्री
 मन्त्रा ॥ १३ ॥ देव मानद यक्ष किन्तु मार्ग लोक सुपूजिता ॥ १३ ॥
 कथं वाक्य चित्त नीर्मल विविध बुद्ध गणा प्रदक्षणा ॥ १४ ॥ श्वेत द

न प्रताप चामर वराठ वाद्य मनोरथा ॥ १५ ॥ त्रयोदश
 भूमि ध्वजा वलि शोभिता सुमनो जकं ॥ १५ ॥ हरि हर वल्गा पुरं
 धर देव सर सुज पूजिता ॥ १५ ॥ शून्यानि शून्य महा शू
 न्य सर्व सुन्य निरंजनं ॥ १६ ॥ निराजन निरा कलनं वाचा सिद्धि
 मनो मय ॥ १६ ॥ श्री स्वपंभु धर्म धातु जोतिरूप प्रका
 सिता ॥ १७ ॥ देवानि देव महा देव सर्व देव सुपूजिता ॥ १७ ॥
 शोरेवेषु महानरके पच्यते न क जन्मसु ॥ १८ ॥ पूर्व जन्म कृत पुण्य
 स्वर्ग भु कजेन्य प्राणिता ॥ १८ ॥ अष्ट भादि सती सिद्धि भ
 वंतु भव भय मुक्तिदं ॥ १९ ॥ ज्योत्स्ना महा सरसि संवुकाभि
 प्रदक्षणा ॥ १९ ॥ सप्त स्यं बुक जन्म स्वशिखित राज कथा सु
 लभेन ॥ २० ॥ किं किनामा महाराज स्वर्ग भु जन्म तया वनं ॥ २० ॥
 राव रावरा शमर हारित बुद्ध सरसा सुमङ्गला ॥ २१ ॥ चेत्य अर्च
 न काल नीर्वत सिद्धि भाव सुमुक्तिदं ॥ २१ ॥ दारिद्र्य नीलप
 मत्त मय उद्धतत्व महानुनि ॥ २२ ॥ अहो रात्र प्रदक्षिना ते सुखा
 वति सम प्राप्नुयान् ॥ २२ ॥ शोभो धर्म धातु चेत्य वरा
 क स्तोत्र गीत समाप्तम् ॥ ॥

(७) वंकारं वज्रमन्त्रं
 नमो बुधाय ॥ ॥ वंकारं वज्रमन्त्रं च वज्रामन सदा स्थितं ॥
 वारुणा मराडन व्यापि वेलाचन नमो रत्नो ॥ १ ॥ अकार

मादि स्वभावं आकरो व्यापितं तथा ॥ अर्कनील समैर्जुः अ-
 क्षोभ्य श्री नमोस्तुते ॥ २ ॥ रकार नक्षत्री स्वभावं रत्ननाम
 नेकधारं व्यापितं पुण्यविचं रत्नसंभवनमोस्तुते ॥ ३ ॥
 अकार मस्थीस्मात्वं पद्मराग सम प्रभं अग्नीत्वेन समाधि-
 स्थ अमिताभ नमोस्तुते ॥ ४ ॥ अकार तत्त्व भावं गन्धवा
 हा समप्रभ ॥ अकार विश्ववर्जुच अमोघ सिद्धि नमोस्तुते ॥ ५ ॥
 वकार धर्म स्वभाव धर्म मंगल स्वरूपक ॥ आनु अष्ट प्रकी-
 र्त्तनि धर्म वातु नमोस्तुते ॥ ६ ॥ सकारं सर्व सम्पत्ति स-
 र्व मङ्गल मयोनं ॥ सर्व सिद्धि लभेनाय सिद्धि वज्र शरणांगति
 ॥ ७ ॥ इति श्री धर्म वातनामा स्तव समाप्तम् ॥

(८) कर्मविकासित धर्म
 नमो बुद्धाय ॥ १ ॥ कर्मविकासित धर्म वातु वागीश्वर २
 भुक्ति मुक्ति वर प्रदाता नेपान मराठल स्थित स्वयंभु ॥ १ ॥
 नमामि र श्री स्वयंभु चैत्य भुक्ति मुक्ति वर प्रसा दाता ॥ २ ॥
 पूर्व दिगास्थित अक्षोभा मुनिवर नील वारा गजमासनं ॥ ३ ॥
 दक्षिणा दिगास्थित रत्न संभव भुनिवर तुरङ्ग मासनयात
 वरा ॥ ४ ॥ पश्चिम दिगास्थित अमिताभ मुनिवर मयुरमा-
 सन रक्त वरा ॥ ५ ॥ उत्तर दिगास्थित अमोघ सिद्धि मुनि-
 वर गरुड मासन श्याम वरा ॥ ६ ॥ म्येरु मराठल स्थित वै

लोचन मुनिवर सिंहमासन श्वेत वरा ॥ ७ ॥ नेपाल मराठ-
 लस्थित भास्करमन्त्र व्यापित भुवनलक्ष्मीदेवी जगन्ज-
 ननि नमामि र श्री स्वयंभु चैत्य ॥ ८ ॥ इति श्री धर्म वात
 गीत समाप्तम् ॥

(९) जानिवोधि
 नमो बुद्धाय ॥ १ ॥ जानिवोधिं प्रवत्त मनुज धर्म चक्रे चर-
 शये चैत्य चाये विभुवन नमितं श्रीमतं प्राप्ति हाये ॥
 स्थाने चैत्य गिमगिरि निभं देव देवा नतारं वन्दे भक्त्या प्र-
 रापित मिरसां निवृत्ता ये च बुद्धा ॥ १ ॥ वैसाख्या धर्म च-
 के प्रथित जिन वरे पर्वते गुह्य कूले श्रावत्यां रुविनिच कुसि
 नगर वरे लूचिनि कापिताक्ष ॥ कौशाख्यां स्थित काठ मकर
 वरपुरे नन्दगोपा मराते येनाने वातु चैत्य देशवल पत्तिता
 ताक्षमस्थामि बुद्धान् ॥ २ ॥ केलाशे हमेकूले हिमवति म-
 लये मराठले मेरु शृंगे पातालै वेजमते धनपति निलये
 सिद्ध गन्धर्व लोके ॥ वसुनान्द विष्णु भुक्त्यां पशुपति नगरे
 चन्द्र मुखातिरेके चर्चाने वातु चैत्या देशवल वलिना
 ताक्षमस्थामि बुद्धान् ॥ ३ ॥ काश्मिरे चिनदेशे स्वतर पु-
 रे वल्करे सिंहलेवा रातोये सिंह पाद सतम निरतं वल्के
 रे कापि ॥ नेपाले कामरूपे प्रवत्त मरपुर कांते शोभा

सरासै चान्ये चान्ये दशवत्त वलिशा नाद्यमस्थामिव
 वान् ॥ ४ ॥ वैचान्ये चान्ये गभा दशवत्त तनुजां कुंभसं
 तावचैव्या अंगनाक्षी तुधाने हिमरचत लभानुपरत
 प्रकाश ॥ पाताले येच भुम्भां गिरि सिस्वरगता येच वि
 ता लभता बुद्धाता येच विम्बा पतिदिन मसकृत्ताव
 मस्यामि बुद्धान् ॥ ५ ॥ इती चैव नन्दना स्तवं समाप्त ॥

(१०) कालि हृदय समुद्रभव

अंभो धर्म धातु वागीश्वर ॥ ॥ कालि हृदय समुद्रभव
 न स्वर्ग भुञ्जीति मय कलक वरगो धुति स देहाहं २ ॥ धुनि
 रनाथ करुणा मय विश्वनाथ सर्वनाथ तव पाद पु
 गे न मेह ॥ १ ॥ वाहुराज दिशि स्थित मुनि अपरिमितायु
 ध्यान मुद्रा मरिणा प्रभं परि शोभिताङ्ग ॥ कर्मादिद जगत
 नाथ सुसङ्ग्रहाः जर्जरा नाथ ॥ २ ॥ पूर्व दिशि स्थित ह
 स्ता मुद्रा आकाशवरा धुति देह सुभाषिताङ्ग ॥ विद्यादिद सुग
 तनाय ससङ्गताङ्ग सर्वश ॥ ३ ॥ याम्यादिशि स्थित सुवरा
 धुति देह सद्यत हस्ता वर दान समुद्र युक्त ॥ रत्नादिद कलक
 धातु धनाधिप सर्वश ॥ ४ ॥ साहि अमोघ फलदं अभ
 य प्रदाता सु श्याम वरगो जहमीदिह सु शोभिताङ्ग ॥ शिष्या
 दिद स करुणा मय स्वभावाः सर्वश ॥ ५ ॥ इति पूर्व बुद्ध गीत
 समाप्त ॥ ॥

(११) कमल विकाशिन

नमो बुद्धाय ॥ ॥ कमल विकाशिन भर्म धातु वागीश्वर २
 भुक्ति मुक्ति वर प्रदाता नेपान् मराडन स्थिता स्वर्गभु ॥ १ ॥

(१२) उदयागिरिगत

नमो बुद्धाय ॥ ॥ उदयागिरिगत ममार मुनिनत मधिक क
 रुणा कारकं २ तन्नमामि गजेन्द्र सास्थित अभोभ्य नाम सुभा
 करं ॥ १ ॥ धर्म धातु ध्यान संयुक्त दुरित दुःख विनासन २
 बुद्ध वीर धर्म वीर संघ वीर नमाम्यहं ॥ २ ॥ दक्षिणा सागर
 धर्म दिन पर्वतो परिराजितं २ रत्न संभेव मध्यवाहन मित्र सु
 ख सुर पूजिता ॥ ३ ॥ वरुणा दिशि गोडावरि दत्त मोक्षक सु
 रनर वन्दिनं २ तन्नमामि मिताभ मुज्वल दहि वाहन नन्दित ॥
 ४ ॥ उत्तर हिम पर्वतो परि गरुड वाहन दित २ तन्नमामि सिद्धि
 मनेक सिद्धि दमान मामि सुमशित ॥ ५ ॥ चन्द्र मराडन मध्य
 राजित सिंह वाहन मादित २ धर्म धातु मने मुनिगण सवितां
 प्रविनोदित ॥ ६ ॥ चरणा युग नत भुवन तन्मो विविध क
 रुणा कारकं २ नृपति मास्कर भविक कार मखित जव नार
 क ॥ ७ ॥ इति बुद्ध गीत समाप्त ॥ ॥

(१२) सिंहासनीस्थित

अंभो नमो पद्मनाथगताय ॥ ॥ सिंहासने स्थिति मनं त्रिगु-

२०
 १५
 १०
 ५
 ०
 सा धिपानं शिराम्बुशसि धनरा पत-चारु गीताः वैनाचन
 मुनिपरं तथता स्वभावं त्रैलोक्यनाथ मसमं शिरमानमा-
 मि ॥ १ ॥ स्त्रीगंधदस्त्रि मरिासं फुलिन भाह वभा समस्तं
 दिगंत रा नीरं ॥ अक्षोभ्य बुद्ध महाभयं विरदा समस्तं त्रैलो-
 क्यनाथं निस्म करि सरां नमामि ॥ २ ॥ रत्नाभिक कनिवहि
 जगदर्थं दक्ष साक्षा सुमेरु मिवं वज्रम पुराय राशितं रत्नम
 भव मुनिनुरागा मनस्य सौवरा सागरानि मवचमानमामि ॥
 ३ ॥ स धर्म पुनस्त विवा कृता वभावं सधर्म कुशाप यभा
 भिरामं ॥ त्वं पद्म रागमारा पर्वत मोभमानं मयुरासनस्थं
 अमिताभ मुनिं नमामि ॥ ४ ॥ स धर्म लक्ष्मीनिवहे जगदर्थं
 दक्ष भास्वत्पुवर विनं सर्वगभा विभासं वेदुर्प सागर निनंग
 रुडासनस्थं बुद्धं नमामि सततं अमिपसिद्धि ॥ ५ ॥ सिद्धा
 स्वसि सी गरुडा गका रजा विपज्य किर्ति मुजां मोभवर हेम रात
 निवहि स्यामा भवरा कगात जोधं मोवलः दास्य मोष मभयं
 भुपत्वं मुद्रा किता लवं देरत किर्ति स्वकुरि नां तजान पंचात्म
 कं ॥ ६ ॥ इति पञ्चतथागतस्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

(१) शशधर मिपुमु
 नमो मन्त्रनाथाय ॥ ॥ शशधर मिपुमु स्वज्ञ पुष्टाङ्ग पा-
 णा मुरा निर मति सत्तं प्रद्योतिरं कुमारं ॥ पुष्टुदत्त मदमोक्षं प-

२०
 २५
 ३०
 जपना यताथं कुर्मानि दहन रक्ष मन्त्रा पोमं नमामि ॥
 ॐ नमो विष्णुनाथाय ॥ गणानां गणार्पितश्चैव एक दत्त त्रि-
 तोचन वज्र सत्त्व भुवनित्यं वरदाता विनायकं मनवाञ्छा पू-
 जितं सर्व नाप विघ्नहरं देवा गणानां गणार्पितश्चाहा ॥ ॥
 ॐ नमो म्यामि महाकाशय ॥ सर्व संपत्तिदायकं सर्व त्रैलो-
 क्य नीलं अष्टनागं दशभुजं मुख वीर कमान कर्ति मेखन
 व्याघ्र चर्माय वस्थिताय सवारुहा मुराडमाला अनु कीर्ति क-
 पाल स्व कोप विग्रह सुदं प्रकृति निर्मलं भावाभावनमकना-
 थं जगत सासन लक्षकं भावाभाव विपु मुक्तं बुद्ध सासन रक्ष-
 कं कीर्ति कपातिकं नाथं महा कलनं नमाम्यहं ॥ ॥
 बुद्धं त्रैलोक्यनाथं सुरनर नापतं पारससार तिर्गाः धीरं गां
 भोर्प्यवत्तं भवत्त गुरा नाभ धर्म राजा भिषक्तं तृणा मो-
 हाधकारं कलि कलुष हरं कामले भागवत्तं तवदे शाकरि सिंह
 प्रणामित शिरसाः सर्व कलनं नमामि ॥ ॥ हिकारं संभवता
 थं करुणा स्त्रीगंधमानसं अमाप नातनामानं लोकनाथं नमाम्य-
 हं ॥ ॥ हेलवी परमं देवं कार्प्य सिद्धि विनायकं स्वभाग्य रू-
 पेसम्पत्त देहि मे सुख संपदं ॥ ॥ ॐ नमो श्री वज्र महा काला-
 य ॥ कृष्णा वरा ममारु बुद्ध सासन रक्षकं कीर्ति कपातिकं
 नाथं महा कलनं नमाम्यहं ॥ ॥ श्रीनन्द पुराडरीक अन्नर

कलशं चामरं मच्छयुक्तं चंद्रवं हेमदत्तं रत्नशोभो उभया
 नो हस्तौ वरगौ शोभं गोकन्या शंस भौरदधिफल कुसुमं याम
 कादापमाना मुन्या सरथनीराजा वशुधुशोभाधिर ॥ २ ॥ अमात्या
 मा वलिव्यास मार कंसो तथैव च कृष्ण पशुरामं च हनुमत्त
 चित्राणा अहं व्यादोपादि शीता नारा मनोवरी येने पं
 चकन्या स्मरणा नित्यनित्यापावनास्मन् गमनं च अथ गा
 भाय क्षमाय भजरापच शत्रुपक्ष विनाशाय पुनराय गमन
 पुनराय गमरां च ध्वजं ध्वजं राज पद्मं ध्वजवर नमिर्नलोचनामच्छ
 सुच्यं वाराहि पूरार्ग कुंभ मुनिवर वचनं वज्र घराठा निधानां बुद्धा
 नां प्रातिहार्य सुरवर नमिर्न हास्य नास्य निरास्य तुस्त्वा भवार्ग
 सिद्धि विमल सुमरसु मङ्गलं नो भवता ॥ ॥ इति विश्वकर्मा
 स्तुतिस्तोत्रमाप्तम् ॥ ॥

() मञ्जुश्रीलोकनाथ

ॐ नमो मञ्जुनाथाय ॥ ॥ मञ्जुश्रीलोकनाथ जिनवर मकुनोजैव
 लंबोदिसत्व मेनेया वज्रपाणि सुखवा हंकरा गह्वरो भद्रपा
 नो बुद्धो वैलोचना द्या त्रिभुवन नमिर्न छिर नीषे दोषाः स्तुत्वा
 सर्वार्थ सिद्धि विमल सुमल सु मङ्गलं नो भवता ॥ १ ॥ हृत्तो
 हंकार वज्रो यस्य पीत दमको वज्र घराठा हस्ता पीता हा रा हंश
 नो रिपुगण मधना टक्कि राजो महिमा अधोभ्य रजकेणु प्रति

दिन मचरे गन्ध हस्तिजमाविः स्तुत्वा ॥ २ ॥ सङ्घं वैलोच
 वन्धु गुरागुरा नित्यो बोधिचित्त सुचित्त बुद्धो सारेन्द्र
 राजो विविताजिनगुरो हंरुको नीन गन्ध बुद्धो सारेन्द्र रा
 जो विदिन जिनगुरो सर्व सत्त्वानुर्कषाः स्तुत्वा ॥ ३ ॥
 पुञ्जा बूडावनारा नदनुज भुक्ति सावसंभारभारमारीचि
 मारमारा सकल भयहरा पीतवर्गा विपत्ता मायूरि माम
 कीन क्षाणितारिपुगुरो पाराडरा नोचनार्थः स्तुत्वा ॥ ४ ॥
 गांधारि नाङ्गुलीच भुजत हितकरा खड्गपाशा कुसया नाराहि
 वज्रहस्ता असिपरशुवरा कर्म भातेधरीच केयुरी शानस
 रा ध्वजेन हितकरा खड्गपाशा वलीचः स्तुत्वा ॥ ५ ॥ दीना मा
 ल्या गुणीना पठित जिनवरे सारि धुपवज्रा वेतानि ध्वजभव
 याः प्रहसितवदना स्वर्गने आर्यतास रस्मिबुद्धस्य बोधि सक
 ल भयहरा सारिधि दीपवज्राः स्तुत्वा ॥ ६ ॥ वैलोचन धर्म
 चक्रं पठित जिनवरे पर्वते गूढ कुते श्रावत्यां बुविनीच ह
 पिता हत सति कोशने बोधिबुद्धा श्रीमतां दावतारा सुरवर
 निमित्तं श्रीफलं सैरव चक्रं स्तुत्वा ॥ ७ ॥ ध्वजं ध्वज गदपद्मं
 ध्वज रानीतं नोपनामदसूच्यं वाराहि पूरार्ग कुंभ मुनिवर व
 चनं वज्र घराठा निधानं बुद्धानां प्रातिहार्य सुरवर नमिर्न हा
 स्य नास्य निरास्य तुस्त्वा ॥ ८ ॥ इति मञ्जुनाथकं समाप्तम् ॥

॥ श्रीगौरी कथं भज्येति सुपाठ्य ॥

[illegible]

ॐ नमो बुधाय ॥ ॥ ॐ कोरात्पन्न शक्राभं मध्यं सिंहासनस्थी
॥ १ ॥ बोध्यं मुद्रासंयुक्तं वैरोचन मुनिनमः ॥ १ ॥ ॐ कोरात्पन्न
नोनाभं पूर्ण गजासनस्थितं ॥ अस्पर्श्या मुद्रा युक्तं अक्षोभ्य
श्रीघनं नमः ॥ २ ॥ वां कोरात्पन्न हेमभं दक्षिणा अश्वगाह्यं ॥
वरद संयुक्तं पुष्पं नमामि रत्नसंभव ॥ ३ ॥ ह्रीं कोरात्पन्न रक्ता
भं पश्चिमे मयुरासनं ॥ ध्यानमूर्तिं वर्णनामं अमिताभ मुनिनमः
॥ ४ ॥ खं कोरात्पन्न श्यामभं उत्तरे गरुडासनं ॥ अभय मुद्रा सं
युक्तं नमामि अमोघशिक्षिणम् ॥ ५ ॥ रोचना मामकिञ्चैव पाराड
रा नारनिता ॥ अम्हादि कोरासंस्थितं धनुर्वीर्यमानमः ॥
६ ॥ निराकार निरंजनं प्रत्येकज्योतिर्दीपनं ॥ चैवमधारस्थितं
देवः वज्रसत्त्व नमोस्तुते ॥ ७ ॥ इति श्री पंच मुद्रादि विनाक्षर
स्तोत्रं समाप्तम् ॥ ॥

(५७) नेमासिमञ्जनावायनेलोप

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ त्रिलोक्याधिपति
भय ॥ प्रसाकृत्वा तु मे पादोनन श्रीमन्नाथकं ॥ ॥ मोक्षि
ज्योतिः परं नैता पारिमिहा सनास्थितं ॥ वीरिसत्त्व नमस्तुते नम
वी० ॥ २ ॥ लोके धरजगते स्वामि अभिताथ मोक्षि परं ॥ द्वेषमा-
हनकाय्ये नमस्वी० ॥ ३ ॥ सर्वगत्य न पातालौ सर्वसत्त्व उधार ॥

महा पाणि महावीरं नमः श्री० ॥ ४ ॥ त्रैलोक्य सर्वसत्त्वकं सर्व
जनसिद्धिफलं ॥ मञ्जुश्रीं महावीरं नमः श्री० ॥ ५ ॥ दीप्त
श्रीं विनायकं नमः महाभयकरं ॥ प्रज्ञापारिणातुरनाम्ने नमः
श्री० ॥ ६ ॥ रत्नमकुलशोभाय राजपुष्टकदस्तावरं ॥ अनुभा
रि मञ्जुश्रीं नमः श्री० ॥ ७ ॥ पूजनीयं तमञ्जुश्रीं पुष्पधूप
सहितं ॥ वाद्यसर्वसुमङ्गलं नमः श्री० ॥ ८ ॥ विद्यानां निदा
राजत्वं सर्वविद्यासिद्धिफलं ॥ सर्वसत्त्वहिताय नमः श्री० ॥ ९
॥ चन्द्रसूर्यसुमराडितं बहुत्येज सुशोभितं ॥ इहत्येज मञ्जुश्री
त्वं नमः श्री० ॥ १० ॥ मञ्जुश्रीं जगत्स्वामिं कार्त्तिकेनेभिर्क्षितं ॥
नेपाले मराडितं तथैव गुरुत्वं चरणां नमो ॥ इति धर्ममन्त्राचार्य
महर्षि विद्यातवरात्रमनापुत्र ॥ ॥

(१६) कारिजदेशमुभयं

नमो बुद्धाय ॥ ॥ कारिजदेशमुभयं सुगतस्वर्यभुजोतिमय
कनकलुवर्गादुरिसुदेहं ॥ स्वर्गाभरनाथवरदं मयविश्वनाथं
सर्वजगत्पतवपादयुगं नमः ॥ १ ॥ वारुणादिगोस्थितमुनि
अपरिमितायुध्यानमुद्रामाश्रयभं परिशोभमानं ॥ कर्मादिदं
जगतनाथसुमत्सुनाथं सर्वजनं ॥ २ ॥ पूर्वदिशिस्थितशम्भु
पवनदस्ताभुद्राआकाशवराद्युतिमयसुशोभितं ॥ विद्यादि
नसुगतनाथसुमुगुरुत्वं सर्वजं ॥ ३ ॥ याम्यादिशिस्थितसुत

शान्दीस्तिसुदेहं सुव्यनस्ता परदानं समुद्रपुत्रं ॥ रत्नादि
कनकभातधनाधिपश्च सर्वजं ॥ ४ ॥ गिदिभमोपपन्न
दं अभयप्रतापं ॥ स्वामाभवरननरव्यादेहसुमत्सरा ॥ सि
द्धादिदं सकलसाधनं विश्वभातं सर्वजं ॥ ५ ॥ इति श्री
बुद्धभट्टारकस्य वीरवृत्तान्तसमाप्तम् ॥ ॥

(१६) सकलदेवताणां स्तोत्रं

नमो रत्नत्रयाय ॥ ॥ गुरुबुद्धगुरुभवं गुरुगुरु
स्तथैव न ॥ गुरुबुद्धनरथैव गुरुसर्वनामाभ्यहं ॥ १ ॥
विश्वनाथजिनबुद्धविश्वभद्रजगत्गुरु ॥ विश्वनाथसदाबुद्ध
विश्वमुनिनमाभ्यहं ॥ २ ॥ प्रज्ञापारमितानित्यं प्रज्ञारूपं निरु
प्यतां ॥ प्रज्ञाभावं सदाबुद्धे प्रज्ञामुनिनमाभ्यहं ॥ ३ ॥ जौह
श्वरं शिरं सान्नं अमोघगुणसागरं अमिताभकृतं मोक्षिणमामि
अमोघपासनं ॥ हिंकारं ईश्वरनाथं करुणास्त्रधामनामं अमो
घपांसनामानाथं लोकनाथं नमाभ्यहं ॥ ४ ॥ नमस्ते पञ्चकु
स्तां जिनधातुकरदकां ॥ मध्ये वैलोचननाथपञ्चकुस्तं नमा
भ्यहं ॥ ५ ॥ स्वयंभूवविनिष्क्रम्य पुगत्रयजनान्वं ॥ वीधि
सत्त्वकलोपुद्राशक्तिरसिंहसुपासय ॥ ६ ॥ नमस्तु पुरुषोत्तम
नमस्ते पुरुषोत्तम ॥ कृताजलिं करास्थामो धर्मराजं नमाभ्यहं
॥ ७ ॥ वसुंधारासदानन्तासारिद्रनवतारिणी ॥ साधनोपाय

२०
 १५
 ०
 ५
 ०
 कपुताः नक्षत्रीसिद्धिवा प्रदा ॥ ८ ॥ नमस्तारे नुरे वीरे नुना
 रे भयनासनी ॥ नुरे सार्वा नुरे कर्तुं स्वाहा कारं नमाम्यहं ॥ ९ ॥
 सर्वभाव मकं नला योगिनी जाननायक ॥ योगास्वर जगेन्नाथ
 जगत् गुरु नमाम्यहं ॥ १० ॥ ज्ञानदाकिने महादेवी सहजानन्द
 रूपिनि ॥ प्रज्ञा ज्ञाने स्वरूपात्मा वन्देहं मोक्षदायिनि ॥ ११ ॥
 विश्व व्यापिन् महाज्ञानं सर्वा मणि सुसंस्थितं ॥ कृपा कौटु म
 हारोद्रं श्री सत्वरं नमाम्यहं ॥ १२ ॥ आनिवा सनसस्थापिः
 कन्यारा मुकुता जोरं ॥ आनि कां न समादोयं श्री सत्वरं प्र
 रा नमाम्यहं ॥ १३ ॥ नत्ता श्री वज्र वाराहिः सर्व भान प्रमोक्षिनि ॥
 मार विष्णु सति देवी बुद्धत्वं फलदायिनी ॥ १४ ॥ नीलवर्ण महाधा
 चतुर्वर्गा दिगं वर ॥ नैरात्मा निगितां नित्यं हेव नु प्रणामाम्यहं ॥ १५ ॥
 शुन्यता करुणात्मानं त्रैधातुकं नमस्कृतं ॥ ज्वलन् कन्याग्निनेत्रजं
 नमस्कृतं योगिनि ॥ १६ ॥ मञ्जुधार्य महारीं भयं धानु गतां जितं
 ॥ सर्व सिद्धि स्वरनाथं वादिराज नमाम्यहं ॥ १७ ॥ गरापति भूदरं
 वा विष्णु राज विनायकं ॥ सर्व विष्णु हर देवं गरापति नमाम्यहं ॥ १८ ॥
 कृष्ण वरुण समाकृष्ट बुद्धत्वा सन रक्षकं ॥ कीर्तकपाल धरनाथं
 महाकालं नमाम्यहं ॥ १९ ॥ नमस्त क्रौञ्च राजतां सर्व दुष्ट नि
 तारणां ॥ त्रैलोक्य विजयादिनां दश क्रौञ्चा नमाम्यहं ॥ २० ॥
 इन्द्रादयो महावीरा लोकपाला महाविका ॥ दश वक्त्रा स्थिता वीरा

लोकपाला नमाम्यहं ॥ २१ ॥ अष्टभुजा स्थिता देवी अष्टभुजा
 निवासिनी ॥ अष्ट भोर व संपुक्त अष्ट भात्रिका पते नुन ॥ २२ ॥
 ॥ न नृत्यश्च भिजं लोकेश्वर जगत् गुरु ॥ नवरत्ना धर्म वीरं अ
 ष्ट सिद्धि वदं नमिः ॥ २३ ॥ रक्ताशं श्री महादेवं सर्व दुष्ट निवा
 रणं ॥ वानिर्य सिद्धि दानारं भीमराजं नमोस्तुते ॥ २४ ॥
 नमोहं द्रोणी दे देव्यै सर्वा नंकार भूषिणि ॥ चण्ड चण्डिणी
 देवी स गरां प्रणामाम्यहं ॥ २५ ॥ इति श्री सकल देवता भट्टार
 कस्य श्री नैरात्मादि सकल देवता पंचमस्तोत्र समाप्तम् ॥

(२०) निर्विकल्पे निरात्मने

नमः श्री प्रज्ञा पारमिताये ॥ ॥ निर्विकल्पे निरात्मने निरवद्य
 निरञ्जने ॥ नित्यानित्य निर्विकल्पे प्रज्ञा देवी नमोस्तुते ॥ १ ॥
 बुद्धानां जननि शानि गोविमल पितामहि ॥ प्रपन्ना माहि सत्त्वार्ताः
 प्रज्ञा देवी ॥ २ ॥ मानमन जगत्माता इति सं जपतां नृणां मनोरथ
 प्रदेशुः प्रज्ञा देवी ॥ ३ ॥ नक्षत्री स्वमासिक कल्याणिः श्रीद्धिः सद्वा
 पुतिः स्फुटिः ॥ सर्व स्वरूप सर्वेशः प्रज्ञा देवी ॥ ४ ॥ लोकोत्तरे
 लोकि केचः प्रज्ञा पारमिता स्तुति ममा प्रार् ॥ ५ ॥ इति श्री प्रज्ञा पारमिता स्तुति ममा प्रार् ॥

(२१) जगत् कृत्य स्वयं भूवे

श्री स्वयं भूवे नमः ॥ ॥ जगत् कृत्य स्वयं भूवे जगत् कृत्य स्वयं भूवे नमः ॥

अनुर्विप अरातकं स्वयं भुवं नमाम्यहं ॥ १ ॥ सहस्रपत्र पंकजो
 लसत्सकीर्णकोरु भवं ॥ समस्त कामना मुदः स्वयं भू ॥ २ ॥
 सहस्र भानुरञ्जनं नियुक्त कोटि चन्दनं ॥ स्वराद्यलो कवन्दनः स्व
 रं भू ॥ ३ ॥ त्वमेव एक राजस गुरोर्गच्छति सरणिसे ॥ त्रि
 भानुकं तिभावस्यः स्वयं भू ॥ ४ ॥ अर्पक ईष्य पद्मदाः मिमां
 सितु नरसक्तवान् ॥ प्रभासमान मिक्षिता स्वयं भू ॥ ५ ॥ इति
 श्री स्वयं भू शोच समाप्तम् ॥ ॥

(२२) पूर्णकला निधिसोनेभ

ततः श्री धर्म धानुवागीश्वर ॥ ॥ पूर्णकला निधिसोनेभ निभदेव
 मृगपत्यासन योग ध्यान वेदे सुराधिशः श्री वैरोचनः श्री धर्म धानु
 महं प्रणमामि ॥ १ ॥ इन्दुनील धुति भास्वर पतदति स मारुत भुय-
 स हस्त ॥ नोमि श्री अक्षोभ्य पूर्व दिगस्थाः श्री धर्म ॥ २ ॥ वाति
 नरासन चामिक शर्भ लोके वर प्रद याम्यमपीशं ॥ वन्दे श्री रत्न
 संभवनाथः श्री धर्म ॥ ३ ॥ पद्मरागनिभ पादुमाभिसं ज्ञान
 मुद्रा वर मयुरा रुढ ॥ नमोस्तु श्री अमिताभ मुनिदुः श्री धर्म ॥
 ४ ॥ ताक्षासन परिलालंकृत श्याम मुत्तश सापति मभयक-
 र ॥ श्री अमाप सिद्धि जिनने महं श्री धर्म ॥ ५ ॥ सर्वदेतालय
 श्री वज्र धानु शुद्धन भोपति विश्व व्यापितं ॥ त्रैधानु सर्व भवागम
 तिस्रं श्री धर्म ॥ ६ ॥ इत्थं भक्त्या मया यत तवाग्नि तोत्रं कृतं स-

या ॥ पद्मादोयो परा वत्क्षम स्वमुनिदुः ॥ शुद्धं वा शुद्ध
 मेव नः शतमहर्षि वैभ मुने ॥ इति शक्ति रक्षा मा नीक
 नार्थ ॥ ७ ॥ इति श्री धर्म धानुवागीश्वर भट्टारकस्य रत्न
 पुष्पाञ्जलिः समाप्तम् ॥ ॥

(२३) श्री धर्म धानु मरिासं

नमो श्री स्वयं भूवे ॥ ॥ श्री धर्म धानु मरिासं करुणा वना-
 रं नागदिवास हृद पंकज कीर्णकाक्षं ॥ नैरञ्जनं निमग्नं
 स्वसमं महं मं ज्योतिश्च रूप मसमं प्रशतोस्मी नीतां ॥ १ ॥
 शुल्बा समं महिमते श्रवनेन दृष्ट्वा नेत्रेण रूप मरिासं चरणौ
 नगत्वा ॥ हस्तेन पूज्य चरणां मनसानुचिन्त्यः ज्योतिस्वरूप ॥
 २ ॥ किं वर्यायामि तव रूप मचिन्त्य मेतत् जिह्वेन्द्रियेण
 भवादित्य भूतिं करोमि ॥ दोषोस्तु दोष अधवा भवादित्य एक
 ज्योतिस्वरूप ॥ ३ ॥ ज्योतिस्वरूप नुतिमिप कृतिं पठतिः निह्ने
 शशुद्ध वेमन हृदय स्वभाव ॥ पाठोज करि कि कना मृत
 माप्नुवन्तिः स्वायं भूवेति रुचिरे विधिलयते ॥ ४ ॥
 इति श्री स्वयं भू पुरोरो इति तदागत कृतं स्वयं भू रत्नो
 वर समाप्तम् ॥ ॥

(२४) ज्ञान प्रजाता मम धानु नाथ

नमो बुद्धाय ॥ ॥ ज्ञान प्रजाता मम धानु नाथः पुराच स्वयं भू रूपं वर-

भारकूप ॥ विश्वाक्षित जगदादिबुद्धः वन्दे सदा ते चरणारविन्दौ
 ॥ १ ॥ वरों सजानं हिमवर्मवधः सिंहप्रवाहं मम पातु यत्न ॥
 हस्तिप्रहस्त प्रभरेशा राजं वन्दे स ॥ २ ॥ कुञ्ज प्रजातं क्षिप्रवाह
 दिव्यं अष्ट प्रहस्त नवरश्मि स्वार्थं ॥ हेनाथनेत्र जगतां हिमानु
 वन्दे स ॥ ३ ॥ श्रुतिप्रजातं हयवाह दिव्यं गङ्गायेत्येनं वसुहस्त
 दिव्यं ॥ पानं कुरुत्वं जगतां हिस्वामि वन्दे स ॥ ४ ॥ नञ्जाप्रजा
 तं भुजगास्तदिव्यं ॥ रागे चत्वेन वसुवाह भार यन्नाहिमेनाथ
 भवो विरक्तिः वन्दे स ॥ ५ ॥ अश्वप्रजातं विधिहस्त दिव्यं नो
 कं शुद्धः ख हरमेव रत्नाग्न ॥ पापं वदुःखं क्षय नास कर्ता वन्दे स
 ॥ ६ ॥ गजप्रजातं जगतां हिमानु पवमस्म दिव्या सितवर्णा देहं
 चक्राहि वामे वरदान मुद्रा वन्दे स ॥ ७ ॥ रुद्रप्रजातां मभरक्ष
 मातं कामस्थ दिव्याङ्ग रागा भदेहा ॥ वज्राहि वामे वरदान मुद्रा व
 न्दे स ॥ ८ ॥ पौरुषप्रजातं जगतां हिमानु कामस्थ दिव्या मरुनाभ
 देहा ॥ पद्माहि वामे वरदान मुद्रा वन्दे स ॥ ९ ॥ अष्टप्रजातां मम
 पातु देवा ताम्रहृदि व्याहीर नन्दहा ॥ खड्गाच वामे वरदान मुद्रा
 वन्दे स ॥ १० ॥ ज्ञान प्रजातां मम पातु भस्वः सिंह हृदि व्याहीरिदा
 हन्दहा ॥ प्रजाच वामे वरदान मुद्रा वन्दे स ॥ ११ ॥ विष्णुदिनन्द
 नुतिभुज्यमाना निचिस्वरस्य प्रकरोति नोके ॥ हे बुद्ध मेत्वं प्रददा
 तु गोपातं वन्दे स ॥ १२ ॥ रक्षाजितं यद्गर्जति केतः नृपान भुमन्त

दिनेन सुतः ॥ ओजनमात्मा दहामि प्रपुनः वन्दे सदा ते ॥ १३ ॥
 इति श्री बद्ध बुद्ध चतुर्दश स्तोत्र समाप्तम् ॥
 (२५) श्रीमान्नाथ सौयंभू
 नमो रत्ननयाम् ॥ श्रीमान्नाथ स्वर्णभू रमित स्त्रिवर्मा पाभिः
 दीभ्य बुद्ध श्रीमान्नाथ वैराचनाय श्रीमान्नाथ मुनिराज वज्रसत्त्व मुसत्त्व
 श्रीप्रज्ञा वज्रमान्नी सत्त्व सुभक्ति आर्धेतरादिकास्ताः कल्याणा व
 क्रियासु कर्म्मिदमे सरतां निष्कृता नोमिहर्ता ॥ १ ॥ देवीतं पत्न्युत्त
 मा जगतापति हृदया वज्रविदा विशासा उग्रपीमा वरदा देवी किटि
 वर वदना मानुकार वत्तरातां ॥ कोटिरवाक्षदेवी स्वगता भारप्रजा पद्म
 रक्षा सुरक्षा कल्याणा ॥ २ ॥ रत्नद्वीपा करारयो मरिचा कमुत्रि
 तमने श्रीमिपथि शिखिन विरुवभू श्रीक कल्पे कनक मुनि मुनी
 काश्यप शाक्यसिंह ॥ वृत्तपुत्रानात्मा भूत शकर दशवर्णा पारमहा
 त्मसिंह कल्याणा ॥ ३ ॥ श्रीमान्नाथ वलोकितेश्वर भवरो भित्रीयो
 नंतर्गज नोद्ध गामना भद्राक्षितद्रु डन गगनो विभागे महानी ॥
 सर्वा धाति वराय्यो कुलिश वर धरा मञ्जुनाथो महेश कल्याणा ॥
 ॥ ४ ॥ बुद्धाभिष्ठान कंदोर्ध्व भद्र वर कम्पने नागनासो भिधत्ते मत्वा
 नाथो वराय्ये निजभुवन वराणा जोतिरैकं ससर्ज ॥ रत्नेश पद्म मुता
 विहरीते गतनं पद्म बुद्धात्मकोमो कल्याणा ॥ ५ ॥ याप्रज्ञा गुप्तरसा
 त्रिदल कमलजा मञ्जुदेव प्रकाशा वैराग्या पीठ कसा बहुविध भगि

ता वसुनिधाः सवद्या ॥ दुर्गाया मार्गं कुरुता कृतिनति नरदा प्रादु
 रासि दशाधेः कल्या ॥ ५ ॥ भैरवे शोभादनुज्यो वनमह दुर्गिर-
 ता सुदृश्य रातां ज्योतिः संगम्य शब्दां भवजला भित्ति रत्ने निद्रे-
 शराज्य ॥ श्रीचन्द्रवीतरागाकुल कुलमहिमा व्यक्त रूपा स्वयंभूः
 कल्या ॥ ६ ॥ त्रानुगो दुष्टकशा नपसि धृतमति लोकाभाज-
 थाभुत् पञ्चाका स्वर्गजा भित्ति नतद्वेवा वाग्मति पुनतिरे ॥
 श्रीगोः कर्णेश्वर सपितृ जनहित कृतां दाग्मीत संगमि स्मीन्ः कल्या ॥
 ॥ ७ ॥ कुर्धनाग धिराजं कुलिक समभिधां त्रासयन् किलाद्यो
 लोकाना भद्र हेतो समभव दुर्गिर श्रीगोरी वीतराग श्रीसामंता
 ध भद्रो ध्वज कृतिर भवत्कील नामा मेहेसः कल्या ॥ ८ ॥
 पात्रतं सर्वपायं कमला विलधराः वज्रपातो जिहते लोकनां र-
 क्षनाय पुन रषि कलसा कारतो शोव भूव ॥ श्रीमान् सर्वस्वरा-
 ख्यो जिनवरतंतयो शुल सराहा दधानः कल्या ॥ ९ ॥ दुर्वोधं म-
 ञ्जुर्गते व्यजन सुस्वरत्नं कामिनि क्षुप्रवोधं येसो प्राप्त मभानं
 कावेवन मकरो मञ्जु देव ततोपि ॥ स्वासं सधाय भव्यं सकलगु-
 रा प्रदं प्रापगते सशंसाः कल्या ॥ १० ॥ मत्स्याङ्गा भिराषी
 सकरवरणा विष्कंभिनाम सुसत्त सांकार परनिर्दो रदददरिन्
 वलान्यातुं शास्त्रा यया ज्यो ॥ निकास्यां शान्फोरां दो शुर दुति
 समभु दीतरागो र्यरागः कल्या ॥ ११ ॥ सशी माद्यो दयानो व्यत-

मानदास सुगत दासया सकलक
 आशा सफू-कुथियात उपहार !

WEIGHTS AND MEASURES.

INDIAN BAZAAR WEIGHT.	BENGAL BAZAAR WEIGHT.	BOMBAY BAZAAR MEASURE.	BRITISH AVOIR. DUPOIS WEIGHT.
4 Sals = 1 Tola. 5 Sals = 1 Karsha. 4 Karshas or = 1 Chatak. 5 Tolas = 1 Powah. 4 Powahs = 1 Seer. 5 Seers = 1 Masal. 8 Masals or = 1 Maund. 40 Seers = 1 Maund.	5 Chataks = 1 Kasha. 8 Kashes = 1 Khumda. 8 Khumdahs = 1 Meh. 8 Mehs = 1 Pak. 8 Paks = 1 Peco. 1 Peco = 1 Kani. 8 Kani = 1 Arbi. 20 Arbis = 1 Bish. 16 Bishes = 1 Kabah. 16 Kabahs = 1 Maund. 8 Dons = 1 Maund. 20 Dons = 1 Sall.	36 Tanks = 1 Tipari. 8 Tiparis = 1 Seer. 4 Seers = 1 Payil. 76 Payils = 1 Phara. 8 Pharas = 1 Kandi. 63 Kandis = 1 Mada.	16 Drains = 1 Ounce. 16 Ounces = 1 Pound. 14 Pounds = 1 Stone. 8 Stones = 1 Quarter. 4 Quarters = 1 Hundred weight. 20 Hundred weights = 1 Ton.
JEWELLER'S WEIGHT.	BENGAL LINEAL MEASURE.	BOMBAY MEASURE OF LAND SURFACE.	CAPACITY.
4 Dhans = 1 Kati. 2 Katis = 1 Anna. 8 Annas = 1 Manna. 1 Manah = 1 Tola. 16 Annas = 1 Phar.	3 Jotes = 1 Angul. 4 Anguls = 1 Munti. 3 Muntis = 1 Bhand. 8 Bhandas = 1 Hat. 3 Hats = 1 Gaj. 2 Gaj = 1 Dhan. 2000 Dhans = 1 Kosh. 4 Koshes = 1 Yojan.	324 Square Cubits = 1 Kath. 60 Kathas = 1 Pind. 60 Pindas = 1 Bigha. 6 Bighas = 1 Kishan. 20 Kishans = 1 Chakkar.	4 Gills = 1 Pint. 2 Pints = 1 Quart. 4 Quarts = 1 Gallon. 2 Gallons = 1 Peck. 4 Pecks = 1 Bushel. 8 Bushels = 1 Quarter.
INDIAN TIME.	BOMBAY CLOTH MEASURE.	BRITISH LINEAL MEASURE.	BRITISH LINEAL MEASURE.
6 Angul. = 1 Viper. 2 Viper = 1 Pal. 6 Pal = 1 Danda. 20 Dandas = 1 Dhan. 7 Dhan = 1 Gaj. 20 Gaj = 1 Dhan. 1 Dhan = 1 Kosh.	8 Anguls = 1 Tera. 24 Teras = 1 Gaj.	12 Inches = 1 Foot. 3 Feet = 1 Yard. 5 1/2 Yards = 1 Furlong. 40 Poles = 1 Furlong. 20 Chains = 1 Furlong. 8 Furlongs = 1 Mile. 1760 Yards = 1 Mile.	12 Inches = 1 Foot. 3 Feet = 1 Yard. 5 1/2 Yards = 1 Furlong. 40 Poles = 1 Furlong. 20 Chains = 1 Furlong. 8 Furlongs = 1 Mile. 1760 Yards = 1 Mile.
INDIAN LIQUID MEASURE.	BENGAL GRAIN MEASURE.	MADRAS LOCAL WEIGHT.	BRITISH MONEY TABLE.
4 Chataks = 1 Powah. 4 Powahs = 1 Seer. 5 Seers = 1 Maund.	5 Chataks = 1 Kasha. 4 Kashes = 1 Pak. 32 Paks = 1 Maund.	120 Grams = 1 Tola. 3750 Grams = 1 Panna. 5 Pannas = 1 Seer. 5 Seers = 1 Vik. 1 Vik = 1 Maund. 20 Maunds = 1 Kasha.	4 Farthings = 1 Penny. 12 Pennies = 1 Shilling. 20 Shillings = 1 Pound. 2 Shillings = 1 New. 2 Shillings = 1 New. 6 Pence = 1 New.
INDIAN MONEY TABLE.	BENGAL PHYSICIAN'S WEIGHT.	MADRAS BAZAAR MEASURE.	BRITISH MEASURE OF LAND.
1 Pais = 1 Pais. 2 Pais = 1 Pais. 6 Pais = 1 Pais. 4 Pais = 1 Pais. 12 Pais = 1 Pais. 15 Pais = 1 Pais.	4 Dhans = 1 Kati. 16 Katis = 1 Maund. 16 Maunds = 1 Tola.	8 Chataks = 1 Paddi. 8 Paddis = 1 Maund. 5 Maunds = 1 Phara. 16 Pharas = 1 Kandi.	244 Sq. Ins. = 1 Sq. Foot. 9 Sq. Feet = 1 Sq. Yd. 1210 Sq. Yds. = 1 Acre. 4 Acres = 1 Acre. 640 Acres = 1 Sq. M.
INDIAN MONEY TO STEPLING.	BENGAL CLOTH MEASURE.	UNITED PROVINCES MEASURE OF LAND.	BRITISH TABLE OF TIME.
1 Anna = 1 Pais. 12 Annas = 1 Pais. 1 Pais = 1 Pais. 1 Pais = 1 Pais.	1 Angul = 1 Gaj. 6 Gaj = 1 Kati. 1 Kati = 1 Gaj.	20 Kishans = 1 Bigha. 20 Bighas = 1 Bigha. 20 Bighas = 1 Bigha.	60 Seconds = 1 Minute. 60 Minutes = 1 Hour. 24 Hours = 1 Day. 7 Days = 1 Week. 4 Weeks = 1 Month. 12 Months = 1 Year. 365 Days = 1 Year. 366 Days = 1 Leap Year. 52 Weeks = 1 Year.
INDIAN MONEY TO STEPLING.	BENGAL MEASURE OF LAND SURFACE.	PUNJAB MEASURE OF LAND.	
1 Pais = 1 Pais. 12 Pais = 1 Pais. 1 Pais = 1 Pais.	1000000 = 1 Gaj. 1000000 = 1 Gaj. 1000000 = 1 Gaj.	9 Serai = 1 Marla. 40 Marlas = 1 Khar. 4 Kharas = 1 Bigha. 1 Bigha = 1 Bigha.	

नं २



REG. TRADE MARK

The
**ELEPHANT
EXERCISE BOOK**

64
Pages

No. 4

Price
0-2-6

Subject

मानदास सुगत दांसया संकलन
बाशा सफू-कुथियात उपहार !

Name

School

College

Class

Year

T. P. M. Co. Ltd.

THE BIHAR COMMERCIAL AGENCY, MUZAFFARPUR.

मानदास सुगत दासया संकलनं

आशा सफू-कुथिमात उपहार !

पतपतसाः मानपत्रे सुनिर्लेः पूर्णिगर्भा रव्यवोद्धाः भ्यगमीऊः तिर्लेतं
स्थापया मासचास ॥ गन्धेशोर्निरागो भवदखिल सुदुःखनाशो
गुतस्थः कल्या ॥ १३ ॥ शंसदध्यं महर्षो स्मरदीगितसुतं विक्रिमा
प्राप्तसिद्धोः यस्मीलेकि श्वराजा विनिर्लेह हस्या प्रदुराशि भुवगर्भ ॥
यस्याशं स्थापयित्वा निजपुन मगमत् विक्रमेभीर्भधानं कल्या ॥
॥ १४ ॥ नागस्तार्क्ष्यरायस्माः दलभदनुसुरन् पुन्यनामा सुतीर्ण
पार्वत्या यत्रतो कलह निरसने शानतिर्था वसान ॥ नपूरुद्देशा
दुर्गाभिलखित मनसा संकलारय स्त्रिवेशः कल्या ॥ १५ ॥ ति-
र्षो राजा भिदानो पदल भदनि पाल राज्ञं विरूपो न्यायनेन
यस्मात्सुरपति सदनं प्रागभनकामोतिर्था ॥ वज्राचार्य नपश्यं यद
भिषव कृताः संगतं निर्मलाख्या कल्या ॥ १६ ॥ दीनेरा यनिधानं
भदपविगिपो राक निधान तिर्षोः शैव वलानुमेकं यदुह कमतिभि-
ज्ञानसंज्ञक तिर्था ॥ चित्रामन्याख्या तिर्षो विचिषदभिषव यनप्राप्ता
भिलोषः कल्या ॥ १७ ॥ यत्रस्ताने सुदाप्ते तिसमनिधममु धस्य
प्राप्तेद तिर्थाः प्रादार्संज्ञाक्षरां य स्तपयसि सतां तिर्षसंज्ञना-
या ॥ यत्रस्तान्वावलास्या सुरपति जयदी जयतिर्षो यतिर्था क-
ल्या ॥ १८ ॥ विद्याधरो रव्यदेवो गगगा कुलपादा योगिनो
वय पूर्वा हारीति श्री हनुना सगगा पीत महाः काल वृद्धा खर्व
या ॥ वसन्त्या यधरेव गहा ॥ मुखतरज्यानेनास्म द्युक्ता कल्या

॥ १६ ॥ वाग्मत्यां मूलपुष्ट प्रभृतय उपनिर्धारिता को सचेत्याः शं
 खोश्च स्थाश्च जलोचयतिरे ररितोश्चैत्यमद्वारकोशो ॥ फुलोश्चो
 दृष्टदेवी तदनुभगवतिः ध्यान प्राचादिसस्था कल्या ॥ २० ॥
 मञ्जुश्री पर्वतस्थानुचरविरचितो मञ्जु शोभास्यचेत्यः शान्तश्री
 निर्मितिषु प्रकृत वसतो यस्मिन्ना पुरिष्ट ॥ पुच्छाय चैत्यवयोत्प
 कठदनु पमः यत्र शाक्यपुराणां कल्या ॥ २१ ॥ आधारास्य हृद-
 स्य गगणा महीनातिविष्ट राजानाश्च नागश्चानन्दलोकेतः हरिहरिह
 रिषा हारनात्रेलोक्य नेशां ॥ लोकेश्वयाक्षमहो स्तदनु सपूजा सा
 भिधो लोकनाथो कल्या ॥ २२ ॥ हेवज्र संवरोसो सपरिजन गरा
 चतुर्वीरस्ति लोकैः वीरो योगां वरोसो धर्मविधनकरा द्वादहा की
 धराणा ॥ गुह्या नाद्या च सर्वे परिमित प्रमुखाः नामसंगिति व्याख्या
 कल्या ॥ २३ ॥ श्रीगर्वा प्रागत्य योसो सहितपरिजनः चन्द्र हासा सना
 दि दित्वा शोये कंदेस्मिन्ः पुरवर मकरोऽहो कै वासाय रम्य ॥ स्वस्तिभु
 नाय गम्यां सकल गिनारं प्रात्यजसंगुनाथ कल्या ॥ २४ ॥ सोखा व
 त्वाश्च वंगं तदनु जनीति पातने प्राग मधः शान्तैव या हरेषिः लालित
 पुरवरं प्रातिशोभते ॥ सश्रीमान् वज्रपाशा सजट धार ह्यः शीत
 पावक शोभा कल्याणाती क्रयासु क्वचिदपि सरतां नित्यतां नोभ्यहं
 ना ॥ २५ ॥ इति श्री कल्याण पंच वीमती स्तोत्र समाप्तम् ॥

(२६) वैरोचन महा शुद्ध -

नमो बुद्धाय ॥ ॥ वैरोचन महा शुद्ध वज्र शान्ते महारते ॥ वक्र
 तिन भास्वराये ध्येय वज्र नमोस्तुते ॥ १ ॥ अक्षोभ्य वज्र महा
 शानः वज्र धातु महा शुद्ध ॥ त्रिमराडन विवज्राये ध्येय वज्र नमोस्तु
 ते ॥ २ ॥ रत्नामण्येना भयः खवज्रा काहा निर्मल ॥ स्वभाव शुद्ध
 निरभः काय वज्र नमोस्तुते ॥ ३ ॥ वज्रा मेने महा राग निर्विकल्प
 ख वज्र धुक् ॥ राग पारमिता प्राप्ते माय वज्र नमोस्तुते ॥ ४ ॥ अमो
 ग वज्रां शुद्धः सर्वासा पोरपूरिके शुद्ध स्वभाव सन्तुस्त वज्र सन्त
 नमोस्तुते ॥ ५ ॥ इति श्री पञ्चतथागतस्तुतिसमाप्तम् ॥

(२७) पद्म वज्रा समागत -

नमो बुद्धाय ॥ ॥ पद्म वज्रा समागत मध्य वैरोचनास्ति ॥ नैमि
 गिमिदर्श युक्त धीन वरा नमोस्तुते ॥ १ ॥ पुनर्गह सुख्य धर्म
 संवेग निनाभ ॥ नेने दाने स्वतामं अक्षोभ्य यनमोस्तुते ॥ २ ॥
 दक्षिणे पद्म मशुर्धं चतपास्म करज्जर्भ ॥ वरद सर्व ह्येन नमा
 मिरत्न संभवं ॥ ३ ॥ पश्चिमे धर्म मुख्य धं यधराग सन प्रमं ग्या
 नमुद्रा धरं नार्थ अभितामं नमोस्तुते ॥ ४ ॥ उत्तरे पद्म मसुर्धं
 श्याम वरा भव प्रभं ॥ नमोस्तुते ॥ सिद्धिः सर्व गत रिपु गति
 ॥ ५ ॥ इति श्री पंच बुद्ध स्तोत्र समाप्तम् ॥

(२८) बुद्ध गीत —

नमो बुद्धाय ॥ ॥ कुराडन्दु पुष्प सँकाशदेहाः मत्स्य कमल सु-
सास्त्राणाः सिंह मासन धर्म मुद्रा नमामि श्रीवेरोचन नित्य स्म-
रणा प्रदक्षिणा ॥ १ ॥ उत्पल पुष्प सँकाशदेहाः पूर्व कमल विरा-
जिताः दक्षि मासन भुपस मुद्रा नमामि श्रीअक्षोभ्य मुनिवरं नित्य स्म-
रणा प्रदक्षिणा ॥ २ ॥ सुवर्ण गौर विकारा मुने धाम्य कमल सुसा-
भिना २ वाजि वाहन वरद मुद्रा नमामि श्रीरत्न सँभवं नित्य स्मरणा ॥
३ ॥ वाक्कर्क मराडन्न मदेना पश्चिम पद्म सुविराजिता २ वहि आसन
ध्यान मुद्रा भजामि श्रीअमृताभः नित्य स्म ॥ ४ ॥ उत्तर पीते श्री-
श्याम बदना सप्त नाग शृङ्गोभिना २ तक्षि जालन अभय मुद्रा न-
मामि श्री सिद्धिदायकं नित्य स्म ॥ ५ ॥ इन्द्र गुग नरु वर्य याज्ञे श्रा-
वणा पुरा निभाकर धनेस्तत्रक्षे गुरु वासरे विराजिभ श्रीवर योग
नरेन्द्र मूल बुद्ध गीत ॥ ६ ॥ नित्य स्मरणा भक्ति मानसा शृंग गीत
साहता देह मे जय अख गु प्रताप आयु आरोग्य संपदं ॥ ७ ॥ इति श्री
बुद्ध गीत स्तोत्र समाप्त ॥ ॥

(२९) अष्ट दल कमल

नमो बुद्धाय ॥ ॥ अष्ट दल कमल मत्स्य उत्भव प्रकासितं ॥ सिंह
आसन धर्म चक्र श्रीवेरोचन नमस्तुते ॥ १ ॥ पूर्व दिग गज आसन
नीलनगा सुशोभिताः भुपस मुद्रा ध्यानधारितं श्रीअक्षोभ्य नमोस्तु

ते ॥ २ ॥ दोक्षरा विग अश्व आसन पीत वर्णा सुशोभिता २ वर
दमुद्रा कांचानाभ श्रीरत्न सँभवं नमोस्तुते ॥ ३ ॥ पश्चिम दिग
मधुर आसन रक्त वैल्ह विराजितं ध्यान मुद्रा राय मुनिवर
श्रीअमिताभ नमोस्तुते ॥ ४ ॥ उत्तर दिग गज आसन
श्याम वर्णा सुनीर्मलः अभय मुद्रा नाग शोभित श्रीअमोघ
सिद्धि नमोस्तुते ॥ ५ ॥ अग्ने न्यादि चतु कोने चतु देवो मजा
ता लोचना मामाकि पाराडरा नारादेवो नमोस्तुते ॥ ६ ॥
जिन धातु क्षात्रिंस लक्षणा संपूर्णा देव नमो पद्मोपहार पूजितं
गन्ध मार नर पिता ॥ ७ ॥ चन्द्र सूर्य वागीश्वर लोकेश्वर नमो नमः
गणपीते महाकाल सर्व देव नमोस्तुते ॥ ८ ॥ शशि पराजित शिव
रे श्रीनेपाल वत्सर आषाढ कृष्ण तिथि नूतया भृशुवार संभु-
ता ॥ ॥ इति बुद्ध गीत समाप्तम् ॥ ॥

(३०) सर्व सुद्ध वर

नमो बुद्धाय ॥ ॥ सर्व सुद्ध वर मात्री सुरवर सिद्धि साधक मराड-
लं सरोज दिवकर पंकज दशकनं दिव्य माहित सुन्दरं ॥ १ ॥ वदि-
तामर मक्ष मराडन्न वासुकि वशु धाधरं उम्ह सतल विष्णु भव
सिव गार सर्व मनोहरं ॥ २ ॥ तनु नारुन सोभितं ननानि विधि भ-
वन वल तत्र सर्व पंचजिन वल धर्म व्यापित कल वल ॥ ३ ॥
पद्म पाणि पद्म लोचन पंकज सोभनं पुसुरिक माडारा के चम्प-

क शिखरसुगन्ध पूजनं ॥ ४ ॥ धर्मधारिण धीरधृतमनश्चा-
न रूपनमाम्यहं धूपगन्ध सुरतमनर्थ मोहितजनि अहं ॥ ५ ॥
भक्तमराडन भाव भक्ति कपूरन्य युगती गस वृद्धी दायकं पञ्च
जितपादवन्दितं ॥ ॥ इति बुद्ध गीत समाप्तम् ॥

(३१) बुद्धरूप शाक्यसिंह

नमो बुद्धाय ॥ ॥ बुद्धरूप शाक्यसिंह इन्द्रवज्रविहाराणां
ब्रह्मा विद्या मेहेश्वर स्तोत्र विधित पूजितं श्रीरत्नचैत्य
स्वयंभू सरराचरणां नमामि ॥ १ ॥ सहस्रभुजलोके भर
अनेग देव व्यापितं तारुजो जानव नाग अनेग मनुष्यन पूजि
तं श्रीरत्नचैत्य स्वयंभू ॥ २ ॥ कालिजल मञ्जुश्रीचेदिन
भुवधोपिता शास्त्री ३ पूरा स्वयंभू चैत्य देवस्य श्रीरत्न
चैत्य ॥ ३ ॥ धूप दीप गन्ध माल्या अनेग मनुष्यन पूजि
तं मुनि श्रीन पाव नाथ दारिद्र दुःख उधारन श्रीरत्नचै
त्य स्वयंभू ॥ ४ ॥ इति बुद्ध गीत ॥

(३२) श्रीस्वयंभूवकमल

नमो बुद्धाय ॥ ॥ श्रीस्वयंभूवकमल उन्भव अनादि बुद्ध नभो
प्रभं चतुरयुगयोग धर्म धातु विश्व भुवन सुव्यापिता ॥ १ ॥
नमोस्तु २ बुद्ध धर्म संघ शरणा समस्तकं ॥ ध्रु ॥ कलुष अगति
त नाग भवन्तु धर्म धातु महामुनि ॥ २ ॥ त्रिदश सुरणीत ब्रह्म

हरे हर चक्रवर्तिन हेश्वरं करुण कान्तिकं युरी मासि अहोरा
त्र प्रदक्षिणा ॥ ३ ॥ सरोजविकाशिन पञ्चजिनवर पञ्चज्ञान
स्वरूपे विमर पशतिक सकासक सगुणं गणनस शिरगज्यते ॥
४ ॥ महापातक अनन्तजन्म म दुस्कृतं मम अज्ञायानिरय गम
न नाश भवन्तु मोक्ष मार्ग सुगमते ॥ ५ ॥ इति बुद्ध गीत ॥

(३३) आदिचरणा विशी

नमो बुद्धाय ॥ ॥ आदिचरणा विशी पञ्चजिनवर पञ्चजगत
मनोहर ॥ १ ॥ शान्तिपूरि परमेश्वर तुम्ह बुद्ध सुभरानेजे सर्व
पाप हरण ॥ जनम जन्म तुम्ह सुभरन हरण ॥ २ ॥ तिथिदिन उ
त्पत्ति पालितदिव तेतिस्कोटि देव सरनागत धारिया ॥ ३ ॥
नेपाल भुवन मधो मराडन विष्णुक सान केतम रूप द्रव्यज
दास्य कायवाक चित्त त्रिगुण कथगुरो ॥ ४ ॥ स्वयंभू श्रीस्वर्ग
जसंस्थित देव विविधा उपहार पञ्चपूजा दरसन पाप नाना मि
ता ॥ ५ ॥ शान्तिपूरि परमेश्वर ॥ इति बुद्ध गीत ॥

(३४) विमलकि रत्न आहा काम सता म ध्ये वीरो

नमो बुद्धाय ॥ ॥ विमलकि रत्न आहा काम सता म ध्ये वीरो
धवल वदन प्रणामामि पञ्चतथागत अहोरात्र प्रदक्षिणां व्रत
सुमगर प्रदायकं ॥ १ ॥ पूर्व अस्तोम्य कुशावरण गज आस
न देव पूर्व मुरति ॥ २ ॥ दक्षिण रत्न सन्भव पतिवरो गुरुरज

आसन देवदक्षिणामुरति ॥ ३ ॥ पश्चिम अमृताभ रक्तवर्णा
मयूर आसन देव पश्चिम मुरति ॥ ४ ॥ उत्तर अमोघ सिद्धि
स्यामवर्णा गरुड आसन देव उत्तर मुरति ॥ ५ ॥ इति बुद्ध
गीत समाप्ता ॥

(३५) मध्य दिशास्थित

नमो बुद्धाय ॥ ॥ मध्यदिशास्थित वैरोचन मुनिवर शुक्र
वर्णा सिंह आसन ॥ १ ॥ देवा सुर नर पूजित चरणा पुरा
मानि सुगते पञ्चपभावा पदक्षिणा जाना सुमङ्गला ॥ २ ॥
पूर्वदिशास्थित अक्षोभ्य मुनिवर कृष्णवर्णा गज आसन ॥
३ ॥ दक्षिण दिशास्थित रत्नसंभव मुनिवर पीतवर्णा तुरंग
आसन ॥ ४ ॥ पश्चिम दिशास्थित अमृताभ मुनिवर रक्तवर्णा
मयूर आसन ॥ ५ ॥ उत्तर दिशास्थित अमोघ सिद्धि मुनिवर
स्यामवर्णा गरुड आसन ॥ ६ ॥ इति बुद्ध गीत ॥

(३६) सरस मध्यवर

नमो बुद्धाय ॥ ॥ सरस मध्यवर चैत्य निर्वासित आराधन तत्प
र चरित प्रभावा विहित मम सम्यु कर्जन दुरिताग्निगमित
जन स्वविकं पठनं भक्त्येक मोक्ष गति कामना ॥ १ ॥ अतु
ल धर्मोदय शास संभव वृत्त नरत सकल विज्ञाना ॥ २ ॥ सु
चवतागति सासन करुणित धर्म भाग हितय भावना आला ॥

३ ॥ इन्दीस पृथीन सफल सफ्र कौसारिका मोक्ष प्रद भ कुज
न अविवादिता ॥ ४ ॥ इति बुद्ध गीत ॥

(३७) चामकलावलि मणि

राम गीत ॥ ॥ नमो बुद्धाय ॥ ॥ चामकलावलि मणि नुहु
य वलि विचित्र विविधित रत्न विभूषित ॥ १ ॥ रौरव भयंकर
हर करुणोपर नर असुरा सुर सैनित चरणा ॥ २ ॥ तिर्जक प्रेत
सुरूपी शुभ मारत करुणा हृदय दीविसागर विदिता मर नयन वि
कसित कमला गुण ॥ ३ ॥ लोहित वर्णा मूला लित रुचरकं ॥
४ ॥ हायन नाग कुल विशिखागमोस माधव सितिधि जन ना
सर्व ॥

(३८) मध्ये वैरोचन बुद्ध

नमो बुद्धाय ॥ ॥ मध्ये वैरोचन बुद्ध मध्य समत भद्रक मध्य
गोहासन मङ्गल्येन वर्णा नमोस्तुते ॥ १ ॥ पूर्व अक्षोभ्य संभव वज्र
पाशो महा त्त ॥ गज वाहन संपूर्ण नील वर्णा नमोस्तुते ॥ २ ॥ द
क्षिण रत्न संभव रत्न पाशो महान्धजा ॥ तुरङ्ग वाहन संपूर्ण पीत वर्
णा नमोस्तुते ॥ ३ ॥ पश्चिम अमृताभ पद्म पाणि कृपावत् ॥ म
यूर वाहन संपूर्ण रक्त वर्णा नमोस्तुते ॥ ४ ॥ उत्तर अमोघ सिद्धि
विश्वपाशो विषा जन ॥ गरुड वाहन संपूर्ण स्याम वर्णा नमोस्तु
ते ॥ ५ ॥ लोचना मामकि तारा मोराडरा न नमस्तुते ॥ वज्रसत्त्व

समाधान धर्म धातु नमस्तुते ॥ ६ ॥ इति पञ्चबुद्ध भट्टारकस्य
वागीश्वरस्तोत्रसमाप्तम् ॥ ॥

(३५) पूर्णा कन्यानिधि

नमो बुद्धाय ॥ ॥ पूर्णा कन्यानिधि सन्निते देहं मृग पत्न्यासन
योगद ध्यानं ॥ वन्दे सुराभिष श्रीवेरोचनः श्री धर्म धातु महं पूरा
नामि ॥ १ ॥ इन्द्र नील दूति भास्कर कायं दत्तिसमारुह्य भुषस
हस्तं ॥ नौमि श्री अक्षोभ्यं जितं नमामि श्री धर्म ॥ २ ॥ वागीश्वर
सन चामिकराभं लोक वर प्रदया म्यमधीसं ॥ वन्दे हं श्रीरत्न सभ
वत्ताथं श्री धर्म ॥ ३ ॥ पद्मरागनिभ पश्चिम दीप्तं ध्यान मुद्रा
सन मयुरारुहं ॥ नमोस्तु श्री अमिताभ वनाय श्री धर्म ॥ ४ ॥
तार्जासना परिणतं कृत स्याम मुत्तरा संमीत मभय करं ॥ श्री अ
मोक्षमिदं जितं नमामि श्री धर्म ॥ ५ ॥ सर्व देवानय श्रीवज्रधा
तु शुधन भुजम विश्वव्यापित ॥ त्रेधातु सभव वाग मदिप्तं श्री धर्म
॥ ६ ॥ इष्टं सजा यवाग्भुत पीतं म्य जन्म दुःखा खराजोत्तम म्य म
निद्र ॥ सुद्धं मेवा सुद्ध मेव धर्म तुमो हभी वाणि मुधो हजिन शान्ति
तक्षम मुनिद्र ॥ ७ ॥ इति श्री धर्म धातु वागीश्वर भट्टारकस्य रत्न पुत्रो
जोतिस्तव समाप्तम् ॥ ॥

(४०) बुद्ध बुद्ध सुगत मुनिनमो

नमो बुद्धाय ॥ ॥ बुद्ध बुद्ध सुगत मुनिनमो धर्म त्रयोदश भुव

ननाथ ॥ सङ्घः संसार उधारन दाना बुद्ध धर्म सङ्घ देव नमो
स्तु ॥ १ ॥ बुद्ध वेरोचन विश्वव्यापित महा वेरोचन देव नमो
स्तु ॥ न्योति मयं देव स्वयं मुनिद्र बुद्ध धर्म सङ्घ ॥ २ ॥
अमिताभ मयुरासन मुनि ध्यान द्वाय मुनि अमिताभ मुनि ॥
पद्मपाणि अभय वर दाना बुद्ध धर्म सङ्घ ॥ ३ ॥ विपश्ची सिखि
विश्वभुव मुनि ककुद्द कनक मुनि नम ॥ काश्यप श्री शाक्य
सिंह मुनिद्र बुद्ध धर्म सङ्घ ॥ ४ ॥ मञ्जु श्री ज्ञान सत्त्व उधारन
मेत्रिवो धिसत्त्व देव नमस्तु ॥ चन्द्र मण्डल सुर्व सुर्वेज बुद्ध ध
र्म सङ्घ ॥ ५ ॥ वम्हा विष्णु रुद्र मोहेश्वर देव इन्द्र यम मुनि
पूजित पादो ॥ नाग असुर नर बुद्ध सत्त्व बुद्ध धर्म सङ्घ ॥ ६ ॥
गन्धर्व गरुड मुनि चरणा राग द्वेष मोह नासन मीक्ष ॥ दारि
द्रुदुःख विनासन रक्ष बुद्ध धर्म सङ्घ ॥ ७ ॥ इति बुद्ध भट्टार
कस्य निरिधन कृतं बुद्ध धर्म सङ्घ स्तोत्र समाप्तम् ॥ शुभम् ॥

(४१) स्तिग्ध नील मुद्र

ॐ नमो बुद्धाय ॥ ॥ स्तिग्ध नील मुद्र कुञ्चित केश सूर्य मुनिर्म
ननी भवताठ ॥ युक्त मुद्र काय जज्ञो रङ्ग ज्वाला वृत्तानर
संह ॥ सप्तहिताये पिता नर संह ॥ १ ॥ अञ्जन वरा सुनील सु
केशः काञ्चन पत्र विशुद्ध ज्वालाः वषाधिपानत सुद्ध गण ॥ स
शीह ॥ २ ॥ आयत युक्त सु सविन नाशो गोप मुखे आति नी

जसु नेत्रः ॥ इन्द्रधनु आतिनीवसु नेत्र ॥ १ ॥ श्रीहृन् ॥ ३ ॥ स्निग्ध
सुगम्भीर मन्त्रसु घोषो हिं गुणिवर्ण सुरक्त सुजिह्वा ॥ विशा
नि विंशति श्वेतसु दन्तः स्रष्टा ॥ ४ ॥ वर्तसु वर्तसु संचितगी
वा सिंह हनु मृग राज शरीरः ॥ कंचन सुच्छ वि उत्तमवर्णः स्रष्टा
हि ॥ ५ ॥ गच्छति नील पठे सुविचित्र तार गणा पीर वैशि
तरूपः ॥ शनक मध्य गताः श्री मुनिन्द्र स्रष्टा ॥ ६ ॥ चक्रम-
नं कृत रक्त सुपादौ नक्षत्रा मांश आयन पाषाणि ॥ चामन
चक्र विभूषित पाशा स्रष्टा ॥ ७ ॥ शाक्य कुमार वरः सु
कुमारो जक्षरा चित्त सुपुण्य शरीरः ॥ लोकहिताय गतो नरवी-
र स्रष्टा ॥ ८ ॥ भस्मर नादिवर चन्द्र गजेन्द्रो मार परानय भी
मसुर्वार ॥ त्वं गुणा कर जोक विशदो वृद्ध मि गीतम श्री मुनि
पादौ ॥ ९ ॥ गीत श्री वेशा परा देवो कृत श्री शाक्य मुनि जोगसमा

(४२) स्तुतर्मापसुर संधेः

ॐ नमो बुद्धाय ॥ ॐ नमो धर्माय ॥ ॐ नमो सद्भायः

स्तुतर्मापसुर संधेः ॥ सिद्ध गन्धर्व यक्षो दिवि भुवि सुवि
चित्रे स्तौत्राग्नि भयनिष्ठो ॥ अहर्माप कृत शक्तिर्नो मि
सं बुद्ध माय्यम् नर्मास गरुड यांत किन्नर्यान्त दिरेफा ॥
१ ॥ द्योपत दारुत पक्ष शीरानिनः शेष दायो द्रविण
कनक वर्णः स्फुरन्नायमा यताक्षः ॥ गुरो चरपीर वैशः

सुप्रभामराडन श्रीः दश वल तव वित्त्यं सुप्रभातं प्रभातम् ॥
२ ॥ मदन वल विजतु काय धौ छेद कर्तु स्त्रिभुवनोत्त
कर्तुः स्त्रीजिता जाल कर्तुः सम सुख फल दानु भेनुर आन
शेनः दशवल् ॥ ३ ॥ असुर मुर नरा गा योऽय जन्माय
देवः सकल भुवन नाथ लोक शृष्ट्येक सद्धः ॥ स्त्रीपति म
नुज धाता अधा योनि स्वयम्भू दशवल् ॥ ४ ॥ उदय गि-
रितटस्थो विद्रुम छेदताम् स्त्रीपति रत्न कर हता चक्षुरेकः
पुजानाम् शिव रौप्य मदलोत्तः सर्वथा सोऽपि सुप्ता दशव
ल् ॥ ५ ॥ विरद दशन पाशदः शीतरस्मिः शशाङ्केन ज्वलि
त इवर जन्वां सर्व चूडा मणि र्या ॥ अविगत मदगगः सर्वपा
सोपि सुप्ता दशवल् ॥ ६ ॥ प्रवल भुज चतुष्क धाडशा
र्द्धार्द्ध वक्तो जप नियम विधिज्ञ साम वेद प्रवक्ता ॥ अमल
कमल योनिः सोऽपि प्रह्लादऽपि सुप्ता दशवल् ॥ ७ ॥
हिमगिरि शिखराभ्यः सर्प यज्ञो पवीर्ता त्रिपुर दहन दक्षा
व्याघ्र चर्मोत्तरीयः ॥ सहीगिरि वर पुत्र्याः सोपि सुप्ता दश
वल् ॥ ८ ॥ ज्वलित कुलिश पाशा दुर्ज यो
दानवानां सुरपति रपि सच्या विभ्रमे मूठ विन्ता अनिश
निशि प्रसुप्तः काम पङ्के निमग्नो दशवल् ॥ ९ ॥ कुवन
य दल नालः पुराडरी का वताक्षः सुररिपु पल हता विश्व

क्षितिः स्वरूपः ॥ तत्र गिरि चारुप्रागं गर्भे वसिष्ठमुक्ता
 दशवन्तः ॥ १० ॥ ज्वलितजटकापो रक्तगात्रा रुणाक्षः
 पशुपति रत्नकान्ते सज्ज भङ्गे कदम्बः ॥ समरमञ्जरीताङ्गः
 मोः पिसुप्रा हुताङ्गा दशवन्तः ॥ ११ ॥ हिमशशि कुम्भ
 वांभो मद्य पात्रा रुणाक्षः दृढ कर्णन गुणाङ्गन नक्षत्रो
 शक्ति हस्ता ॥ कल दह सपितामो रेवति कण्ठ नग्नो दश
 वन्तः ॥ १२ ॥ गज मुख दशनेक सनधा विद्य हता अवि
 गन मदवारि यट पदोत्कीर्ण गराडा ॥ गरापति रीप सु
 प्ता वारुणी पान मन्ता दशवन्तः ॥ १३ ॥ अतसि कुर्य
 मनीलो यस्य शक्तिः करा ये न कम्पन व पुष्पान् पण्ण
 रव कौश्व हता ॥ वि नयन तन योः सौ नित्य मुप्राः कुमा
 रा दशवन्तः ॥ १४ ॥ अमन वसन हीना नित्य पैगानुयु
 क्त बहु विवध विभाता प्रतवद्गुण देहा ॥ उभयगति
 विहीना स्ते डोपनयाः प्रसुप्ता दशवन्तः ॥ १५ ॥ अथ यद
 ह मेहातो वत्स भगवद्भि राद्या कन्तु पुनह वशिष्ठ ग्राह
 वांभीक्षि गगा ॥ पर युवति विनाशो मूर्ति तास्तोपरा
 ता दशवन्तः ॥ १६ ॥ यम वरुणा कुबेर यक्ष दैत्यो रगेन्द्राः
 दिवि भूवि गग शोवा लोकपालो स्तथान्यो ॥ युवति मदक
 राक्षो वी क्षितास्तेऽपिसुप्राः ॥ दशवन्तः ॥ १७ ॥ भव गत्त

विधि मया मोह ज्वाला वृताङ्गः मुनि कपिल करणाद्या भा
 मिता मुठ चिन्ता ॥ सम सुख परि हीनाः तान्ति शास्तेऽपि
 सुप्ता दशवन्तः ॥ १८ ॥ अज्ञान निन्द रज्जो तर्जसि प्रमुखा
 नृणां निशान अपने विह्वयो पठाने ॥ काले शुभा शुभक
 ने परि वतमाने मागर्तियं गतमेव नमोः स्तुतस्मै ॥ १९ ॥
 नाथे युगेकुल अतानि विप्रतिनोपं त्रीप्तिं वजति नचतद
 क्षपम भुपेति ॥ तद्वन्मुने! कवि इमे रपि संस्तु तरमे नक्षी
 यते गुरो निधिः गुरा सागर स्य ॥ २० ॥ सुप्रभातं तवैकस्य
 रानोन्मीलित चक्षुष ॥ अज्ञान स्मि मिराधानां नित्य मस्त
 स्थितो रविः ॥ २१ ॥ पुनः प्रभातं पुन हन्ति तोरणिः पुनः शशा
 ङ्क पुनरेव सर्वरिः मृत्यु जरा जग तथैव हे मुने! गता गतं मू
 ठ कथं न पुष्यते ॥ २२ ॥ सुप्रभातं सनसृजं धिया धृत्य वि
 नादित ॥ कुर्वे यम्मच्च सद्गुच्च प्रणामा म दिने स्ति ॥ २३ ॥
 स्तुत्वा लोक गुरु महा मुनिवरं सद्गुण पुराण इमम् ॥ नन्द
 हते राग द्वेष निर्मरं ज्ञाने त्रियं विस्पृहम् ॥ येन पुराणं सम
 पाणिर्न सन्तु मया तेनैव लोकाः ॥ विनम्र प्रत्युचः स्तुति हर्ष
 तो दशवन्तः अस्मां तरा विन्दताम् ॥ २४ ॥ इति डा ह्येव
 भुरति निर भितो दशवन्तः शास्तेऽपि मया प्रस्तु ॥

ॐ नमो बुद्धाय ॥ ॐ नमः सप्त मुनिभ्यः ॥ ॥ उत्पन्नो बुद्ध
 मत्थां नृपति वर कुले यो विपाधि निनाम्ना । यस्याऽङ्गिनि
 सहस्रा रणमर नर गुरो रायु रासिन्पुजानां ॥ येन वापुं जिने-
 द्दं दशकल वज्रिनी पातला वृक्षमूले । त्वन्दे ज्ञानराशिं
 प्रशामितं सकल क्लेशादिं जिनेन्दुं ॥ १ ॥ वंशे पृथ्वीश्वरा
 ना महति पुरवरे यः पुजानो रूपा रये । वर्षाणा मायुराङ्गि-
 त्सकले गुणानिधे यस्य सप्ता युतानां ॥ सप्ताप्ता येन बोधिः
 परहितं पदना पुराङ्गीकस्य मूले । त्वन्दे ज्ञानराशिः शिषि
 न मुनिवरं प्राप्ता सन्तार पारं ॥ २ ॥ योजानो नोपमायाः पु-
 नर यमता मन्वये पार्थिवानां । मायुः षष्टिं सहस्रा राय
 भव दुर मते यस्य संवत्सराणाम् ॥ जित्वा क्लेशावशेषा नमृ
 त माधिगत येन ज्ञानस्य मूले । त्वन्दे धर्मराजं भुवनहित
 करं विश्वभूनाम धेयं ॥ ३ ॥ क्षमाकन्यां पुजानो मनुज
 पतिममे योपेशी विप्रवंशे आयु वर्षा युतानि प्रभव गुणा
 निधे यस्या रासिद्वयेन ॥ जेनेन्द्र येन नन्दां त्रिभव वधकर
 ज्ञान स्वर्गः शिरिषे । वन्दे सिद्धकार्य सुगत समुपसं क-
 कृच्छ्र मुनीन् ॥ ४ ॥ शोभावत्यां द्विजानां नरपति महिते
 यो न्वये संप्रसूतो, यस्याब्दानां सहस्रा राय निसय वपुषे स्त्री
 मरा युवभूव ॥ बुद्धत्वे येन रत्ना, चले वर गुरुणा दुम्बर

प्राप्तमग्य । त्वन्दे शासितारं कनक मुनि मुनि वरुणमो-
 हाचकारं ॥ ५ ॥ वाराणास्यां महिये क्षितिपति महिते-
 विप्रवंशे भिजानो । यस्मिन्मायुः सहस्रा रायनि राय मह-
 तो विंशति वत्सराणां ॥ येन न्यग्रोध मूले त्रिभव जलनि-
 धी शोभितो ज्ञान दिप्स्ये । त्वन्दे वन्दे नन्दां मुनिवर नृपमं
 सत्यपयोफनाथं ॥ ६ ॥ योजान शोभितो कपिलपु-
 रनरं शाक्यराजेन्द्र वंशे यस्या शोभा सुरेकं ज्ञानमिह
 शरदा सर्वलोके कवचो ॥ निजित्यायस्थ मूले नमुचि
 मभिगता तुलरायेन बोधिं । त्वन्दे शाक्यसिंह सुरनर
 गमिनं बुद्ध मादित्यवन्तं ॥ ७ ॥ योजानि विप्रवंशे नृपवर
 गमिते कलमत्ता गृहीता । बुद्धतो यः करिष्यत्यामित गुणानि वि-
 नाग वृक्षस्य मूले ॥ अष्टाब्दायु येनानि क्षपित अगवते भावि
 यस्या यमायु वन्दे मेने यनार्थं तुषित पुरवरा रास्थितं तनु
 निन्दं ॥ ८ ॥ स्तुत्वा वै सप्त बुद्धान्सकल मुपगतान् सप्त सप्ता-
 र्क भासो । त्रिनेपं चाष्टममे तुषित पुरगतं भाषितं लोक
 नाथं ॥ यत्पुराये नृपसूतं शुभतर फलदं देहिनां नेच सर्व
 द्विवासं क्लेशपाशं मुनय दुवपरा निर्वृति संप्रदातु ॥ ९ ॥
 शोभितो सुगता वदानो हृत सप्त बुद्ध स्तोत्र समाप्तं ॥ १० ॥

ॐ नमो श्री शाक्यसिंहाय ॥ ॥ नमोस्तु जेतवर्षिण शाक्यराज
सधर्मपंकेतं गुरुमायकारण ॥ कृष्णारिर्गोभिहतापनुभ्यं संविभिरा
पे हनमाहजान्ता ॥ १ ॥ नमोस्तु राजर्षिं सुरर्षिसङ्घेः प्राप्तुं नयक्य
मने क्यन्तेः ॥ प्राप्तुं तत्राज्ञानमत्तवर्म येनाकार्ष्यः सकलस्य हेतुः ॥
२ ॥ पर्वत्तितं येन सुधर्मचक्रं यस्मिन्नातिशो दधिशीलरजा ॥ आनं
स्तिव चीन्ताअज्ञसुं नमोस्तु नुभ्यं विभवाभिपाय ॥ ३ ॥ चास्मिन्
वातास्त्रिगुणोनयुक्ता विवर्तमानानिपततिवस्त्राः ॥ तेषां च प्रसारिण
सुगन्धवारि नमोस्तु नुभ्यं जगदेकनाथ ॥ ४ ॥ अनन्यत्रेणो नमुचिर्वीर्यः
सेन्येर्वृतं कोटिशतं प्रनाशः ॥ जितं त्वयैकैर्न निरायुधेन नमोस्तु नुभ्यं व-
लवत्तमाय ॥ ५ ॥ येन त्रिलोकं प्रतिपालितुं ननु मायागुराणां ज्वल
न्पुजातं ॥ स्वभावतो जन्मजरात्रयकुरि नमोस्तु नुभ्यं जगदेकना ॥ ६ ॥
येनातुल्यं सुविकर्षासुतां संविगिरिचक्रं मपवर्गसनु ॥ नृपिताभूतो
जसचकार मयै नमोस्तु नुभ्यं सुमहत्प्रतिज्ञा ॥ ७ ॥ यश्चाष्टकं ब्रह्मकृतं
दुपुगपं पठिष्यते शाक्यवराग्रनस्थः ॥ दुःखं महत्पापं भयं न हि त्वं
श्रीश्री धनेषां स्यात् पत्तनं गुणा ॥ ८ ॥ इति श्री भद्रकल्याणदाते
ब्रह्माकृतं श्रीशाक्यमुनिस्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥ ॥

नमो श्री धनत्वां (४४)

ॐ नमो श्री शाक्यसिंहाय ॥ ॥ नमो श्री धनत्वां सदाभावभक्ते
भवाम्भोधिसेतुं नमोस्तु नुभ्यं ॥ त्रिधानुं विधानुं सुरक्षां वि-

रक्षां सुदक्षं सुकक्षां सुजानं सुदानं ॥ १ ॥ नमो दानशीलसमा
ध्यातवीर्यं महत्ज्ञानपारंगतं संगतत्वां ॥ चतुर्वर्गवेहारलोको-
धरं चतुः सत्यधर्मोपदेशं सुरक्षां ॥ २ ॥ नमो बोधिराजं सुग-
म्ये विराजं सुरम्ये निदेन राजाभिगम्यं ॥ चतुर्थासनस्थं हि
तार्थादिगतां कृतानेकसुस्तं नगद्वयसस्थां ॥ ३ ॥ चतुर्मार-
लोकं महर्षिर्यत्नं जयन्तं हसन्तं विजानन् चकार ॥ क्षमानन्ददेहं
नमो मुक्तगैहं त्रिलोकिकनाथं तथाशाक्यनाथं ॥ ४ ॥ नमो मा-
शैव्यं जितं येन सर्वं निरस्त्रोशाक्षसार्यं मुक्तेन नूनं ॥ क्षमानर्म-
मेव्री चतुर्वारिणां जगत्पालितुं बोधिवृक्षस्थितेन ॥ ५ ॥
नमोः शीतियं जनेर्लसद्देहगैहं जनेस्त्रैहवंतं वेनेगेहवन्तं ॥ यु-
तं द्वाधिकत्रिंशोके लक्षशास्ये महादुर्लभं वैभवे लोकपूज्यं ॥
६ ॥ नमो धर्ममेघस्थितं सुप्रतिज्ञं कलौ नाशदानं भवेयं सना-
थः ॥ तथापालितुं स्वां प्रतिज्ञां चकार जन्तुशाक्यवैश महीपा-
वतंसि ॥ ७ ॥ नमो मां ज्यता नभ्यते दर्शनं ततथा भाग्य भोजोव-
धमेति बुद्धिः ॥ स्थितो धर्ममपेक्ष्य दर्शनं स्यात् विद्वानपि त-
त्राभिगन्तुं प्रशक्ताः ॥ ८ ॥ इदानीं भवत्पादपद्मोस्थितेन राज-
पुञ्जैर्न त्रिलोकपवित्रं ॥ तथास्मिन्निशितं पवित्राणि भवेय-
रिष्यामिं जेभिर्भनयासनेन ॥ ९ ॥ भुम्जं प्रपातं जगमाभवे-
न पठिष्ये निन स्याग्रनस्थेन निन ॥ सदा भक्तवन्तस्य गैहं सदैव

प्रसन्नार्थं स्तुतां कीर्यति बुद्धाः ॥ १० ॥ त्रिजालं चिद्धिवा
यसुखा यमुक्ता नृणां दानं गीतादि पारं गतोश्च ॥ महावी
धिनो जगत्पाल दक्षा गमि ध्याति चानो सुखा वन्यु पारयां ॥
११ ॥ इति श्री भद्र कल्या वदने श्री विश्वम्भर कृतं श्री शाक्य
मुनि स्तोत्रं समाप्तम् ॥

नमामि शौगतं (४५)

ॐ नमो श्री शाक्य भिक्षु ॥ ॥ नमामि शौगतं जितं नमो हित
नमास्वरं सहस्र सूर्य शोचिषं शशांक कोटि निर्मलं ॥ सराम
कूप मराडनी कृतं सूक्ष्म नेजसं सहस्र नेमि न किं जां पिय प्रपा
गो शोचिषं ॥ १ ॥ भजामि लोक नायकं संसार रोग नाशकं जरा
निपट्र यात्रकं भवारां वृत्ताकरं ॥ प्रबुद्ध पंक नामनं विबुद्ध बोधि
कारणं विनोक्त लोक भावनं जगत् पालनं ॥ २ ॥ नमो शूपा
नितुं जगत् कारजन्म मानवं निबुद्ध शाक्य सागरं पयोनि पौ शा
शोचिषं ॥ शशांक चाम चोदना विनोद मिथ्य संभव विज्ञान मो
हनाशकं विनाश विषय संचनम् ॥ ३ ॥ स्थिताय नमो मिश्राय हि
ताय लोक संचयं जिताय भार शैत्यकं अिताय स नृणां भनं ॥
मुताय शाक्य भूपते युताय पारमार्थिकं वृत्ताय बोधि समारं न
मोस्तु धर्म रजते ॥ ४ ॥ भजामि भव्य भावुकं भवस्य भाव भेदकं
सुबोधि वैभ बोद्धवं सुभासिकं शुभांशिकं ॥ भवोद्य भाव भेदितुं

वभार बोधि भारकं सुभद्र भानु भास्वरं सुभाकिनं शुभावहं ॥ ५ ॥
जिनेन्द्र मूल मराडपे नमो हितान विस्तुते सहस्र कल्प पारपे प्रभुर्ग
वप्य शोचिषं ॥ ६ ॥ शिरस्थ रत्न कोटिका कृशासना थितं विभुं नमामि
शाक्य शौगतं नरं सरा भने नमः ॥ ७ ॥ पठति ये जिनागतो वि
निर्मलं हरेण नन् भुष्य पञ्च चामरं त्रिकल मेन मांगनं ॥ सुकी
नि धर्म संयुता न सन्नि सप्त इन्द्रो जगन्निने सुखा वतिं सुखेन
सत्तुरा वतिं ॥ ८ ॥ इति श्री भद्र कल्या वदने महेश्वर कृतं श्री शा
क्य सिं स्तोत्रं समाप्तम् ॥

नमामि श्री शाक्य सिं (४६)

ॐ नमो श्री शाक्य सिंहाय ॥ ॥ नमामि श्री शाक्य सिंहं सकल हित
करं धर्म राजं महं सर्वज्ञान तपयं विमल विराटं शौगतं बोधि
रजं ॥ धर्मा भार मुनिनं जगत् वलितं श्रीघनं विमलसुं संवर्द्धो
कनाथं सकल भयहरं अश्वितं मर्त्य लोक ॥ १ ॥ सत्त्व रजो दि मे
धे सकल जिन मुनेः संश्रितः शतकेन गिपा रजो विमिहिन स्त द
चुच तीपते जागतो जोगिगज ॥ मैत्रीयं स्थापयित्वा प्रसूदित न
नसं स्वामने च भिषिच्य माया गर्भं पवित्रेः शुचि मल रहिते रत्न
गृहे विवेश ॥ २ ॥ गर्भे स्थित्वा पयस्वं सकल हितकरं धर्म का
र्यं करीषि काले मानुः सुकशाक्षर कल निज करैः काशयन्त प्रजा

तः॥ लोकाचारं चकृत्वा निहित दशाभिधि वैविवाहादिकं ननु
 त्वत्के सर्वाद्यै राज्यं सकल जनहिने निर्गत त्वानमेहं ॥ ३ ॥ दुर्गा
 कोशाद्य यस्य प्रतिदिन मसकृदाक्षिराणां वर्ण रोचिः प्रोद्यद्देदीप्यमा
 न त्रिभुवन कुहरे वस्तमोहाधकारं ॥ चत्वारिंशत्सुदत्तौ द्वाविन
 कर्चये भाषय नारकीया प्रोद्धत्वा स्वर्गनाथे सुरतर्कनिने स्थापी
 ता येन वन्दे ॥ ४ ॥ यत्पाराणी चक्रचिह्ना वभिमत पालये दानपा
 रं गतत्वा यत्कात्ता भूमिद्वी स्वगणा परिवृता भेदयित्वा वनितां ॥
 स्थित्वाये पूजयित्वा नमुचिमभिगतं धत्सयित्वा द्विषत्तं साक्षी भू-
 तानि नीत्वा पुराणमिदं सिरसा त्वानमेहं जिनेन्दुं ॥ ५ ॥ यस्याश्वापे
 स्थचायं विधि हरमधु हृल्लोक सस्थैः सवीर्यो द्रष्टुं नैवाभितत्वा कि-
 मुमनुज पुरे चरिते नै मादृशेभ्यः ॥ वृक्षारण्डं च धयित्वा तरणिं शशध-
 रो धोवनक्ष ग्रन्थकं पुर्वं नोको नरारये निजभुवन नरे भाषितं त्वान
 मेहं ॥ ६ ॥ यद्वक्त्रं पंकजांभ सुरदन रसना करिणिका केशरायं व्रजारण्डं
 मुंभतेस्मिन् भवन गणाभूतं सश्रितं करिणिकान् ॥ दृष्ट्वा संमूर्धितो भूत्वा मु-
 चिरुचरे चरिते सर्वशनाथ कृत्वा केचित्पयाताः क्षरणा मभिमतं श्रीप-
 तं त्वानमेहं ॥ ७ ॥ संख्यातान वनीणां स्त्रिभुवन सरने परिडिता ये न स-
 त्ति तत्तर्कं मलिनपीत्वा यदितव ग्रीह्या वरयत्य कञ्चकान् ॥ पारंगतु
 समर्था नहि निरिवल गुण क्षीरसिन्धोः कथंचिन् सकाकान्तिं समर्थ-

स्तदीय नम मनो बोधनाथं नैहं ॥ ८ ॥ वज्रने लोचमिदं सुर-
 पति रचितं श्रग्धरा वृत्तिसंज्ञं शक्राद्या लोक पात्राः प्रतिपद नुचरा-
 त्संकरि रत्निरक्ष ॥ लोचनं त्वत्के लोके तदनु सुरपतेः कञ्चकसा-
 भिकीर्यो स्थितान् व्रतेभ्यो सुगव सुगमर्हि सर्वलोके कगम्भां ॥
 ९ ॥ इति श्री-

वन्दे मुनिन्द्र

ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ वन्दे मुनीन्द्र मुगतं ॥ उभितानां
 सर्वोधिपारगमितं जनपाल नार्थं ॥ दानादि पारमि संत दशाणां
 वेषु संतोषितं मसर्गं भवताभितत्वं ॥ १ ॥ वन्दे हरीन्द्र कमला
 तनयं करालं देवं स्म दार्चित पदं सुग वन्दनीयं ॥ द्वात्रिंशत्तपसा
 विभूषितं देहं पीष्टं मेहे करो मगलिनो न्वत रस्मिनात्वं ॥ २ ॥
 वन्दे त्रिलोक कमनीय मुदित्य रूपं रणादि दोष मनपात कृपात
 कृपा ॥ संजात शाक्य कुलभाविने सर्वभूष कस्तुरि चन्दन सुभू-
 पितं सर्व भूषं ॥ ३ ॥ वन्दे विभातु परिपालन दशभूतं संपूर्णचन्द-
 र्ज्ञानकोटि मुनिमैश्वर्यं ॥ भक्तान्तामस विनाशन कोटिभूषं भंज-
 क्षिा मरुगणा विनाभि नृप्यं ॥ ४ ॥ वन्दे भवार्णव भक्तोत्तम
 रत्न तारकमेतु गमवर्ग सुभैरु हेतुं ॥ द्वात्रिंशत्तपसा

सातसुर्ति जातीदुःख भय मोचन सुप्रतिज्ञं ॥ ५ ॥ वन्दे वसन्त सम
 ये पिनकामरागो यस्मिन्मधुव्रतपिका विलसन्ति मन्त्रा ॥ यस्मिन्महर्षि
 गणमान सविभूमाश्च यस्मिन्वसन्त समये तिलकं प्रफुल्लं ॥ ६ ॥
 वन्दे वन्दु जनवृतः प्रमदाभिधाने पित्राज्ञयानु चर सारथिमं पुत्रश्च ॥
 गत्वाचकार निजमानससं प्रकाशं उन्मन कामिनि जनेर्वाशितुं नशक्य ॥
 वन्दे चयेन चतुरादि सहस्र संख्या चाशीतिभिः परिमिताः प्रमदाविरूपाः ॥
 त्यक्त्वा च युक्कृत मेव नुता अयाग्या स्तादृशे नलिन रूप सुधारकाय ॥ ८ ॥
 बोध्यर्थिना च जगतां प्रतिपालनार्थे नेर अनातठ वरे मह दुत्ताप ॥ कालं
 फलं प्रतिदिनं निवृतं दुल्लं च आस्फुरनकं पृचलितं सनेतं भजामी ॥ ९ ॥
 वन्दे जरा रुज जनुर्मरणा दिकान्तां धर्मा मृते कपरपेय रसायनेन ॥ स्वस्थं
 चकार सकलं मसुरामुरं च स्तादृशं सकल दुःख हरैक वेद्यं ॥ १० ॥
 स्ववेद्यं निर्मित मिदं स्तव कान वद्यं सपत्न्य ते सकल पाप हरं चयेन ॥
 तेषां कदापि विपदो नहि सानु राश्च मांगल्य निर्मल सुखं च भवति
 मोक्षं ॥ ११ ॥ इति श्री भद्र कल्या वदाने स्ववेद्यं कृतं श्री शाक्य मु
 निस्तोत्र समाप्तम् ॥ ॥

नमेहं शाक्य सिंह

ॐ नमो बुधाय ॥ ॥ नमेहं शाक्य सिंह मुनीसं स्वयम्भूः कृते प्राग
 तं शिष्य संख्ये वदे वैः ॥ सुनेपाल महात्मे सम्यक् प्रकाशे तथाने
 यपालान् जनान् रक्ष तं च ॥ १ ॥ मुदो सान् मजं रक्षितुं कासिरा-
 जं नृपासासिनं मानुदोषाद्भुमत्तं ॥ तथापश्च भूपान्मजानां शतश्च
 पुनर्योगिनं सोम पुत्रो वभूव ॥ २ ॥ प्रियः सुप्रियः काशिज सार्धवाहो-
 वदक्षिप यात्राप्न चित्रामरिगन्धः ॥ सुवर्णादि रत्नानि वर्ष धनाख्यां श्व-
 कारासु कास्यु द्ववां योनमेत्वा ॥ ३ ॥ कपोतर रक्षात्म मांस पदाने-
 र्भव सर्वदा ख्यो महिपाल वर्यः ॥ महासत्त्व नामा नृपालात्म जोसोः सु-
 पुत्रां च व्याघ्री प्रसूतां नमेत्वा ॥ ४ ॥ संसर्वाथ सिद्धो भवं लोक
 हेतो गया शीर्ष मास्थाय कृत्वा सुतापं ॥ सुदुर्ज्ञेभ्य गोधिं समासा-
 द्य बुद्धो भवेत्वा नमेपाहि सर्वज्ञनाथ ॥ ५ ॥ इति श्री शाक्य सिंह
 भट्टारकस्य हारति यक्षरागी कृतं भुजंग प्रयात पंचकं समाप्तम्

मानदास सुगत दासया संकलनं
 आशा सफू-कुथियात उपहार !



WEIGHTS AND MEASURES.

INDIAN BAZAAR WEIGHT.	BENGAL BAZAAR WEIGHT.	BOMBAY BAZAAR MEASURE.	BRITISH AVOIR. DUPOIS WEIGHT.
4 Sikis = 1 Tola. 5 Sikis = 1 Kancha. 4 Kanchas = 1 Chata. 8 Talas = 1 Panch. 4 Chataks = 1 Seer. 4 Panchas = 1 Seer. 5 Seers = 1 Panna. 8 Pannas = 1 Mound. 40 Seers = 1 Mound.	1 Chataka = 1 Kunka. 2 Kunkas = 1 Khunchi. 2 Khunchis = 1 Reh. 2 Rehs = 1 Pak. 2 Paks = 1 Dama. 2 Damos = 1 Kati. 8 Katis = 1 Arbi. 100 Arbis = 1 Bish. 16 Bishes = 1 Kahar. 16 Paks = 1 Mound. 8 Damos = 1 Mound. 10 Damos = 1 Sak.	35 Tanks = 1 Tipari. 2 Tiparis = 1 Seer. 4 Seers = 1 Payli. 15 Paylis = 1 Phara. 8 Pharas = 1 Kandi. 25 Pharas = 1 Munda.	16 Drains = 1 Ounce. 16 Ounces = 1 Pound. 16 Pounds = 1 Stone. 8 Stones = 1 Quarter. 4 Quarters = 1 Hundred weight. 20 Hundred weights = 1 Ton.
JEWELLER'S WEIGHT.	BENGAL LINEAL MEASURE.	BOMBAY MEASURE OF LAND SURFACE.	CAPACITY.
4 Dhans = 1 Tola. 6 Dhans = 1 Anna. 8 Dhans = 1 Masna. 16 Masnas = 1 Tola. 16 Annas = 1 Tola.	3 Jauas = 1 Angul. 4 Anguls = 1 Muth. 2 Muths = 1 Dhand. 6 Dhandas = 1 Hat. 2 Hats = 1 Gaz. 2 Gazes = 1 Dham. 1000 Dhams = 1 Kosa. 4 Kosas = 1 Yojan.	392 Square Cubits = 1 Kati. 20 Kathis = 1 Panch. 20 Panchs = 1 Bigha. 6 Bighas = 1 Rukh. 20 Rukhs = 1 Chabur.	4 Gills = 1 Pint. 2 Pints = 1 Quart. 4 Quarts = 1 Gallon. 2 Gallons = 1 Peck. 4 Pecks = 1 Bushel. 8 Bushels = 1 Quarter.
INDIAN TIME.	BOMBAY CLOTH MEASURE.	BRITISH LINEAL MEASURE.	BRITISH MONEY TABLE.
60 Anupals = 1 Vinal. 60 Vinals = 1 Pal. 60 Pals = 1 Mando. 60 Mandos = 1 Dandi. 7 Dandis = 1 Mitha. 30 Dandis = 1 Mahan. 15 Mahans = 1 Dacca.	6 Angalls = 1 Tass. 24 Tasses = 1 Gaz.	12 Inches = 1 Foot. 3 Feet = 1 Yard. 5 1/2 Yards = 1 Pole. 40 Poles = 1 Furlong. 21 Furlongs = 1 Chain. 10 Chains = 1 Furlong. 8 Furlongs = 1 Mile. 1760 Yards = 1 Mile.	4 Farthings = 1 Penny. 12 Pennies = 1 Shilling. 20 Shillings = 1 Pound. 2 Shillings = 1 Florin. 2 Shillings & 6 Pence = 1 Half-crown.
INDIAN LIQUID MEASURE.	BENGAL GRAIN MEASURE.	MADRAS LOCAL WEIGHT.	BRITISH MEASURE OF LAND.
4 Chataks = 1 Panch. 4 Panchas = 1 Seer. 40 Seers = 1 Mound.	5 Chataks = 1 Kumbha. 4 Kumbhas = 1 Sak. 32 Sakas = 1 Mound.	180 Grains = 1 Tola. 3 Tolas = 1 Panch. 8 Panchas = 1 Seer. 5 Seers = 1 Vih. 5 Vih = 1 Mound. 20 Mounds = 1 Kand.	4 Ords = 1 Poch. 8 Pochs = 1 Marah. 5 Marahs = 1 Phara. 50 Pharas = 1 Gave.
INDIAN MONEY TABLE.	BENGAL PHYSICIAN'S WEIGHT.	MADRAS BAZAAR MEASURE.	BRITISH TABLE OF TIME.
3 Pies = 1 Ann. 6 Pies = 1 Ann. 6 Pies = 1 Ann. 4 Pies = 1 Ann. 12 Pies = 1 Anna. 16 Annas = 1 Rupee.	4 Dhans = 1 Pak. 10 Paks = 1 Masna. 10 Masnas = 1 Tola.	8 Onds = 1 Poch. 8 Pochs = 1 Marah. 5 Marahs = 1 Phara. 50 Pharas = 1 Gave.	24 Hrs. = 1 Day. 7 Days = 1 Week. 4 Weeks = 1 Month. 12 Months = 1 Year. 365 Days = 1 Year. 366 Days = 1 Leap Year. 52 Weeks = 1 Year.
INDIAN MONEY TO STERLING.	BENGAL CLOTH MEASURE.	UNITED PROVINCES MEASURE OF LAND.	BRITISH TABLE OF TIME.
1 Anna = 1 Penny. 12 Annas = 1 Shilling. 1 Rupee = 1 Shilling & 6 Pence. 15 Rupees & 5 Annas = 1 Pound.	3 Anguls = 1 Girah. 8 Girahs = 1 Batta. 5 Battas = 1 Gaz.	20 Kachharis = 1 Bigha. 20 Bighas = 1 Bigha. 20 Bighas = 1 Bigha.	
CEYLON MONEY TABLE.	BENGAL MEASURE OF LAND SURFACE.	PUNJAB MEASURE OF LAND.	
100 Cents = 1 Rupee.	20 Square Cubits (or Gaudas) = 1 Chata. 16 Chataks = 1 Sak. 16 Sakas = 1 Mound.	9 Sars = 1 Maria. 21 Marias = 1 Kari. 4 Karies = 1 Bigha. 6 Bighas = 1 Gama.	